

# अतस्माग्र वर्ष - ३, अंक - २, कुल अंक - २६, मार्च - २०१३



चोवीशी पट

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only



# तारंगा तीर्थे उत्सवना मंडाण पधरामणी गुरुवरनी, प्रतिष्ठा घंटाकर्णवीरनी.



प. पू. राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत श्री पद्मसागरसूरि म. सा. नो वैयावच्च-वात्सल्यधाममां प्रवेश.



श्री घंटाकर्ण महावीर देवनुं नूतन मंदिर

धर्मसमा संभवनाथ जैन आराधना केन्द्र तारंगा तीर्थ





### आचार्य श्री कैलासरागरसूरि ज्ञाहामंदिर का मुखपत्र

# श्रुतसागर



### 🜣 आशीर्वाद 🌣

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

### 💠 संपादक मंडल 🌣

मुकेशभाई एन. शाह

कनुभाई एल. शाह डॉ. हेमन्त कुमार हिरेन दोशी

केतन डी. शाह

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ मार्च, २०१३, वि. सं. २०६९, फागण सुद-४



### प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा, गांधीनगर-३८२००७ फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२ केक्स : (०७९) २३२७६२४९

> website: www.kobatirth.org email: gyanmandir@kobatirth.org

# अनुक्रम

www.kobatirth.org

<ol> <li>पार्श्वनाथ भगवानना बे स्तोत्र</li> </ol>	हिरेन दोशी	ų
२. विजयशेखर गणिना बे रास	हिरेन दोशी	ጳ
३. ऐतिहासिक लघु कृतिओनो सार	हिरेन दोशी	५४
४. प्राचीन विद्यापीठ एवं चीनी यात्री	डॉ. उत्तमसिंह	4८
५. बे चोवीशी पटनो परिचय	हिरेन दोशी	६९
६. संग्रहालयना प्रतिमा लेखो	-	હિવ
७. राणकपुर तीर्थ परिचय	कनुभाई एल. शाह	৩४
८. ज्ञानमंदिर कार्य अहेवाल	-	७९
९. समाचार सार	डॉ. हेमंत कुमार	۷٥

### प्राप्तिस्थान

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर तीन बंगला, टोलकनगर परिवार डाइनिंग होल की गली में पालडी, अहमदाबाद - ३८०००७ फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

### प्रकाशन सौजन्य

श्री रश्मिकांतभाई कामदार परिवार Rushab Ship Consultant, Inc., 43, Jonanthan Drive, Edison, NJ 08820, USA.

### संपादकीय

पिछले अंक में हमने आपको बताया था कि श्रुतसागर नया प्रौढ़ आकार ग्रहण कर रहा है। इसके स्वरूप, उद्देश्य और विषय को विस्तृत बनाया जा रहा है। अपने भव्य भूतकाल एवं शास्त्रों में छिपे देदीप्यमान इतिहास का विस्तृत परिचय प्रस्तुत करने हेतु तमाम ऐतिहासिक सामग्रियों एवं प्रामाणिक साक्ष्यों को पूरक सामग्रियों के साथ प्रकाशित करके शोधकर्ताओं तक पहुँचाने की शृंखला में हमने इस अंक में ऐतिहासिक लेख, विशिष्ट तीर्थस्थलों का परिचय, ज्ञानमन्दिर में संगृहीत विशिष्ट कृतियों की सूचनाओं जैसे अनेक शोधप्रद एवं बोधप्रद विषयों को संकलित किया है।

इस अंक में हमने सर्वप्रथम प्रभु पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति करके अपना कार्य आगे बढ़ाने का प्रयास किया है, क्योंकि इस अवसर्पिणी काल में जिनशरण और उसमें भी प्रभु पार्श्वनाथ का सहारा मिल जाए तो कठिन से कठिन कार्य भी सहजतापूर्वक सम्पन्न हो जाते हैं।

प्रभु पार्श्वनाथ की स्तुति पूर्वक मंगलाचरण के पश्चात् चतुर्विध श्रीसंघ के लिये उपयोगी गुणों-तत्त्वों को निरूपित करने में पूर्णतः सक्षम दो अप्रकाशित रासों का चयन किया गया है, जिनके कथानक आज के भौतिक चकाचौंध में फंसे जीवों को मानवमूल्यों को अपनाने हेतु मार्गदर्शक का कार्य करेंगे।

पूर्वाचार्यों के जीवन-दर्शन को प्रदर्शित करती हुई पद्यात्मक लघु कृतियों का सारांश प्रस्तुत करके हमने यह बताने का प्रयास किया है कि हमारे पूर्वाचार्यों का जीवन-दर्शन कैसा था, उनके जीवन-आदर्श हमारे लिये प्रेरणास्रोत सिद्ध हो रहे हैं।

प्राचीन विद्यापीठों के सम्बन्ध में चीनी यात्रियों के विचारों को प्रस्तुत कर तत्कालीन भारतीय शैक्षणिक स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया गया है। त्रैलोक्यदीपक महातीर्थ राणकपुर के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करने हेतु राणकपुर तीर्थ का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

सम्राट संप्रति संग्रहालय, कोबा में संकलित धातुप्रतिमाओं के लेखों को भी इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है जो हमारे छिपे हुए ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करने में सहायक सिद्ध होगा। चौबीसी पट्ट के परिचयात्मक लेख में चौबीसी के निर्माण एवं उसकी परम्परा का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करने का

मार्च - २०१३

प्रयास किया गया है।

हम एक बार पुनः यह दोहराना चाहेंगे कि हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति में परम पूज्य गुरुभगवन्तों का आशीर्वाद और आप सभी का सहयोग अपेक्षित ही नहीं, विलक अनिवार्य है। आपके पास ऐसी कोई ऐतिहासिक कृति, संशोधित विशिष्ट सूचना, महत्त्वपूर्ण लेख आदि हों तो हमारे प्रकाशक के पते पर भेजें, उसे हम आपके नाम के साथ योग्य स्थान में प्रकाशित करेंगे।

हमारा प्रयास अपने लक्ष्य की प्राप्ति में कितना सफल हो सका है, इसका निर्णय आपके हाथों में है। आपका अभिप्राय, योग्य मार्गदर्शन एवं सहयोग हमें प्राप्त होता रहे, ऐसी आशा है।

# મુલાકાત અને અભિપ્રાથ

- પ. પૂ. દિગંબરાચાર્ય શ્રી જ્ઞાનસાગરજી મ. સા. સાહેબે શ્રાવક-શ્રાવિકાઓની સાથે સંસ્થાની મુલાકાત લીધી. તેઓ દ્વારા અહીંના કાર્યો જોઇ પ. પૂ. ગુરુભગવંતશ્રીની માટે અનુમોદના કરી.
- શ્રુતભવનના ટ્રસ્ટી શ્રી ભરતભાઈ તથા શ્રી ઉમંગભાઈએ આચાર્યશ્રી કૈલાસસાગરસૂરિ જ્ઞાનમંદિરની મુલાકાત લીધી. તેઓને આ મુલાકાત દરમ્યાન જ્ઞાનમંદિરના બધા જ વિભાગોમાં રૂબરૂ લઇ જવામાં આવેલ તથા સંપૂર્ણ માહિતીઓ આપવામાં આવી.
- 3. "I'm well impressed by how well the whole place, including the library, is maintained and managed. The collection in your library is wonderful and contains lots of extremely valuable manuscripts and material. I'm also impressed by your work to maintain, preserve and digitize the manuscripts. It is extremely important to digitize all manuscripts and make them easily available for research. I hope to organize a workshop on manuscripts here in the future that will be an excellent place for such a workshop.

My thanks for your hospitality and wormed welcome, I wish you success.

Piotr Balcerowicz, Prof.,

Oriental Studies & International Relations,

University Of Warsaw, Poland

### पार्श्वनाथ भगवानना बे स्तोत्र

संपा. हिरेन दोशी

# महेंद्रसूरिकृत पार्श्वनिन स्तोत्र

प्रत-विशेष :- वि. सं. २०५५मां आगमप्रज्ञ मुनिराजश्री जंबूविजयजी म. सा. द्वारा करावेल आचार्य हेमचंद्रसूरि ज्ञानमंदिर-पाटणनी झेरोक्ष प्रतमांथी आ स्तोत्र मळ्युं छे. जेनो अमे साभार उपयोग कर्यो छे.

# कृतिसार :-

कमळनी कोमळता जेना देहमां सींदर्यनो संचार करे छे. वादळनी कांति जेवा मणिमय नागराजोनी फणानो विस्तार जेना मस्तके शोभे छे. एवा पार्श्वनाध्य प्रभु जय पामे छे. प्रभुनी आवी प्रभाव गर्भित स्तवनाथी स्तोत्र प्रारंभाय छे. जमीननो कादव आकाशमां रहेला सूर्यना तापथी जेम नाश पामे छे. तेम हे भगवान ! तारुं मुखबिंब जोवाथी मारो पापनो कादव नाश पामी जाय छे, सूकाई जाय छे. उपमितिमां पण कह्युं छे के भगवाननी दृष्टि पडे एटले संसार-सागर तरवो नथी पडतो, पण सूकाई जाय छे. हे पार्श्वनाथ प्रभु तारा चरण-कमळनी सेवाथी मारा बधां ज घारेलां कार्यो पार पडे छे. प्रभु तुं खरेखर कल्पवृक्ष छो. शुं क्यारेय कल्पवृक्षनी सेवा निष्फळ जाय? न ज जाय. अवश्य फळदायी बने छे. वधु एक उदाहरण आपी भगवदर्शननी महत्ता बतावे छे- गरुडना दर्शन थतां सापना समूहमां नाश-भाग मची जाय छे. गरुडनी नजरमां साप टकी शकतो नथी. तेम गरुड समान हे प्रभु तारा दर्शन करवाथी मारा सापोलिया जेवा दुःखोना मुकाममां नाश-भाग मची जाय छे. तमाम पीडा अने परेशानी पलायन पामे छे.

तारा मंत्रना स्मरण मात्रथी विद्या-राज्य-लक्ष्मी विगेरे चिंतामणि रत्ननी जेम क्षणमां ज प्राप्त थाय छे.

आंगणामां उडती धूळ उपर पाणी छांटवाथी जेम धूळ बेसी जाय छे. उपशमन थाय छे. एम हे प्रभु शीतल जल समान तारा नामनुं स्मरण करचाथी ग्रह, रोग, शोक अने पीडानी धूळ घडीकमां उपशमी जाय छे. बेसी जाय छे.

मे (महेंद्रसूरिए)श्रीअश्वसेन-पुत्र(पार्श्वनाथ भगवान)नी निर्वाण-पदनी प्राप्ति अर्थे, विविध प्रकारना विशेषणोथी युक्त पार्श्वनाथ भगवाननी स्तवना करी. आ ६ मार्च - २०१३

स्तोत्रना कर्ता महेंद्रसूरि महाराज छे. कृतिमां कर्ता संबंधी बीजो कोई उल्लेख प्राप्त थतो नथी.

### महो. जयसागरकृत चिन्तामणि पार्श्वजिन स्तोत्र

### प्रत परिचय:-

अंदाजे विक्रमनी अढारमी सदीमां लखायेली हस्तप्रतमां महोपाध्याय जयसागरकृत पार्श्वनाथ स्तोत्र मळे छे. ज्ञानमंदिरमां ३५८४६ नंबर पर नोंधायेली आ प्रतमां कुल १ पत्र छे.

आ स्तोत्र सिवाय आ प्रतमां पार्श्वनाथ भगवान संबंधी ३ स्तोत्रो प्राप्त थाय छे. अन्य विशेष परिचय प्राप्त थतो नथी, पण प्रतादिना अक्षरो जोता वि. सं. १९मी सदीनुं अनुमान थई शके...

# कृति-सार:-

प्रस्तुत स्तोत्र खरतरमच्छीय आचार्य जिनराजसूरि महाराजना शिष्य कवि जयसागरजी महाराजनी रचना छे. आ कृतिमां कवि-महाराजे पार्श्वनाथ भगवानना स्मरणनो विशेषे महिमा गायो छे.

आ स्तोत्रनी रचना बारडोली नजीक आवेल घणदेवी (गणदेवी) गाममां थई, गणदेवीमां मूळनायक तरीके बिराजमान श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवाननी स्तवना ए आ कृतिनुं कथित तत्त्व छे.

धरणेंद्र-पद्मावती सेवित श्री पार्श्वनाथ भगवानमुं त्रण संध्याए स्मरण करवा पूर्वक नमन करवाथी आपित अने विघ्नोनो नाश थवाथी ऋद्धि-समृद्धि पण आवी मळे छे. जे कोई भविक जीव पार्श्वनाथ भगवानना मंत्रनुं स्मरण करे छे एनी आधि-व्याधि अने उपाधिओं दूर थाय छे. प्रस्तुत कृतिमां संसारना ऐहिक सुखे आपी शके ए तमाम वस्तुओंनी उपमाथी प्रभुने बिरदाव्या छे. कारण के प्रभु ऐहिक अने पारलौकिक बंन्ने भवोमां उपकारी बने छे. पार्श्वनाथ भगवाननुं निरंतर स्मरण करवाथी जन्म-जन्मांतरनुं दासत्व दूर थयाना दाखलाओए इतिहासना पानाओं भरी आप्या छे. मंत्रना प्रभावे भूत-प्रेत-पिशाचादि पण दूर थाय छे.

पोताना गुरुमहाराज राजसागरनी कृपाथी आ स्तोत्रनी रचना गणदेवीमां करी छे.

# महेंद्रसूरिकृत पार्धजिन स्तोत्र

नीलुप्पलइहदेहो, फणिदफणमणिमऊविच्छरिओ। अहिणवमेहुव्व फुरंतं(त?), विज्जुओ जयइ पासजिणो ।।१।। अवलोइयंमि तृह पह्!, मुहकमले गलइ पावपंकोहो। किं रिव बिंबे दिउठे, ठिइ बंधं कुणइ तिमिरभरो [[] [] [] तुह पहु! पयसेवाए, पुज्जंति मणोरहा असेसावि। कप्पनरुणो हि सेवा, कयाइ किं निफ्फला होड 11311 सामि! तृह दंसणेण वि, दूरंदुरेण जंति दुरियाई। भवियाणं गरुडस्स वि, पलोयणे पन्नगकुलाइं 11811 विज्जा-रज्जं-लच्छी, सोहगमरुग्गयाइं-कमलच्छी। लब्भइ तुम्ह पसाया, चिंतारयणस्स व खणेणं 11911 परमेमंतृव्य जए, वम्मानंदण मणंमि निवस्संते। वेयाल-वाल-भूया, पस(भ)वंति न साइणी एउ 11811 तृह नामगहणेण वि, गह-विगह-रोग-सोग-माईय। उवसमिं(मं)ति खणेणं, जलसित्तारेण्नीरुव्य 11911 सिरिआससेणतणओ, पासजिणो संथुओ मए एवं। महइंदस्रिपणओ, निव्वाणपयं पयच्छेउ 11211



# महो. जयसागरकृत चिन्तामणि पार्श्वजिन स्तोत्र

चिंतामणिपासजिणं, तं नमह भत्तिभरेण य तिसंझं। सिरिधरणिव्व नमंसिय, पउमावइ सेविय सुपायं | | 9 | 1 जो समरइ पासपहं, वंदिय सुरवरनरिंदपयकमलं। रिद्धिं पि फलइ निच्चं, उवद्दवा नासइ य तस्स  $\Pi \Im \Pi$ दारिदं-दोहग्गं, कृजाइ-कुमइ-कुसरीर-कुगईओ। जो स[म]रइ पासमंतं, न य हुंति कयावि किं तस्स l 13 I I चोरारिरणजलजलण-मइंदगयविसहराइंयभयाइं। जस्स पभावेण सया, पसमंति य दुरियसव्वाइं 11811 कप्पतरु-कामधेणु-चिंतामणि-लच्छिकुंभ-माईआ। जस्स मणे पासनाह, गिहंगणिमि फलइ य तस्स 1 | 4 | 1 पइं जायंताण मणे, गच्छंति सुरासुरीउ दासत्तं। पासजिणनाममंतं. पयंडं नत्थि त्थ संदेही | | 3| | गह-भूय-पिसाय-जक्खा-खुद्दभय-रक्खस-साइणिभयाइं। सिरिपासजिणिदनाम-मंतपभावेण पसमंति 11011 पढइ जनानंदपरं, जो सुणइ य पाससंथवम्यारं। सासयसुक्खनिहाणं, निव्विग्घं सो भमइ लोए H2 [] इय सिरि घणदीवीए, संथुओ जयसायरेण जिणचंदो। मह वंछियसिद्धिं कुरु, राजसायर गुरु पसाएण । । १ । ।



### विजयशेखर गणिना बे रास

संपा. हिरेन दोशी

मध्यकालीन साहित्य पद्य कथाओथी भर्यु-भर्यु छे. पद्य कथानको बोधनी दृष्टिए सरळ बने, सामान्य-जन तेने पोतानी भाषामां उतारी अने पचावी शके छे. कथा साहित्यना माध्यमे धर्मोपदेश अने जीवनंना विशाळ तत्त्वने उजागर करती अंचलगच्छीय गणि विजयशेखरनी बे रासा कृतिओ सागरचंदमुनि रास, अरणिकमुनि रास अहीं प्रकाशित करीए छीए.

जैन धर्मोपदेशना तत्त्वोने कथाना माध्यमे पोतानी साहित्य रचनामां वणी लेवानुं जैन साहित्यकारो क्यांय चूक्या नथी. कथा साहित्य धर्मोपदेशना तत्त्वनी साथे-साथे व्यवहार जीवन प्रत्येनी एक अनोखी दृष्टिनुं प्रदान करतुं होय छे. कथाना माध्यमे तत्त्वने वाचक सुधी पहोंचाडवानी परंपरा मूळ आगमोमां मळती आवे छे, ज्ञाताधर्मकथांग विगेरे तेना उदाहरणो छे.

मध्यकालीन साहित्यकारोमां विजयशेखरनुं स्थान बहु महत्त्वपूर्ण रह्युं हशे. चंदराजनी चोपाईमां कवि पोताना विशे वात करतां जणावे छे.

# 'तस सानिधथी हुं लहुं, कविजनमांहि मान.'

आ उल्लेख द्वारा एमनी साहित्यकार अने किव तरीकेनी प्रतिभा जणाई आवे छे. विजयशेखर महाराजनी कृतिओं काव्यात्मक, तत्त्विवारात्मक, बोधात्मक, अने स्तुत्यात्मक एम बंधा प्रकारनी छे. एमनी कृतिओमां कवित्वनी अभिनव समृद्धि जणाय छे. साडा त्रणसो वरसना समयनो तडको पड्यो, छतांय एमना कवित्वनो रंग आजेय ताजो अने चळकतो लागे छे. कवि क्यारेय विलय नथी पामतां, काव्यना अक्षरोमां सदाय जीवता ज होय के

कवि विजयशेखरे मध्यकालीन साहित्यने घणी कृतिओं आपी, साहित्यने समृद्ध अने सद्धर कर्युं.

# विजयशेखरनी परंपरा :-

विजयशेखर महाराजना जन्म समय, स्थान, माता-पितादि संबंधे विशेष माहिती मळी शकी नथी.

अंचलगच्छीय कवि विजयशेखर महाराजनी गुरु परंपरा आ प्रमाणे छे. आचार्य कल्याणसागरसूरि महाराजनी परंपरामां www.kobatirth.org

90

मार्च - २०१३

लाभशेखर → कमलशेखर → सत्यशेखर → विनयशेखर → विवेकशेखर महाराजना शिष्य गणि विजयशेखर थया.

### विजयशेखरनो सत्ता-काळ :-

विक्रमनी सत्तरमीना उत्तरार्धमां अने अढारमीना पूर्वार्धमां गणि विजयशेखर महाराजनी रचनाओ सारा एवा प्रमाणमां मळी आवे छे. विक्रमनी सत्तरमीना उत्तरार्धमां विजयशेखरनी दीक्षा अने प्राथमिक अध्ययन थयुं होवानी संभावना छे. सुदर्शन रास अने चंदराजाना रासनी रचनामां जणाव्या अनुसार गणि भावशेखर एमना विडल गुरुबंधु, के प्रायः विद्यागुरुना स्थाने होवानी शक्यता छे. श्री देशाई साहेब जैन साहित्यना संक्षिप्त इतिहासमां विजयशेखर गणिनो अंदाजित काव्य-काळ वि. सं. १६४३-१६९४ नोंधे छे, ज्यारे जै.गू.क. (भा. ३ पे. २३५) मां ऋषिदत्ता रासें नी रचना संवत १७०७ दर्शावाई छे. विजयशेखरने गणि पद क्यारे मळ्यूं, कयां नगरमां मळ्यूं इत्यादि कोई उल्लेख मळ्यो नथी. परंतु ज्ञानमंदिरमां संगृहीत वि. सं. १६९६मां कविनां हस्ताक्षरमां लखायेल सम्यक्त्व-स्तवननी प्रत-पृष्पिकामां कविए पोताना नामनी पाछळ गणि शब्द प्रयोज्यो होवाथी वि. सं. १६९६ पहेलां गणि-पदथी विभूषित हतां, एवं निश्चयथी फलित थाय छे. १७मीना उत्तरार्धथी १८मीना उत्तरार्धमां विजयशेखर महाराजनी सत्ता संभवे छे.

## विजयशेखरनो रचना-काळ :-

वि. सं. १६७९ वर्षे महा शूदि-२ना जेसलमेरमां पार्श्वनाथ भगवाननी कृपाथी आवश्यकसूत्रना आधारे ८ ढाल अने १९८ गाथामां सागरचंद-मृनि रासनी रचना करी, वि. सं. १७०३ पहेलां ७७ कडीमां अरणिक रासनी रचना करी, आ रासनी रचना प्रशस्तिमां आचार्य कल्याणसागरसूरि महाराज माटे जंगम-युगप्रधान बिरुदनो जल्लेख करे छे. आ रासनी रचना संबतादि प्राप्त नथी. वि. सं. १७०३मां लखायेली प्रत ज्ञानमंदिरमां संग्रहित छे, जे प्रायः कृतिना नजीकना समयनी हस्तप्रत होवानी संभावना छे.

जो के रासनी रचना प्रशस्तिमां आपेल शब्द-संवत मुनि सागर संसिधर ना सांख्यिक जल्लेख परत्वे विद्वानोनुं मंतव्य स्पष्ट थयुं नथी, अंचलगच्छ- दिग्दर्शनमां संपादक श्रीपार्श्वए ऋषिदत्तारासनी रचना-संवत वि. सं. १७१७ जणावी छे. तो. श्री देशाई साहेबे ए ज रासनी रचना संवत वि. सं. १६७७ नोंघी छे. तेमज जै.गू.क.ओनी [श्रीजयंतमाई संपादित आवृत्तिमां] ऋषिदत्ता रासनी नोंधना अंते श्रीजयंतभाईए सिसधरनो अर्थ चंद्रकला कर्यो, अने एनी संख्या १६ मूकी, आ रासनी रचना संवत १६७७ पण होई शके एवो प्रश्नार्थ कर्यो छे.

### श्रृतसागर - २६

99

- वि. सं. १६८१ना जेठ मासना रविवारे वैराटपुरमां ३६२ कडी अने १६ ढालमां, खंभातना ओशवालवंशीय श्रेष्ठी साह नागजीना बोध माटे कयवन्ना-रासनी रचना करी, ए ज वर्षना आसो सुदमां सुदर्शन-रासनी रचना करी, आ कृतिनी रचना प्रशस्तिमां कविए पोताना विडल गुरुबंधु भावशेखरनो नामोल्लेख करी एमना प्रत्ये पोतानो आदर-भाव व्यक्त कर्यों छे.
- वि. सं. १६८९ना पोष सुदि १३ने शुक्रवारे नवानगर (जामनगर)मां चंद्रलेखा चोपाईनी रचना करी, आ समयगाळा दरम्यान एमणे शांतिजिन बाल्यावस्था गीतनी रचना करी.
- वि. सं. १६९२मां भादरवा वदि ७ ना रविवारे राजनगरमां आत्मप्रतिबोध उपर त्रण मित्र कथा-चोपाईनी रचना करी, आ रचनानी प्रशस्तिमां कविए आचार्य कल्याणसागरसूरि महाराज माटे जंगम-युगप्रधाननुं बिरुद दर्शाव्युं छे, तेमज राजनगर-अमदावादना निवासी पारेख पासवीरनो गुरु-जनो प्रत्येनो आदर भाव जोई एना नामनो उल्लेख कर्यानुं जणाव्युं छे.
- वि. सं. १६९४ना कारतक वद- १९ने गुरुवारे भीनमालथी उत्तर दिशा तरफ सोळ कोश दूर मोर नामना गाममां अजितनाथ भगवानना सांनिध्यमां गुरुमहाराज विवेकशेखर अने विडल गुरुबंधु भावशेखरनी निश्रामां रही चंदराजा रासनी रचना करी, तेमज गौतमस्वामी लघु रास अने ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र पर बालावबोधनी रचना करी. आ सिवाय पण विजयशेखर महाराजे ७५५ कडीना यशोधर रासनी रचना करी हती.
- वि. सं. १६९६ पोस सुदि ६ने शुक्रवारे वाक्पताका (प्रायः आजनुं वक्तापुर ईडर पासे) नामना नगरमां गणि विजयशेखर महाराजे समकित स्तवननी बालावबोध लख्यो, तेमज वि. सं. १६७१ मां प्रहसन-नाटकनी प्रत लखी.
- वि. सं. १७०७मां महा वद-९ना दिवसे भीनमालमां ३ खंडमां ७७५ कडीमां ऋषिदत्ता रासनी रचना करी.

### विजयशेखरनो शिष्य-परिवार :-

विजयशेखर महाराजना शिष्य संबंधी विशेष कोई माहिती प्राप्त थती नथी. ज्ञानमंदिरमां संगृहीत प्रतना आधारे एमना बे शिष्योना नामो जाणी शकाय छे. १. विद्याशेखर, २. मुनि गणेश.

१. वि. सं. १६९७ चैत्र शुदि-२ ना बुधवारे आचार्य कल्याणसागरसूरि महाराजनी निश्रामां शिष्य विद्याशेखरे साधारण जिनस्तवनी अवचुरिनी प्रत लखी. १२ मार्च - २०१३

२. विक्रमनी अंदाजे १७मी सदीमां आचार्य कल्याणसागरसूरि महाराजनी निश्रामां विजयशेखरना शिष्य मुनि गणेशे ठाणांगसूत्र वृत्ति सहित धवलकनगर (धोळका)ना ग्रंथागारमां पठन-पाठन हेतु मुकाव्यानो उल्लेख प्राप्त थाय छे. प्रत विशेष :-

मध्यकालीन साहित्यनी घरेणा जेवी कृतिओ आ ज्ञानमंदिरनी शोभाने तरो-ताज्जा राखे छे. आ बे कृतिओनी हस्तप्रत ज्ञानमंदिरमां १७५२४ नंबर पर नोंधायेल छे. प्रतनुं माप २७४९२' छे. कुल पत्रो १० छे. दरेकपत्रमां १३ लीटी, दरेक लीटीमां ३८ थी ४३ अक्षरो लखाया छे. वच्चेना चोखंडामां चार अक्षरो लखेला छे. प्रतमां दंडनो उपयोग लगभग नथी. पिंडमात्रानो उपयोग घणा स्थाने थयेलो छे. खास करीने अनुनासिकने संयोगे वधारानो अनुस्वार घणे ठेकाणे मळे छे. जेम के आंणी, छांनू, नांमि, ख ने स्थाने 'ब' देषि-देखि, सुष-सुख, रेष-रेख क्यांक स्वतंत्रपणे ख अने ष पण लखायेलो जोवा मळे छे. अक्षरो चोक्खा अने सुघड छे. पहेला पत्रनी पाछळनी बाजुएथी सागरचंदमुनि रास शरू थाय छे, अने पेज नं. ७ ना पाछळना भागथी अरणिकमुनि रास शरू थाय छे, अने पेज नं. १० ना पाछळना भागे अरणिकमुनि रास पूरो थाय छे. सागरचंदमुनि रासमां ९० नंबर पछीनी कडीओ १ नंबरथी शरू थाय छे.

प्रथम कृतिनी आदिमां (भले चिह्न) श्रीवीतरागाय नमः लखीने प्रतिलेखके कृतिनुं आलेखन कर्युं छे. कृतिनी ढाळ, देशी, अने राग माटे लाल रंग वापर्यो छे, तूटी गयेलो पाट हांसियामां उमेर्यो छे. प्रतना अंते प्रतिलेखन पुष्पिका आ प्रमाणे छे.

पुष्पिका :- संवत १७०३ वर्षे कार्तिकमास शुक्लपक्षे ७ शनौ वणथली ग्रामे ऋ. श्रीश्रीश्रीश्रीश्री मेघाजी तस शिष्येण आंबा आत्मार्थं श्रीरस्तु ।।श्री ।।

प्रस्तुत बंत्रे रासोना संपादनमां जिनाज्ञा विरुद्ध काई पण लखाई गयुं होय एनुं त्रिविधे-त्रिविधे मिच्छामि-दुक्कडम्.



# विजयशेखर गणि विरचित सागरचंद रास (रचना संवत. १६८९)

आ कृति प्रायः सौ प्रथम वखत प्रकाशित थाय छे. कविए आवश्यकिनर्युक्तिनी टीकाओमां मळता कथानकना आधारे आ रासनी रचना करी छे. रासमां सागरचंद मुनिनी समताना गुण-गान ए कविनुं कथितव्य छे. रासकार महाराज कृतिना प्रारंभे माता सरस्वती अने पोताना गुरुभगवंतनुं स्मरण करी, जेसलमेरमां बिराजमान श्रीपार्श्वनाथ भगवानने मानस-शुद्धि हेतु प्रार्थना करे छे. आ रासनी रचना पाछळनो उद्देश जणावतां किव कहे छे. सज्जनोना गुण-गान ए चित्त-प्रसन्नतानो हेतु छे. आथी हुं सागरचंद मुनिना क्षमा गुणनी स्तवना करीश.

### रचनानो आधार :-

कविए जणाव्या अनुसार आ रासनुं मूळ आवश्यकिनर्युक्तिमां मळे छे. भद्रबाहु स्वामी आवश्यकिनर्युक्तिमां अनुयोग नामना प्रथम द्वार स्वरुपने जणावे छे. नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काळ, वचन, भाव, ए प्रमाणे सात-प्रकारना निक्षेपाओथी अनुयोगना स्वरूपने जणावे छे. ए सात प्रकारना निक्षेपान्तर्गत भाव-निक्षेपना विवरणमां निर्युक्तिकार सात उदाहरण आपी भावानुयोग-अननुयोगनुं चित्र स्पष्ट करे छे. प्रायः आ रासनी रचना हारिभद्रीय टीका अंतर्गत कथानकना आधारे थई होय एवी संभावना छे. कृतिमां कुल सात स्थाने संस्कृत-प्राकृत श्लोको मूकवानी तक कविए लीधी छे. एमां ५ गाथाओ प्राकृत, अने २ श्लोक संस्कृत छे.

# ढाल पेहली, कडी - २० (कडी १-२०) चंदायणनी देशी.

सौराष्ट्रनी द्वारका नगरीमां बलभद्रनो पुत्र निषध रहेतो होय छे. एने प्रभावती राणीथी सागरचंद्र नामनो पुत्र थाय छे. सागरचंद्र कुमार चतुर, कला-गुण युक्त, तेजस्वी अने रूपवान हतो. शांबकुमार साथे जीव एकने जुदो देह जेवी आत्मीयता हती. ए ज नगरमां धनसेन नामना राजाने कमलामेला नामे कन्या हती, रूपनो सूरज कमलामेलाना देहाकाशे मध्याह्ने हतो. नगरनी नारीओ एनी कला अने कोमळता सामे पाणी भरती. यौवनवय पामता ज पिताना मनमां दिकरीनी चिंताए प्रवेश कर्यो, योग्य अवसर जोई पिता धनसेने राजा उग्रसेनना दिकरा नभसेन साथे एनी सगाई करी, आ अरसामां नारद हाथमां वीणा अने कमंडल धारण करी नभसेनना घरे पधारे छे. कन्या लाभे नभसेन खुश-खुश होवाथी, पोते उभा थई नारदने आसन विगेरे आपवानुं औचित्य-विनय चूकी जाय छे. पोतानुं अपमान थयुं

१४ मार्च - २०१३

होय एवं लागता, क्रोधे भरायेल नारद नक्की करे छे. के गमे तेम करीने आने शिक्षा तो करवी जोईए, जेथी आ अंहकारी सीधो थाय.... आम विचारी नारद सागरचंद्रना घरे आवे छे. नारदनी पधरामणी थतां ज सागरचंद्र प्रसन्न थाय छे, साथे नारदने पण कुमार प्रत्ये अनुराग जागे छे. सागरचंद्र आसनादि आपी, नारदनो विनय साचवे छे, नारद खुश थाय छे. नारद साथेनी वात-चीत दरम्यान सागरचंद्र नारदने पूछे छे. के स्वेच्छाए विचरतां तमे आ नगरमां आश्चर्य-जनक कांई जोयुं?, नारद जवाबमां कहे छे - आ नगरमां एक आश्चर्य जोयुं छे, राजा धनसेननी पुत्री रूपे रंभा समान कमलामेला, नारद एना गुणनी अने रूपनी वात सागरचंद्रने करे छे.

नारदना वचनथी सागरचंद्रनुं मन कमलामेलाना विचारोथी भराई जाय छे. एना श्वास उतावळा, अने नयनो अधीरा बने छे. कमलामेलानी प्रीतमां रंगायेलो सागरचंद्र कुमार नारदने येन केन प्रकारेण कमलामेलानी प्राप्तिनी विनंती करे छे. ढाळमां १ संस्कृत अने १ प्राकृत श्लोक आप्यो छे.

# ढाळ बीजी, कडी - १८ (कडी क्रमांक १-४३), अलबेलानी देशी

आ ढाळमां कडी क्रमांक १ थी प्रारंभ थाय छे. २जी कडी पछी, प्राकृत श्लोक आवे छे. एनो क्रमांक २७ आपेल छे. त्यारबाद कडीने २८ थी आ क्रम अपायेल छे. सळंग ४३मी कडीए ढाळ पूरी थाय छे. एटले आ ढाळ कुल १८ कडीनी थाय छे.

वात आगळ चाले छे, कुमारना हृदयमां कमलामेलाना धबकारा धबके छे. आ बाजु नारद सिवाय कोई कमलामेला विशे जाणतुं न होवाथी सागरचंद्र कुमार नारदने पूछे छे. के एनो हाथ कोईना हाथमां अपाई गयो छे.? शुं ए कोईने वरी चूकी छे. ? नारद जणावे छे. के उग्रसेनना पुत्र साथे एनी सगाई थई छे, पण उग्रसेन राजाना पुत्रमां रूपना कोई ठेकाणा नथी. (पोतानी साथे थयेलुं वर्तन जो खराब होय तो माणसने ए व्यक्तिनी कोई वात सारी के साची लागती नथी. अहीं नारद पण नभसेनने कुरूप अने निर्गुण जणावी रह्यां छे.) आ सांभळी कुमार कहे छे के मारो कमलामेला साथे संगम केवी रीते थशे. ? नारद पण सागरचंद्र कुमारना मनने समजी, आ संबंध जोडाय एवो प्रयत्न करवानुं आश्वासन आपी. नारद त्यांथी नीकळी कमलामेलाना आवासमां पहोंचे छे. कमलामेला पण नारदने सागरचंद्रनी जेम नगरना आश्चर्य विशे पूछे छे. नारद कहे छे. सागरचंद्र जेवो रूपवान कोई जोयो नथी, अने नभसेन जेवो क्रोधी, कुरूप, अने वक्राकार कोई बीजो जोयो नथी. अहीं नारुद सागरचंद्र अने नभसेनना माध्यमे कमलामेलाने बीजो जोयो नथी. अहीं नारुद सागरचंद्र अने नभसेनना माध्यमे कमलामेलाने

श्रुतसागर - २६ 9५

पुरुषना रूप अने गुणना बंत्रे छोरनुं दर्शन करावे छे. कहो के तुलना...नभसेननी सागरचंद्र साथे अने सागरचंद्रनी नभसेन साथे....

नारदना वचनथी कमलामेलानुं हृदय पण सागरचंद्रना धबकार धबके छे. नारदनी वाक्छटाना बळे बंन्ने बाजु बराबरनी आग लागी गई. अधीर सागरचंद्र अने आतुर कमलामेला बंन्ने एक-बीजाना विचारोमां वणायेला अने परोवायेला होय छे. बंन्नेना मनमां चालता विचारोना निरूपणमां कविए अहीं सारी तक लीधी छे. काच अने मोती, खर अने घोडा, कोढी अने तेजस्वी पुरुषनो देह जेवा प्रचलित अलंकारोथी आ काव्यने मढी दीधुं छे.

# ढाळ त्रीजी, कडी - २२ (कडी क्रमांक ४३-६४) राग धन्यासी

सागरचंद्र अने कमलामेला बंन्ने एक-बीजाना विचारोमां खोवायेला छे. बंन्नेने एक-बीजानी प्राप्तिनी प्रबळ झंखना छे. सहज छे, ज्यारे प्राप्तिनो उपाय न देखातो होय त्यारे प्राप्तिनी झंखना प्रबळ बनी जाय छे. एवं ज अहीं सागरचंद्र अने कमलामेलाना प्रसंगमां बने छे. नारदना वचनथी कमलामेलाना मनमां नभसेननं स्थान सागरचंद्रए लीघुं, विचारो बदलाया, नभसेन प्रत्येनो प्रेम वैराग्यमां परिणम्यो.....कमलामेलानी आ स्थितिमां राहत आपवा नारद कहे छे. के हुं तारो सागरचंद्र साथे मेळाप करावीश.... आम कही नारद त्यांथी नीकळी सागरचंद्रनी पासे आवी जणावे छे के कमलामेला पण तने चाहे छे. आ सांभळी सागरचंद्रने वियोगनुं दुःख घेरूं बने छे, वधु दुःखी थाय छे.

वधु दुःखी अने उद्वेगी सागरचंद्रने जोई तेनी माता अने अन्य यादव कुमारों पण दुःखी थाय छे. आ अवसरे शांबकुमार पाछळथी आवी सागरचंद्रनी बे आंखों उपर हाथ राखे छे. त्यां ज वियोगनी आगमां दाझेलो सागरचंद्र कमलामेला! कमलामेला! बोली ऊठे छे. त्यारे शांब कहे छे. हुं कमलामेला नथी, कमलामेल छुं, कमला-मेलापक, कमलामेलाने मेळवी आपनार तारो आत्मीय मित्र छुं, आ सांभळी सागरचंद्रए शांबने कह्युं के गमे ते रीते मने कमलामेलानो मेलाप करावी आपो. शांबे कुमारने वचन आप्युं के हुं तने कमलामेलानो मेळाप करावी आपीश.

शांब विचारे छे. के पोते आपेलुं वचन कई रीते पूर्ण करवुं, आखी वात पोताना भाई प्रद्युम्नने जणावे छे. आ बाजु शांब अने प्रद्युम्न कमलामेलाना लग्नना दिवसे प्रज्ञप्ति विद्याना प्रयोगथी, कमलामेलानुं अपहरण करी, रैवत उद्यानमां लावी सागरचंद्र साथे लग्न करावी आपे छे. (भागी के भगावीने लग्न थयाना उल्लेखो यादव काळमां मळे छे.)

१६ मार्च - २०१३

ढाळ चोथी, कडी - १४ (कडी क्रमांफ ६६-७९) चंद्राउलानी देशी.

आ ढाळ कडी क्रमांक १ थी प्रारंभाय छे. कडी क्रमांक १ अने २ एना पछीनी कडीओमां पुनरावृत्ति पामे छे. त्यारबादनी कडीने ३ नंबर आपेल छे. पछीनी दरेक कडीओमां सळंग क्रमांक लखायो छे. आ ढाळ चंद्राउला (चंद्रायणो के चंद्रायणी)नी देशीमां रचायेली छे. चंद्रायण कुंडळीया प्रकारना छंदनुं नाम छे. एनो एकम बे छंदोनी (दुहा के आर्या अने कामीनीमोहन) कडीओनो बनेलो होय छे. अने पहेली कडीना अंतिम शब्दो बीजी कडीना आरंभे पुनरावृत्त थाय छे.

आ बाजु धनसेनना गृहांगणे लग्नना मंगल गीतो गवाय छे, धूपनी सुगंधी धुम्रसेरोमां आखुंय वातावरण मद-मस्त बन्युं छे. शरणाईना सूरो वातावरणने वधु मादक बनावे छे. रथ, हाथी, अने पायकोनी विशाळ संख्या साथे नभसेन कमलामेलाने परणवा आवे छे. त्यारे अंतःपुरमां कमलामेला जणाती नथी. हाहाकार मची जाय छे. जान लईने आवेल नभसेन सिहत समग्र परिवारजनने ख्याल आवी जाय छे. के कमलामेलानुं अपहरण थयुं छे. साथे आवेलो जन-समुदाय अंदर-अंदर धीमाधीमा सादे कमलामेला संबंधे प्रलाप करे छे. आवुं वातावरण जोई नभसेन नीसासा नांखतो, साव धरातल वगरनो थई जाय छे. ए समये बधा यादवो कमलामेलाने शोधता-शोधता रैवत उद्यानमां आवे छे. अने त्यां प्रद्युम्न अने शांब साथे सागरचंद्र अने कमलामेलाने जुए छे. राजा उग्रसेन अने पिता धनसेन कमलामेलाने बहु कटु-वचनो संभळावे छे. आ सांभळी शांब क्रोधे भराय छे, कमलामेलानी शोधमां आवेला यादवो साथे शांबनुं युद्ध थाय छे. शांबना बळनी सामे यादवो परास्त थाय छे. शांबनुं बळ जोई राजा उग्रसेन विगेरे उद्यानमांथी पाछा वळे छे.

# ढाळ पांचमी कडी - ११ (कडी क्रमांक ७९-९०), राग भूपाली, चौपाईनी देशी.

वात हवे विकट बनी रही, बळ खूटी गयुं, कळ वापरवा राजा उग्रसेन एक-पक्षे आखी वात कृष्णने जणावे छे. राजा उग्रसेन अने धनसेन कृष्णने लईने आ वातनो न्याय करवा रैवत उद्यानमां आवे छे. आखी घटनामां पोताना पुत्र शांबना पराक्रम जोई कृष्ण शांबने खखडावे छे.

पुत्रए करेलुं पराक्रम पिताना मनमां पस्तावानुं कारण बनी गयुं छे. तने कोई कहेनार नथी, शरम न आवी...इत्यादि शब्दो द्वारा पुत्र-पितानो गरमा-गरम संवाद चाले छे. तो शांबना पक्षे परणेली कन्या केम अपाय..... अने परणेली कन्या कोईए आपी होय एवं कोई शास्त्रमां क्यांय संभळातुं नथी, बे आंख जेवा सागरचंद्र अने नभसेन वच्चे अंतर शाने विचारो छो.आवा तर्को-वितर्कोना बळे कृष्ण, उग्रसेन,

### श्रृतसागर - २६

90

धनसेन प्रमुख उपस्थित तमामने शांब समजावीने पाछा वाळे छे. सागरचंद्र कमलामेला साथे नगर-प्रवेश करे छे. अनुक्रमे साथे रहीने सुखमय दिवसो व्यतीत करे छे.

# ढाक छड़ी कडी - १२ (कडी क्रमांक १-१२) राग केदारो जानी चलणा न देखिउं.

अहीं सुधी कथा अधःगामिनी हती, अथवा संसार तरफनो प्रवाह एमां गतिमान हतो. हवे, वहेण बदलाय छे. संसारथी वैराग्य तरफनुं चित्र आ ढाळमां कविए उघाड्युं छे.

आखुं नगर एक सरखा प्रवाहमां जीवन व्यतीत करे छे. ऋतुनी जेम एमां नोंध-पात्र फेरफार अनुभवाय छे, एकदा नेमि जिनेश्वर द्वारका नगरीमां पधारे छे. आखा नगरने एक-सम आनंदम् नी अनुभूति थाय छे. देव समोवसरणनी रचना करे छे. बारे य पर्षदा प्रभुना अमाप तेज अने चोगम उछळती देशनामृतनी धारामां परिप्लावित थाय छे. वनपालनी वधामणीए नरेसर कृष्ण समग्र परिवार सहित प्रभुने वांदवा आवे छे. सागरचंद्र गोखमां बेसी एक मार्ग जतां लोकोने जोई पोताना सेवकने पूछे छे. सेवकनी वात सांभळी प्रभुने वंदन करवा उद्यानमां आवे छे. प्रदक्षिणा आपी, यथा-स्थाने बेसे छे.

# ढाळ सातमी कडी - १३ (कडी क्रमांक ६-१९) झूबक**डानी** देशी.

आ ढाळनो कडी क्रमांक ६ थी शरू थयो छे. ढाळना पूर्वार्धमां नेमि जिन देशना, अने ढाळना उत्तरार्धमां सागरचंद्रनुं बारव्रत स्वीकार जेवा परिणामलक्षी विषयो मळे छे. आ ढाळनी ४-५ गाथाओमां कविए नेमिजिन देशनाना माध्यमे कृतिनुं धर्मोपदेश्य आवरी लेवायुं छे.

व्यवहार जीवनना प्रत्येक दिवसोमां अनुभवाती स्थितिनी वात कविए बहु सुंदर शब्दोमां रजू करी छे.

### राग-द्वेषनी सांकलइं रे, बंधाणा सवि जीव

देशना वर्णनना माध्यमे मनुष्यभवने हीरा साथे सरखावी एनी उपर कर्मनी घूळना थरो जामी गया छे एवं पुरुषार्थ सूचक निवेदन करवानुं कवि चूक्या नथी. देशना सांभळी सागरचंद्र समकित पामी, श्रावकधर्म अंगीकार करे छे. अहीं संसार त्याग थई शके एटलो प्रबळ निवेद नथी. पण हवे बहु वार न लागे एवं परंपर कार्यन्ं असाधारण कारण प्राप्त थई गयुं छे.

पर्व दिवसे एकवार सागरचंद्रए पौषधशाळामां पौषध कर्यो होय छे. पुरुषार्थ ज्यारे प्रबळ बने त्यारे कार्य सिद्धि हाथ-वेंत ज होय छे. कमलामेला साथे लग्न

मार्च - २०१३

थया पछी नभसेनना मनमां प्रगटी चूकेलो प्रबळ वैरभाव अंगारानी जेम तपीने लाल-घूम थई गयो होय छे, अवसरनी राह जोता नभसेनना मनमां सागरचंद्र प्रत्येनो वैरभाव प्रबळ बने छे.

एकदा सागरचंद्र स्मशानमां काउसग्ग ध्याने उभा होय छे. नभसेनने आज अवसर मळी जाय छे. कोई जोतुं नथी ने एवी चोकसाईथी चारे-बाजु जोई, बाजुमां सळगती चितामांथी धगधगता अंगारा घडाना ठीकरामां लई सागरचंद्रना माथा पर मूके छे. सागरचंद्र क्षमा धरी चलित नथी थतां, वेदना समभावे सहन करे छे, अतिशय गरमीना कारणे माथुं फाटी जाय छे. काळ करी सौधर्म-देवलोकमां पधारे छे. त्यांथी च्यवी महाविदेहमां जन्म लई, कर्म खपावी, मुक्ति प्राप्त करशे.

# ढाळ आठमी, कडी - ८, (कडी क्रमांक २०-२८) लाखा फूलांणीना गीतनी देशी

आगळनी गाथाओमां रासनो सारांश आप्यो छे. बहु प्रेम भरीने सागरचंद्रनी समता अने उपसम रसना परिभावन विशे श्रोताओने आंगळी चींघणुं कर्युं छे. सागरचंद्रना गुण गातां पोतानी रसना पावन थई छे. प्रारंभनी गाथामां 'अंगि वाधि अतिवान' कह्युं हतुं, अहीं 'रसना थाई पवित्त' आ पद मूकी, ए वातने फलितार्थ करी छे. पाछळनी गाथाओमां विजयशेखर महाराज पोतानी गुरु-परंपरा अने संवत स्थळादिनो उल्लेख करे छे. साथे-साथे आ रास आवश्यकसूत्रना आधारे लखायो छे. एवुं सूचित करी, पुलिकत भाव साथे आ रास पूरो करे छे.

# सागरचंद रास अने आवश्यकसूत्र

\* सागरचंद रासनी रचना किवना जणाव्या अनुसार आवश्यकसूत्रमां आपेल कथानकना आधारे थई छे. आवश्यकमां आ कथानक बहु संक्षिप्तमां मळे छे. किवए रासमां काव्यना अभिनव रंगोनी पूरणी करी छे. क्यांक-क्यांक रासना प्रवाहने किवए कथानुसार बहेतो कर्यो छे, तो क्यांक पात्रनी मानसिकताने देखाडवा कथानुं बहेण बदलावी, कथाने मानव-स्वभावनी वास्तिवकता नजीक लई जवानो स्तुत्य प्रयास कर्यो छे. दा.त. नारदनुं कमलामेलाने मळीने सागरचंद्रने त्यां फरीथी आववुं, कमलामेलानी प्राप्ति माटे सागरचंद्रने आश्वासन आपचुं, नभसेनना विनयभंगे नारदनुं कोपायमान थवुं, विगेरे घणा स्थानोमां किवए कथानकने वणवामां थोडी छूट लीधी छे. प्रस्तुत रास अने आवश्यक संबंधी साहित्यमां मळती कथा-अंशोना फेरफारोनी नोंध नीचे मुजब छे. श्रुतसागर - २६ 9९

आवश्यकनी चूर्णि अने टीकाओना आधारे रासमां मळता कथा अंशोनी तुलना

- अवश्यकनी मलयगिरि महाराजनी टीका, आवश्यकनी जिनदासीया चूर्णि अनुसार उग्रसेनना पौत्र धनदत्त साथे कमलामेलानी सगाई थई हती. ज्यारे आवश्यकनी हारिभद्रीय टीकामां, अने रासमां उग्रसेनना पुत्र नभसेन साथे कमलामेलानी सगाई थयानो उल्लेख मळे छे.
- अवश्यकनी चूर्णि, अने हारिभद्रीय/मलयगिरि टीकामां नभसेनने त्यां नारदनो प्रवेश, नभसेन वडे अनायासे नारदनो अनादर थवो, नभसेनने शिक्षा आपवानो नारदनो निर्धार, नभसेनने दंडना आशयथी, कमलामेलाने नभसेनथी दूर करवानो विचार ईत्यादि वातनो उल्लेख नथी.
- आवश्यकनी हारिभद्रीयमां सागरचंद्र नारदने पोतानो मेळाप कमलामेला साथे क्यारे थशे, ए प्रश्नना उत्तरमां नारद हुं जाणतो नथी. एवो जवाब आपे छे. ज्यारे रासमां नारद सागरचंद्रने योग्य समये कोई युक्ति लगाडी तारो मेळाप कराववा प्रयत्न करीश एम आश्वासन सभर वातनो निर्देश मळे छे.
- अकिवए रासमां नारद सागरचंद्रने त्यांथी नीकळ्या पछीनी सागरचंद्रनी भावावस्थानो उल्लेख कर्यो नथी. ज्यारे आवश्यकनी हारिभद्रीय टीकामां नारद पासेथी कमलामेला संबंधी वात सांभळी, सागरचंद्र पाटीया उपर कमलामेलानुं नाम लखे छे, कमलामेलाना नामनी माळा गणे छे. ईत्यादि नोंघ मळे छे.
- आवश्यकनी चूर्णिमां नारद पहेला कमलामेलाने मळे छे. ज्यारे हारिभद्रीय/ मलयगिरि टीका अने रासमां नारद पहेला सागरचंद्रने मळे छे.
- आवश्यक हारिभद्रीय/मलयगिरि टीकामां कुमारो शांबने मिदरा पीवडावी कमलामेला साथे भेटो करावी आपवानी प्रतिज्ञा करावे छे. ज्यारे रासमां शांब पोते ज हुं कमलामेला नहीं कमलामेल छुं, अर्थात् कमलामेलानी साथे मेळाप करावी आपनार तारो आत्मीय छुं, एम कही शांब वचनमां बंधाय छे.
- अवश्यक हारिभद्रीय/मलयगिरि टीकामां कमलामेलाना अपहरण माटे शांब प्रद्युम्न पासे प्रज्ञप्ति विद्या मांगे छे. तेमज कमलामेलाना अपहरण प्रसंगमां शांबनी साथे प्रद्युम्न अने नारदनो उल्लेख मळे छे. ज्यारे रासमां शांब अने प्रद्युम्न द्वारा कमलामेलानुं अपहरण थाय छे, रासमां प्रद्युम्न पासे प्रज्ञप्तिविद्यानी मांगणी, अने नारदनो उल्लेख जणातो नथी.
- अवश्यकनी हारिभद्रीय/मलयगिरि टीकामां नारद मोहित थयेली कमलामेलाने त्यांथी नीकळी सागरचंद्रने त्यां आवी, कमलामेला तने ईच्छे छे, एवं सागरचंद्रने

२० मार्च - २०१३

जणावे छे. ज्यारे रासमां नारद कमलामेलाने त्यां आवी सागरचंद्र तने चाहे छे. एवं कमलामेलने जणावे छे.

🗶 आवश्यकनी टीकाओमां मळता केटलांक कथा अंशो

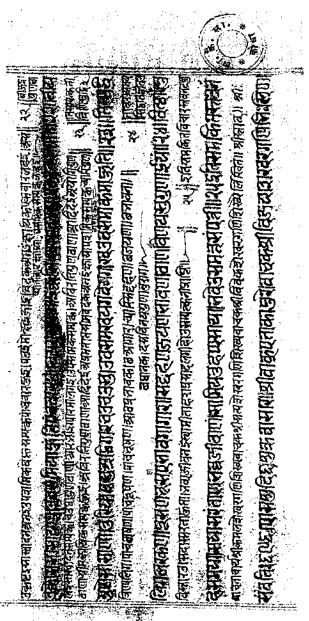
प्रज्ञप्तिविद्याना प्रयोगे कमलामेलानी प्रतिकृति बनावी, कमलामेलानुं अपहरण, लग्नना मंडपमां प्रतिकृतिनुं अष्टहास करी हवामां उडी जवुं, कमलामेला संबंधे नारदने पृच्छा, नारदनुं कमलामेला रैवत उद्यानमां होवानुं जणाववुं, रैवत उद्यानमां कृष्णनुं ससैन्य आववुं, कृष्णना सैन्य साथे शांबनुं विद्याधरनुं रूप करी युद्ध करवुं, कृष्ण क्रोधे भरायेला होवाथी शांबनुं माफी मांगी, पोतानुं मूळ स्वरूपे आववुं, कमलामेला झरूखेथी आत्महत्या करती होई, एनुं अपहरण करी, सागरचंद साथे परणाववुं, विगेरे शांबनुं कृष्णने जणाववुं ईत्यादि आवा केटलांक कथा तत्त्वो आवश्यकनी टीकाओमां मळे छे.

- आवश्यकिनर्युक्ति जिनदासीया चूर्णि पूर्वार्ध, पेज नं-११२ थी ११४,
   प्रका. ऋषभदेव केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था-रतलाम
- आवश्यकिनर्युक्ति मलयिगिरि टीका प्रथम-भाग, पेज नं-१३६ थी १३७
   प्रका. जिनशासन आराधना ट्रस्ट-मुंबई
- अवश्यकितर्युक्ति हारिभद्रीय टीका प्रथम-भाग, पेज नं-१७७ थी २८८ प्रका. प्रेमसूरीश्वरजी संस्कृत पाठशाळा-अभीयापुर तपोवन

# પ્રભુના એક વિશેષણનો પરિચય

નંદિસુત્રના પ્રથમ શ્લોકમાં પ્રભુ માટે એક વિશેષણ વપરાયું છે.

'जगिपयामहो मयवं' આ વિશેષણનો અર્થ કરતાં ચૂર્ણિકાર ગણિ જિનદાસ મહત્તર જણાવે છે કે અહિંસાદિ રૂપ ધર્મ સર્વજીવોનું રક્ષણ કરતો હોવાથી પિતા સમાન છે, અને આ અહિંસાદિ રૂપ ધર્મ (પિતા) એ પ્રભુ વડે પ્રરૂપાયેલો હોવાથી પ્રભુ ધર્મના પિતા છે, માટે પ્રભુ જગતના પિતાના પિતા = પિતામહ છે.



गणि विजयशेखर द्वारा सिरियत समीकेत स्तवनना टबार्थनी हस्तप्रतनुं अंतिम पत्र

# मार्च - २०१३

### सागरचंद रासना कथा अंश

- 🗴 बलभद्रना पुत्र निषधने प्रभावती राणीथी पुत्र सागरचंद्रनो जन्म.
- 🗶 शांबकुमार साथे सागरचंद्रनी घनिष्ठ आत्मीयता.
- **ж** धनरोन नामना राजानी कमलामेला नामनी कन्या.
- ж राजा उग्रसेनना पुत्र नभसेन साथे कमलामेलानी सगाई.
- 🗶 नारदनुं उग्रसेनना घरे आववुं.
- ж नभसेन द्वारा नारदनो विनयभंग.
- ж नारद द्वारा नभसेनने दंड आपवा विचार.
- सागरचंद्रने त्यां नारदनी पधरामणी.
- ж नारदनो सागरचंद्र साथे कमलामेला संबंधी वार्तालाप.
- सागरचंद्रने कमलामेलानी प्राप्तिनी इच्छा.
- कमलामेलने त्यां नारदनुं आगमन.
- ж नभसेननी कुरूपता अने सागरचंद्रनी सुंदरतानुं वर्णन.
- अक्रमलामेलानी प्राप्ति माटे शांबकुमारने सागरचंद्रनी प्रार्थना.
- 🗶 कमलामेलानी प्राप्ति अर्थे शांब अने प्रद्युम्ननी मंत्रणा.
- राजा धनसेनना महेलमां कमलामेलाना लग्ननी तैयारी.
- ж नभसेन अने स्वजन-परिजनोनुं जान साथे कमलामेलाने त्यां आगमन.
- ж शांब द्वारा प्रज्ञप्तिविद्याना प्रयोगे कमलामेलानुं अपहरण.
- \* रैवत उद्यानमां सागरचंद्र साथे कमलामेलाना लग्न.
- 🗯 कमलामेलानी शोधमां यादवोनुं रैवत उद्यानमां आववुं.
- श्र राजा उग्रसेन अने धनसेननी कृष्णने आ अंगे न्याय करवा विनंती.
- 🗯 शांब-प्रद्युम्न अने कृष्णनो संवाद
- असागरचंद्रनो नगर-प्रवेश.
- # नेमिनाथ भगवाननी द्वारिका नगरीमां पधरामणी.
- 🕱 भगवाननी देशनाथी सागरचंद्रए श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो.
- 🗯 पर्व दिवसे पौषधशाळामां पौषधनी आराधनामां लीन सागरचंद्र.
- **ж** काउसग्ग ध्याने स्मशानमां सागरचंद्र.
- # नभसेन द्वारा सागरचंद्रने उपसर्ग.
- असमताथी सागरचंद्रनुं स्वर्ग-गमन.

# सागरचंदमुनि रास

# प्रथम दुहा

सारव सार सदा दीयइं, मुझ मुखि वचनविलास, भगवित प्रणमूं भाविसंउं, पु(पू)रइ मननी आस. १ जेसलमेरि जगत्रगुरु, जीवन श्रीजिनपास, बे कर-जोडी वीनवुं, आपउ बुद्धिप्रकास. २ साहिज दीजइ सगुरुजी, मन सुधि मागु मांन, साध तणा गुण गावतां, अंगि वाधि अति वान. ३ खिमा गुणे जिग प्रगडउ, सहिजइ सागरचंद, तस अवदात कहुं भलउ, आंणी परिमाणंद. ४

# ।।ढाल-पहिली।। ।।चंदायणनी देसी(शी)।।

एह ज जंबुद्वीपि सुठांम, दक्षिणभरतइ क्षेत्र अभिरांम, देस भलउ सोरठ सुखवास, द्वारिकानयरी लीलविलास. १ वासुदेव नवमउ तिहां जाणुं, कृष्णराय यादवकुलि भाणुं, वड बांधव बलभद्र विराजइ, तस सुत निषध अनोपम छाजइ. २ निषधकुमर बेटउ अति बलीयउ, सागरचंद कलाइ कलीयउ, चतुर सुवेधक³नइ ज वाणुं, सोभागी देवकुमर समाणु. ३ शांबकुम[र]सिउं अति सुसनेह, जीव एकनइ जूदी देह, चकोरनी वाहली रजनी जेम, कमल विकासन सूरिज तेम. ४ यादवकुंयर अतिदुरदंत, रुपइं जीतिउ जिणि रतिकंत, निज इच्छाइं मिली सब खेलइ, सुखइं समाधिइं रिह मन मेलइं. ५ हिवि तिणि पुरि कहिउ महामंडलेस, नामइ धनसेन पुण्य वसेस, कमलामेला कन्या तास, रूप-गुणइं रंभा अभास. ६ यौवनवइं कुंयरि संपन्न, सकलकला भरी नारि रतन्न देखी जुवजन पांमइं मोद, सुंदर सहिजईं जिसी कमोदं . ७

मार्च - २०१३

कमलामेला कूंयरि बइठी, देखी पिता मिन चिंता पइठी, उग्रसेनसुत नभसेन चंगइं, तास प्रति दीधी मनरंगि. ८ करि कमंडल वेणा सोहि, अक्षमाला नारद मन-मोहि, रिषि आविउ नभसेन कि मंदिरि, ऊभउ रहिउ देखि निज भरि. ९ कन्या लाभइ कुंयर गहिगहितउ<sup>4</sup>, निव पेखिउ रिषि जातउ, विहतउ ऊठी निव तस आसन दीण, विनय न आवि पुण्यविहीण. १०

### भणीयं च :-

विणउ आवइं सिरि लहइ, विणीउ जसं च कित्तिं च, न कयावि दुव्विणीउ, सकज्जसिद्धि समाणेई. ९१ [उपदेशमाला, गाथा नं. - ३४२]

को चित्ते इम पूरं गयं, च कुणइं राजहंसाण, को कुवलयाण गंधं, विणयं च कुलप्पसूयाणं\*. १२

### । ।चालि । ।

नभरोन उपरि नारद कोपिउ, देखउ विनय पणि अधिम लोपिउ तउ हिवि सीख देसिउं सुविचारी, देखि द्रष्टि किसिउ अहंकारी. १३

### । १श्लोक । ।

ऐश्वर्यतिमिरं चक्षुः पश्यंतोऽपि न पश्यं(य?)ति।
पुनर्निर्मलतां याति दारिद्रांजन भेषजात् । १९४।। [ ]
संपदि यस्य न हर्षो विपदि विषादे रणे च धीरत्वं।
तं भूवनत्रयतिलकं जनयति जननी सुतं विरलं । १९५।। [ ]

### । ।चालि । ।

सागरचंद घरि रिषि आविउ, दिरसन देखतउ कुमरनइ भाविउ, कभउ थइ तस आसन दीध, भलइं पधार्या ! कारिज सीध. १६ निषधपुत्र करयोडी भाखि, नारदिसउं छांनू निव राखि, निज ईछ्याइं भमत भूंपीठि, कहउ कोई वात दीठी रस-मीठि. १७

उत्तरार्धना बे पाद उपदेशपद गाथा नं.-१००५ मां मळे छे.

# श्रुतसागर - २६

२५

नारद जंपइ सूणि सुत वात, तुंज गुण विनय अधिक मिन भात, तुज चिति दीसइ भली सजनाई, चोजं नी वात कहुं चिति लाई. १८ इणि पुरि श्रीधनसेन महाराय, महाधनवंत सेनासमुदाय, कमलामेला बेटी तास, जूवजन पेखि पडइ मृगपासि. १९ इसी नारि मइं दीठी आज, साज सधिस तूठउ माहाराज, तस रूपइं मोर्फ मन रीझइं, जाणुं तुझ कारिज कोई सीझइं. २०

### ।।ढाल-बीजी।। ।।अलबेलानी देसी।।

वात सूणी कुमरी तणी रे लाल, सागरचंदकुमारि मनमोहिउ रे, मगन थयउ चिति चींतवइ रे लाल, ऐ ऐ नारि संसारि मनमोहिउ रे. १ कुंयर बोलि कृतिकी रे लाल, भेदिउ कामनि बांणि मनमोहिउ रे, चिट-पटि लागी चित्तमइ रे लाल, विषयारस सहि नांण मनमोहिउ रे. २

कुंयर बोलि कूतिकी रे लाल(आंकणी)

#### यतः-

तप-जप-संजिम तांम नर साधइं निरुता थिया। अंगि न वाजइ जांम नयण बांण नारिह तणा ।।२७।। [ ]

## ।।चालि।।

नारद रिषि प्रति पूछतो रे लाल, सागरचंदकुमार मनमोहिउ रे, कहउ केहिन दीधी अछइ रे लाल अथवा कुंयरि विचारि मनमोहिउ रे. २८

कुंयर बोलि कृतिकी...

मार्च - २०१३

किह नारद कुंयर सूणउ रे लाल उग्रसेनसुत देखि मनमोहिउ रे, तेहिन दीधी छि कन्याका रे लाल निव तस रूप न रेख मनमोहिउ रे. २९

कुंयर बोलि कृतिकी...

कुंयर बोलि[इ] जांगिनि रे लाल, किम जूडसइ प्रभू वात मनमोहिउ रे, तस संगम किम होयसि रे लाल, दीसइ छि व्याघात मनमोहिउ रे.३०

कुंयर बोलि कूतिकी...

कुंयरिन रिखि भाखतं रे लाल, हउं मिन जाणुं सोय मनमोहिउ रे, जूगितं जोडउ जोडिस रे लाल, तुझ वखत बल जोइ मनमोहिउ रे. ३१

कुंयर बोलि कूतिकी...

इम कही नारद ततखिणइ रे लाल आविउ कमला आवासि मनमोहिउ रे, आगति-स्वागति बहु करी रे लाल, रिषि बइठउ सुविलासि मनमोहिउ रे. ३२

कुंयर बोलि कृतिकी...

मुनि प्रति जंपि कुंयरी रे लाल, मही-मंडलि जोतां स्वांमि मनमोहिउ रे, वात कहु सोहांमणी रे लाल, बिलहारी जाउं नांमि मनमोहिउ रे. ३३

कुंयर बोलि कृतिकी...

जंपि **नारद** सुंदरू रे लाल, कमला सूणि एक साच मनमोहिउ रे,

⊋હ

### श्रुतसागर - २६

पुरुष योडिपुर मिलही रे लाल, सुंदरी मांनि तु साच मनमोहिउ रे. ३४

अवतरिउ रूप-गुणे करी रे लाल, कामदेव अनरूप मनमोहिउ रे, सागरचंद सोहामणउ रे लाल,

वडभागी वडभूप मनमोहिख रे. ३५

कुंयर बोलि कृतिकी...

नभसेन बीजंउ निहालीयों रे लाल, क्रोधी कुरूप-आकार मनमोहिउ रे, निरंगुण नीसत<sup>९</sup> जांणीइ रे लाल मनि मोटिम अहंकार मनमोहिउ रे, 3६ कुंयर बोलि कूतिकी...

वात सूणी रिषिनी इसी रे लाल, कुंयरी चिंतवइं एम मनमोहिउ रे, सागरचंद पति जउ हुवि रे लाल, तो वाधि सूख प्रेम मनमोहिउ रे. ३७ कुंयर बोलि कूतिकी...

रिषिं प्रति राग धरी करी रे लाल, बाला बोलि वांणि मनमोहिउ रे, भायग<sup>10</sup> तिसिउं दीसि नही रे लाल, पापणी पडी दुखखांणि मनमोहिउ रे. ३८ कुंयर बोलि कूतिकी...

वैरी पिता मझ जांणीयइ रे लाल, वात विमासी न किद्ध मनमोहिउ रे, नभसेन वर नहीं तेहवो रे लाल फोकटि एहनि दिद्ध मनमोहिउ रे. ३९ कुंयर बोलि कूतिकी...

कुंयर बोलि कृतिकी...

मार्च - २०१३

यत्तः

मूर्खो-निर्द्धन-दुरस्थो, यो हि मोक्षाभिलाषिण। त्रिगुणाधिक वर्षश्च, न देया कन्यका बुधैः।। ४०।।

[विवेकविलास तरंग ५/श्लोक १३]

### । ।चालि । ।

वरसिउं तउ हिवि जाणिनइ रे लाल, रूडउ **सागरचंद मन**मोहिउ रे, किं वा अंग दझावसिउ रे लाल, पणि न वर्फ वर मंद मनमोहिउ रे. ४९

कुंयर बोलि कृतिकी...

किहां खरिन घोडउ किहा रे लाल, किहां काच मोतिणहार मनमोहिउ रे, कोढीसिउं काहुखावउ<sup>क</sup> कसउ रे लाल, तिम नमसेनकुमार मनमोहिउ रे. ४२

कुंयर बोलि कृतिकी...

सागरचंदिन मइ वरिंउ रे लाल, पणि कूंडे हु एह मनमोहिउ रे, मनोरथ पुण्यविहीणने रे लाल, दोहिले सीजइ तेह मनमोहिउ रे. ४३

कुंयर बोलि कूतिकी...

### ।।दुहर।।

इम कुमरी चिंता भरी, शोचा<sup>9</sup> करती देखि, नारिंद बोलावी तिसइं, रूडि-वचनविशेषि. ४४ खेद म धरि पुत्री हिंद, द्रढ किर चित्त सुजांण, फलिस मनोरथ ताहरउ, होसि कोडिकल्याण. ४५ अनुरागी सो पित अछइ, तुझ मुख देखण चाहि, कुमरी किह नारद किसिउं, मीठे बोलि म वाहि. ४६

# श्रुतसागर - २६

२९

तेह सारसो<sup>3</sup> संबंध मझ, होसइ केणि संचि, रिषि कहि सर्व भलउ होसि, ताहरि पुण्यप्रपंचि. ४७

।।ढाल-त्रीनी।।।।राग धन्यासी।।।।उसरपणी अवसरपणी।।

इम कमलामेला समजावी, नारदइं वचन विनाणिजी, आविच सागरचंदनि पासि, प्रीति-कथा कही जांणिजी. ४८

इम कमलामेला.... (आंकणी)

सही करि माने तुं मझ वातडी, प्रीति सांधि भली जोडिजी, सागरचंद सुणि मनि हरखिउ, रोमंचिउ नेह कोडिजी. ४९

इम कमलामेला....

नारदरिषि निज थांनिकि<sup>™</sup> जातां, दीधउ चित्रतपहजी, नीली राग चतुरपणि जांणिउ, राजकुंयर गहिगहजी. ५०

इम कमलामेला....

निरखइं चित्रितरूप पष्ट तव, रमणीरागतरंगिजी, आगलि-पाछलि मंदिरि अंगणि, देखइं भांमिनि[नी]भंगिजी. ५१

इम कमलामेला....

तिणि वधि खिण एक बिठउ, कुंयर करतो मनि संकल्पजी, एहिव आविउ शांबकुमर तव, पूंठइं गति करी अल्पजी. ५२

इम कमलामेला....

रां[रा]मति वसि<sup>१५</sup> बेहु पांणि करीनि, ढांकि लोचन दोइजी, सागरचंद बोलिउ तिणि वेलां, वात हीयइ मुखि सोयजी. ५३

इम कमलामेला....

मूंकि-मूंकि आंखडीया मोरी, तुहि ज कमलानारिजी, तुज मुखचंद-चकोर चाहिया, हरख अछि मनुंहारिजी. ५४

इम कमलामेला....

शांबकुमर हिस पभणि सुणि सुत, हउं नहीं तुज चिति कोईजी, कमलामेला मेलक हूं छउं, ईष्टिमित्र तुज जोइजी. ५५

इम कमलामेला....

मार्च - २०१३

कमलामेला मेलउ मुझनि, जंपिउ<sup>६</sup> तेणि बोलिजी, वचन कहिउं सो पडिवनुं पालउ, नट मत जाउ निटोलजी. ५६ इम कमलामेला....

#### यतः

अलसायंतेण सज्जणेण जे अक्खरा समुल्लवीया। ते पत्थर टंकु कीरीयव्व न हु अन्नहा हुंति. ।।५७।। [ ]

### । ।चालि । ।

शांबकुमर कहइ वचनबलइं हुं, बांधिउ बोलतां आजजी, कहउ कुठामि गड दूखि वहूनइं, सुसरा वैद्यसिउं काजजी. ५८

इम कमलामेला....

आगइ **उग्रसेनसूत**नि ए, दीधी सूता सुविचारिजी, हिवि कहउ सि कीजइ ईहा कणि, वाघ कूप परि सारजी. ५९

इम कमलामेला....

तउ हिवि कोईक दाय<sup>™</sup> रचीनि, करसिउं वचनप्रमाणजी, ऊत्तम तणा बोल नवि खोटा, ऊतर मेघ मंडाणजी<sup>\*</sup>. ६०

इम कमलामेला....

इम कही जंबुवतीनउ नंदन, गयउ प्रद्युमन पासइजी, वात कही कमलामेलानी, राग तणी सुविलासइजी. ६१

इम कमलामेला....

### यतः

जित्तय मित्तो नेहो, तित्तय मित्तो अनवरि संतावो। ऊज्झिय तेहं न हु कुंकुम, पिता विजइ जणेणः ।।६२।। [ ]

### । ।चालि । ।

क्रकमणीनंदन वचन न लोपि, शांबकुमर केरी साथिजी, दिन निजीक जांणी वीवाहनउ, लेई हथीयार सूहाथिजी. ६३

इम कमलामेला....

जेम काळा-घेरायेला वादळो अवश्यमेव जळ वरसावे छे तेम महापुरुषो पोताना वचनो पण अवश्यमेव पाळे छे.

# श्रुतसागर - २६

39

प्रज्ञप्ती-विद्याबलि आंणी, कमलामेला तांमजी, द्वारिका परिसरि वनमइं बिठा, शांबकुमर अभिरामजी. ६४

इम कमलामेला....

धूनउं लगन साधीयु धस-मिस, आरिमकारिम<sup>4</sup> कीधजी, सागरचंद परिणाविउ प्रेमि, पुण्यइं कारिज सीधजी. ६५

इम कमलामेला....

# ।।ढाल-चुथी।। ।।चंद्राउलानी देसी।।

**ऊग्रसेन** घरि एहवि रे, करइ वीवाहनउ जंगो<sup>९</sup>, धवल-मंगल गायइं गोरडी<sup>२</sup> रे, वाजइ तूर<sup>२</sup> सुचंगो. १

# ।।त्रूटक।।

वाजइं तूर सुचंगइ छंदइ, यादव-यान चडी नरवृंदइ, रथ पायक हाथी सुखकंदइ, घोडि चडिउ वर आवि आणंदि. १ जी राजेसर जी रे कमलामेला हेति, नभसेन आवीयउ रे, धनसेनमंदिर तेति, तोरणि भावीयउ रे. २

जी राजेसर.... (आंकणी)

तेहिव अंतःपुरि ऊछली रे, हाहा-रवनी वातो, धाउ रे धाउ ऊतावला रे, वेगइं सूभट संघातो. २

जी राजेसर....

# ।।त्रूटक।।

सूभट संघात हथीयारे सनूरा, धाया धसमसता सवि सूरा, जीत साल<sup>२२</sup> अंगइं संपूरा, आव्या सामि पासि हजूरा. ३

जी राजेसर....

कमलामेला कन्या भली रे, ए गयो कोई चोरो, अमंगल बात सुणी करी रे, परिजन करि सवि सोरो. ७१

जी राजेसर....

मार्च - २०१३

### ।।त्रूटक।।

सोर ऊठिउ विण अवसर पाखइं, कुमरी लेई जातउ कोई राखइं, नभसेन नीसासा बहु नाखि, वज्जि[इ] हणिउ वेदन परिभाखि<sup>\*</sup>. ७२ जी राजेसर....

उग्रसेन सिव राजीया रे, विलखवदन<sup>३३</sup> थया तांमो, सोधवा लागा चिहूं दिसइं रे, यादव सिव अभिरांमो. ७३

जी राजेसर....

# ।।त्रूटक।।

यादव सिव अभिरांम तिहां किण जोता, आव्या नारि जेणि विन, प्रद्यमन-शांबकुमर तिहां पिण, सागरचंद पासि दीठी धिण. ७४ कमलामेला परणी लही रे, धनसेन उग्रसेन रायो, कोपाकुल थया ततिखणइ रे, कुवचन किह चिति लायो. ७४

# ।।त्रूटक।।

कुवचन किह चित्ति लाई रे पापी, अपकीरित जिंग तुमची व्यापी, कूडी बुधि इसी कूणि आपी, न्याय रीति तुमे. दूरि कापी. ७५ जी राजेसर....

करी अन्याय जासिउ किहां रे, पुण्यहीण गमारो, सीख देवा नहीं को तिसंउ रे, रेति-रेति जात कुमारो. ७६

### ।।त्रूटक।।

रेति-रेति जात कुमर तिह्यारि, अमसर सीख देसइ विवहारइं, भाटिक आंधलउ भीति संभारी, अमो पड्या तुमारी लारि. ७६ जी राजेसर....

कुवचन बोल सुण्या तिसारे, खंत उपरि जिम खारो, शांबकुमरिन रोकीया रे, करता ऊग्र प्रहारो. ७७

<sup>&#</sup>x27; पीडाथी दुःखी थयेला अवाज करता व्यक्तिनी जेम बोले छे. [?]

श्रुतसागर - २६

33

### 11त्रुटक11

करता ऊग्र प्रहार सडा-सिंड, संबकुमर पणि आव्या अडो-अडि, सुभट तिहां भिडि भीम भडो-भिड, भालानि तरवारि कडो-कडि. ७७ जी राजेसर....

कुमरि कटक<sup>38</sup> करिंड वेगलंड रे, भूज बिल तेणि तुरंतो, उग्रसेन सिव चिंतवइ रे, साथनो आणिंड अंतो. ७८

### । (त्रूटक ) ।

साथनो आंणिउ अंत रे भाई, बल निव चालि एहसिउं लाई, पाछा वल्या सघला सखाई, कृष्णनइं ओलंभउ<sup>२५</sup> दीयइं धाई. ७८ जी राजेसर....

# ।।ढाल-५।। ।।चौपईनी।। राग-भूपालि

उग्रसेन धनसेन वचित्र, गोपीनाथ आविउ तिणि वित्र, शांबकुमरिन हाकी किह, उत्तम अन्याय सांसी किम रहि. ७९ रे कुपुत्र ए कीधू किसिउ, निरमल-कुलिन खंपण जिसिउं, हिव नमसेनिन कन्या देहि, मानि वचन मत ढील करेहि. ८० राजकन्या वली अवर सुचंगि, परणावउ सागरिन रंगि, तातवचन सूणी संबकुमार, वीनती एक किर मनुंहारइं. ८१ कहउ तात किहां वात सांभली, शास्त्रमांहि दीठीसिउं भली, परणी कन्या किम देवाय, न्याय इसिउं अवलउ किम थाय. ८२ तुम वचनइं वली देसिउं वही, हठनी वात तिजी अन्हे सही, वचन तुम्हारुं सिरि चाडीयइं, गूढ-प्रपंच ए देखाडीयइं. ८३ वृद्धकानि घाती जइ वात, किमही काज न विणिस तात, इम करता घरमां नहीं खेम, अंतरद्रष्टि देखउ एम. ८४ प्रद्यमननइं सांबकुमारि, प्रीछवीयउं श्रीकृष्ण मूरारि, पद्मनाभ मिन चिंतइ आज, मुष्टि भाती बोली वछराज. ८५

नेम प्रधार्या जिन नेम

38

मार्च - २०१३

आंखि बिहं मांहि अंतर किसउ, उग्रसेन नैषध पणि तिसिउ, समझाव्या वाल्या तव सह, सागरचंद आविउ लेई वह. ८६ कमलामेला नारि सुजांण, सागरचंद पणि चत्र जुवाण, चडीती वय चडता संयोग, बेहु जण रंगि भोगवई भोग. ८७ मनोहरमृहिल वडे मंदिरे, सुखविलिस षटरित बहु परे, कमलामेलाना संसारि, लाड-कोड पुगा निरधार. ८८ नभसेन सागरचंद निहालि, कोपइं त्रिस्ल उचडावि भालि<sup>30</sup>, वखत-वंत™सिउं केहं जोर, धन किम अपहरि सघलुं चोर. ८९ निस-दिन छिद्र निहालि सोय. सागरचंदनि विक्तउं होई. घांच उलइ सोय पृण्यप्रमाण, पृण्यि दिनि-दिनि कोडि कल्याण. ९० ।।ढाल छठी।। ।।राग केदारो।। सुदागर जानी चलणा न देसिउं इणि समइं द्वारिकांनगरी ऊद्यानइं, स्वामि समोसर्या पृण्यप्रधानइ. १ नेम पधार्या जिननेम पधार्या, जिणि निजदेसणि भविजन तार्या, २ (आंकणी) देव रचइ त्रिगढ तिहां सुंदर, बिठा त्रिभूवनसामी बंध्रर. ३ नेम प्रधार्या जिन नेम प्रूषदबार जुड़ी तिणि वेला, नाग-मोर जिहां दीसइ भेला. ४ नेम प्रधार्या जिन नेम वनमाली वधामणी देवइं, हरख पसाय आपिउ सोई लेवइं. ५ नेम प्रधार्या जिन नेम कृष्णराय वंदणि तव आविउ, चतुरंगदल परिवार सोहाविउ. ६ नेम प्रधार्या जिन नेम सागरचंद रमइं आवासइं, निरखइं गुखइ अ पुर स्विलासइं. ७ नेम पधार्या जिन नेम.....

एक-मारग जाई नर-नारी, ऊछरंग आज दीसई निरधारी. ८

### श्रुतसागर - २६

34

निज-सेवक कथनइ जांणी वात, दरिसन देखवा हरख न मात. ९ नेम पधार्या जिन नेम.....

रिथ बङ्सी आविउ तिणि कालि, पंचाभिगम साचिव तिणि तालि. १० नेम पंधार्या जिन नेम....

देई प्रदक्षिणा **सागरचंद, भेट्या** यदूपतिपयअरविंद, ११ नेम पधार्या जिन नेम.....

यथा-योगि बिठउ सुभरीति, धर्म सुणइं आदिर मन प्रीति. १२ नेम पधार्या जिन नेम.....

### ।।ढाल-सातमी।। ।।झूबकडानी देसी।।

भाखि भगवंत जांणिनइं रे, मधुर-वचनइ हितसीख सोभागी सांभलउ धर्म करउ तुमो धुरि लगइ रे, सरस जास रस-ईख सोभागी (आंकणी)

भव गोत हिरंख दोहिलंख रें, जिहां किंग विसमी व्याधि सोभागी, कर्म करू रज ऊपहरू रें, किम वीयइं जीव समाधि सोभागी. ६ सांभलंख धर्म करंख...

राग-द्वेषनी सांकलइं रे, बंधाणा सिव जीव सोभागी, सूख थोडां संसारिम रे, दुरगित दुख अतीव सोभागी. ७ सांमलउ धर्म करउ...

मिथ्यामित सवि परिहरे रें, आदरे श्रीजिनधर्म सोभागी मुगतिरमणि तुम वालही रें, छांडु विरूयां कर्म सोभागी. ८ सांभले धर्म करेड

देसन वाणि सूधारस्यइं रे, प्रीणिउ **सागरचंद** सोभागी, समकित आदरइं सुंदरू रे, सिव तिजिउ मिथ्याफंद सोभागी. ९ सांभलउ धर्म करउ...

श्रावक धर्म अंगीकरी रे, आविज वंदी गेहि सोभागी, विहार करिज **नेमीसरि** रे, अवर गामि-पुरि रेहि सोभागी. १० सांभलज धर्म करज...

38

सूधउ धर्म समाचरि रे सागरचंद कुमार सोभागी, विलसइं सूख संसारना रे, विचि-विचि<sup>३६</sup> अरथ-प्रकार सोभागी ११ सांभलउ धर्म करउ...

पर्वदिवसि एकणि दिनइ रे, पोसह उचरिउ जांणि सोभागी, कर्ममूल ऊच्छेदवा रे, काऊसग करिउ मसाणि<sup>ॐ</sup> सोभागी. ९२ सांभलउ धर्म करउ...

नभसेन तेणइं अवसरि रे, एकलउ दीठो सोय सोभागी, नयणे जोतउ चिहूं दिसइं रे, आगलि पाछलि कोय सोभागी. १३ सांभलउ धर्म करउ...

क्रोधि मनिम धम-धमइं रे, जांणइं आणुं अंत सोभागी, क्रोध कहउ सिउं निव किर रे, परिहरउ अमरस संत सोभागी. १४ सांभलउ धर्म करउ...

चिहि बलती देखी तिसइ रे, धगधगता अंगार सोभागी, जीरण घट-खप्पर भरी रे, मूंकइं मांथि गमार सोभागी. १५ सांभलउ धर्म करउ...

आपण पूं धन्य मांनतउ रे, कालमूहउ गयो नासि सोभागी, सागरचंद तेणि सिन रे, समरस चरमऊसासि सोभागी. १६ सांभलउ धर्म करउ...

धरम-ध्यांन चिति भावतं रे, मूंकिउ रागनइं द्वेष सोभागी, सहितउ वेदन-दोहिली रे, खिमा-धरी सुविसेष सोभागी. १७ सांभलउ धर्म करउ...

खिणिमइ काल करी गयउ रे, स्वर्गलोकि सोधरिम सोभागी. अपच्छरि मोती वधावीयउ रे, देखी अवतरिउ मरिम सोभागी. १८ सांभलउ धर्म करउ..

विदेह खेत्रि लहिसि वली रे, उतमकुलि अवतार सोभागी, कर्म खपावी पांमस्यइं रे, मूगतिपुरीसुखसार सोभागी. १९ सांभलउ धर्म करउ...

श्रुतसागर - २६

30

।।ढाल-आठमी।। ।।लारवा फूलांणीना गीतनी-देसी।।

इणी परि **सागरचंद** खिमा, गृणि करी जगमइं परगडउ<sup>38</sup>, तिणि परि भविका जाणि ऊपसम-रस, आणउ मनि ए वडाउ, २० जांणी जिनधर्म सार क्रोध, कषाय करंड सवि वेगलंड, परिहरु मोहनिद्रोह जिम जंग, जीपो सधलु अतिभलु , २१ चंद्रकला सम एह साध तणा, गुण अतिहिं मनोहरू, रसना थाइ पवित्त लाभ, अनंतो हुइ वली सुखकरू. २२ श्रीअंचलगिष्ठ आनंदचंद्रकुलई, विधिपक्ष साखा जाणीयई, भट्टारक गुणवंत श्रीकल्याणसागरसूरि साध वखाणीयइं. २३ तस पखि पृण्यपड्रि<sup>४०</sup> वाचक, श्री**सत्यशेखर** सूभमती, तस शिष्य ताजइ नूरि, विवेकशेखरगणि वाचक स्विहिती. २४ पांमी तास प्रसाद सागरचंदमइं, गायउ हितकरी. चत्र रसिक वेघाल सुणसइं, चउपई एह हरख धरी. २५ संवत सोलसडं साच उगण्यासीयडं, वरिस वली महं रची, महाश्दि बीज प्रधान, बुधवारइं बुधइं करी मची. २६ जेसलमेर मझारि पास, जिणेसर महिमा दीपतज, श्रीसंघनि सुखकार संपति, घि[घ]रि घरि अरीयण जीपतछ. २७ सागरचंदचरित्र आवश्यकसूत्रइं, जोय्यो वली वली, विजयशेखर कहि प्रेमइ, मूनि मोटाना गृण गातां रली. २८ इति श्रीसामायकविषये सागरचंदमूनि रास संपूर्ण

इति श्रीसामायकविषये सागरचंदमूनि रास संपूर्ण ।।ढाम ज करी नव।।।।क्षिरिवर्त ऋ. आंवा।।



#### विजयशेखर विरचित अरणिक रास

आ कृति प्रायः अप्रकाशित छे. सागरचंद्र रासनी जेम आ कृतिना रचनाकार गणि विजयशेखर महाराज छे. कविए रचनाना आधारनो उल्लेख करेल नथी, पण ए समयमां प्रचलित कोई गद्य चारित्रना आधारे, आ रासनी रचना थई होवानी संभावना छे. कृतिनी आदिमां निर्मल-बुद्धि प्रदात्री सरस्वती मातानी स्तुति करी, अरणिक मुनिना चारित्रनो प्रारंभ करे छे. रासनी रचना पाछळ कविना उद्देशमां गुणानुवाद, मननी शुद्धि, अने कांईक नवुं आपवानी वृत्ति विशेषे रही छे. वाचकने अरणिक ऋषिना जीवन आसपास गूंथायेली घटनाओमांथी एक अनेरो कथा-प्रवाह मळी आवे छे. आखी कृति देशी-त्रोटक छंदोबंधमां रचायेली छे. कृति-लेखनमां प्रायः हस्व घणां शब्दो दीर्घ थया छे. दा. त. सूख-सुख, मुनी-मुनि, विगेरे...ए तमाम सुधारा मूळ पाठमां करी लेवामां आव्या छे. पहेली, बीजी, ढाळमां ढाळ क्रमांकनो निर्देश नथी. ३जी अने ७मी ढाळनो क्रमांक आपवानो रही गयेल छे.

अरिणक मुनिनुं कथानक जैन समाज अने जैन-कथाओमां बहु प्रचलित छे. मध्यकालीन साहित्यए पेट भरीने अरिणकमुनिना गुण-गान गाया छे. आढ ढाळमां आखुं कथानक विराम ले छे. चढाव उतार ए कांई आपणी जिंदगीमां ज बनती घटना छे, एवुं नथी. भरती ओटना प्रसंगो तो ए महापुरुषना जीवन-किनारे य मळी आवे छे. पतन अने उत्थान ए मानव समाजमां बनती एक विशिष्ट घटना छे. प्रकृतिमां अन्य कोई स्थळे आवी प्रक्रियानो समन्वय नथी. जन्म अने मृत्युना बे छेडा वच्चे रहेला जीवनमां, कोई पशु क्यारेय पोतानुं रूपांतरण करी शकतुं नथी, पशु इच्छे तो पण जन्म अने मृत्यु वच्चे रहेलां जीवनमां फेरफार थई नथी शकतो, ज्यारे मनुष्यनी ऊंचाई अने ऊंडाई तद्दन जुदी छे, एनी भात अनोखी छे. एनी पासे चडवाना अने पडवाना रस्ताओं छे. कथाओमां मळता पतन अने पुनरुत्थान ए मानवजीवनने नवी दिशा अने नवी दशा आपवामां घणे अंशे फळदायी बने छे. नबळा समये जे व्यक्ति पतननी खाईमां पहोंची जाय छे. ए ज व्यक्ति समय आवता आध्यात्मिकताना अव्यल अने ऊंचा शिखरो सर करी दे छे. आ आखुं कथानक आवा ज अर्थनुं सूचक अने ज्ञापक छे.

### कडी १५ (कडी क्रमांक १-१५) छंद त्रोटक

सुख समृद्धिथी भरपूर तगरा नामे नगरीमां दत्त नामना एक श्रेष्ठी त्यां निवास करे छे, तेनी पत्नी भद्राना कुखे अरणिकनो जन्म थाय छे. काळकमे

### श्रुतसागर - २६

39

विचरता कोई गुरुभगवंत तगरा नगरीमां पधारे छे, गुरुभगवंतनी देशनाथी दत्त अने तेनी पत्नीनुं हृदय परिवर्तन पामे छे, पोतानी पत्नी अने पुत्र साथे गुरुदेव पासे दीक्षा ले छे. पुत्र अरिणक मुनिवर उपर अनन्य स्नेह भाव होवाथी पठन-पाठन सिवाय अन्य कांई ज कार्यनो भार न हतो, गुरुदेव साथे विहार करी निरितचार चारित्रनुं पालन करता अनेक वर्षोना व्हाणा वीते छे. समय बदलाय छे, पिता मुनिनो काळधर्म थाय छे.

### ढाल पहेली कडी-७ (कडी क्रमांक १६-२३) राग मारुणी

अत्यार सुधीनी अरिणक मुनिनी जीवन चर्यानुं समग्रपणे रूपांतर थई जवानुं हतुं. अरिणकाने कमळनी पांदडी जेवो देह, अने पिता-मुनिना वात्सल्य भाये, अरिणकाने कोई कष्ट मळे के अधिक परिश्रम पहोंचे एवं कोई कार्य करवानो अवसर ज नहोतो आव्यो. हवे गोचरी-पाणी विगेरे लाववानुं अरिणक मुनिना फाळे आव्युं. अरिणकाना स्मरण हिंडोळे पितानी साथे वितावेला दिवसो झूल्या करे छे. क्यारेक मीठावचानो याद आवे छे, तो क्यारेक पिताए कोळीयामां काळजानो प्रेम पूरीने वपरावेलो आहार याद आवे छे. क्यारेक पिता मुनिए करेली आराधनानी स्मृत्ति मनने आई करे छे. तो पिताए काळजीथी करेलुं जतन याद आवे छे. एमकडां रमवानी उमरमां पिताना पडछाये नीकळेला युवान अरिणक मुनिने पितानो खालीपो हृदयमां चीरा पाडे छे, वियोग केमे करी सहेवातो नथी. आग अने वियोग बंग्ने दहन-मूलक छे. आग तो पाणीथी ओलवाई जाय, पण वियोग क्यारेय .....

साध्वी माता भद्रा आवी, समजावे छे, एना वचनोथी अरणिक स्थिर बनी, गुरुदेवना चरणोमां निरतिचारपणे चारित्र जीवनने व्यतीत करे छे. जे क्यारेय भूलाता नहोतां, ए क्यारेक याद आवी जाय छे. दिवसो पसार थाय छे...

## ढाल बीजी, कडी-९ (कडी क्रमांक २४-३३) राग गोडी - रामचंदकी वागि चंपउ मुनि रहिउरी ए ढाल

वैशाख मासनो धोम-धखतो तडको पड़ी रह्यो छे, धरती अने आकाशमांथी एक सरखो ताप पड़ी रह्यो छे, रस्ते पथरायेली रेतीना कणीया अंगारा लागे एवा तडकामां मुनि अरणिक स्थविर साधु साथे गोचरी नीकळ्या छे, वायरामां वरसती लू सूरजनी गरमीमां वधारो करे छे. जीम अने ताळवुं सूकाई जाय एवो सूर्य तपे छे. माछली अने जलनुं उदाहरण आपी कविए ऋषिने लागती गरमीना वर्णनने वधु तादृश कर्युं छे.

साथे आवेल स्थविर साधु आगळ नीक्ळी गया, आगळ स्थविर साधुने भेगुं थवुं मुश्केल होय, गरमीना कारणे अरिणकेना पग एक डगलुं मांडवाने समर्थ नथी. त्यारे आवा मार्गे कई रीते जवाशे? मारा पिताने धन्य छे! जेणे आटला दिवस आवुं कठिन चारित्र पाळ्युं, मने जतन पूर्वक पाळी पोषीने मोटो कर्यो, कोई दिवस मने दुःखनो अनुभव न थवा दीधो....विगेरे चिंतवता अरिणक वसतिमां पाछा फर्या, वसतिमां रहेला साधुओए कोमळ-देह सुख-शीलतानुं कारण छे, अरिणकथी संयम-पालन नहीं थई शके... ईत्यादि विचारीने साधुओए वसतिमांथी बहार काढ्या, उपाश्रयेथी नीकळी, धीमे पगले चालतां ऋषि हवेली पासे स्हेज छांयो लेवा माटे आव्या, शरीरना आराम माटे छांया अने विसामा मळी रहेशे, पण विचारोना आ चालता वमळने विसामो आपवानुं स्थान क्यां... एक नोखी एंधाणी के भय वर्ताता शून्य-मनस्क थई, आंखो मीची, विसामो लई रह्यां.

### ढाळ चोथी, कडी-१५ (कडी क्रमांक ३४-४९) रबारी के छोहरा फाग

ए ज हवेलीना नवयौवना शेठाणी झरूखे बेसी चारे-कोर दृष्टिपात करता होय छे, एटलामां अचानक नझर विसामो लेता मुनि पर पडे छे. पोतानी हवेलीना छांये विसामो लेतो रूप अने तेजना अंबार जोई एनुं मन आकर्षित थयुं, दासीने बोलावी, मुनिने आमंत्रण आपी, ऊपर बोलावी लाव. दासीना आमंत्रणे मुनि ऊपर पधार्या, शेठाणीए वहोराववा मोदक मंगाव्या, क्षुधा पीडित मुनि पण हरखित थयां,

शाने आ तप आदर्युं छे, आ यौवनवयमां आवुं कष्ट शा माटे वेठो छो. आप अहीं प्रेमथी निवास करो, हुं आखी हवेलीमां एकली ज छुं. शेठाणीना आवा राग-सभर वचनोथी मुनिनुं मन मीणनी जेम पीगळी जाय छे. कवि अरणिकनी मानस-संवेदनाने बहु ऋजु शब्दोमां व्यक्त करे छे. वनिताना वचनोथी अरणिकनुं परिवर्तन थयुं. व्रत छोडी, अरणिक घणो समय ए शेठाणीने त्यां रह्यां,

### ढाळ पांचमी, कडी-१० (कडी क्रमांक ५०-५९) राग टोडी - धन्यासिरि

अरणिकनो आत्मा जागे छे, पोतानी भूलनुं प्रायश्चित्त करवा पोताना गुरुदेव विगेरेनी तपास करे छे. साधुओ तो त्यांथी अन्यत्र विहार करी गया होय छे, अरणिके विचारे छे - बहु खोटुं कर्युं. आ में शुं कर्युं. प्रभुना वेशनो त्याग करी, मारा कुळनी लाज डूबाडी. ईत्यादि विचारे छे. आ बाजु भद्रा माताने खबर पडे छे. के अरणिक व्रत छोडी, कोईक शेठाणीनी हवेलीमां निवास कर्यो छे. नगरनी शेरीओमां अरणिक-अरणिक करती माता भद्रा दिवस-रात फरे छे. जे नानुं बाळक मळे एने तुं ज मारो अरणिक छो, एम कही एने बोलावे छे. नगरना लोको गांडी

#### श्रुतसागर - २६

89

समजी, एनी मजाक करे छे, अरिणक अने एना परिधमां रचाती घटनाओनी हारमाळा एटले नियतिए जेने निःसासा आप्या होय एनी हालतनो प्रत्यक्ष चितार...

विधीनी विचित्रता केवी छे. ए क्षणमात्रमां आ चरित्र समजावी दे छे. अरिणक गोखमां बेसी चो-तरफ दृष्टिपात करी रह्मां छे. जोवानुं कांई नथी, पण समये पोतानी उपर करेला प्रहारों केमें यं करीने भूलाता नथी, अंदरनों ताप केमेय ओछों थतों नथी. बहार जोवुं तो निमित्त-मात्र छे, नजरमां भीनाश नथी. छे मात्र कोरी खाय एवी शून्यता.

अचानक एनी नजर आजथी केटलाक वर्षो पहेलां ज्यां अरिणके विसामो लीधो हतो, ए ज स्थाने एनी नजर पडे छे. एक वृद्ध स्त्री त्यां विसामो लेवा बेठी छे, अरिणकनी स्मृतिमां बाजेला समयना पोपडां खरवा मांडे छे. पोतानी माता मळी आवता अरिणक आनंदित छे. तो आवी दुर्दशा बदल पस्तावानो'य पार नथी.

अरिणक तरत ज नीचे आवे छे. पोतानी मातानी आवी हालत जोई, पोते करेली भूल बदल एना पस्तावानी आगमां पेट्रोल उमेराय छे. अरिणक समजी जाय छे, के मारा कारणे ज मारी मातानी आ हालत थई छे. मारो वियोग ज मातानी आ परिस्थिति प्रत्ये जवाबदार छे.

## ढाळ छष्ठी, कडी - ६ (कडी क्रमांक ६०-६५) ऊच्छरपणीनी देशी

मातानी दशा जोईने अरणिक धुसके-धुसके रडे छे. गद्-गद् वाणीमां पोते अरणिक छे, एवुं माताने जणावे छे. माता पण एने वात्सल्यथी नवडावे छे, तुं आटला दिवस क्यां हतो? क्यां रहेतों हतो? एवा तो जात-जातनां प्रश्नो अरिणकने पूछे छे.

माताने मळवाथी अरिणके हळवाशनो अनुभव कर्यो, पिताना विरह बाद आटला वर्षो सुधी भरायेलो डूमो आजे धुम्मसनी जेम अंदरथी ओगळी रह्यो हतो. माता सामे होवाथी अरिणक निरांतनो श्वास लई रह्या हतां, अरिणक अत्यार सुधीमां वीतेला समयनी घटनाना एक-एक पडलने खोले छे. क्यांय सुधी माता अने अरिणकनो संवाद चाले छे,

### ढाळ सातमी, कडी - ७, (कडी क्रमांक ६६-७२) वीर वखाणी रांणी चेलणाजी देशी

चारित्र वगर आ भवनी जेम तुं परभवमां पण दुःख पामीश. तुं आटला दिवस अविरतिमां रह्यो, हवे ए बधा दोषोनुं प्रायश्चित्त कर, जीवना भोगे पण व्रतनो भोग

न कराय, जीव छोडी देवाय, पण व्रत केम छोडाय इत्यादि.... अहीं माता गुरु स्वरूप बनी अरणिकने सांत्वना आपी, सात्विकतानुं वावेतर करे छे.

माता तुं कहीश, एम करीश. पण माराथी व्रत-पालन नहीं थाय. तुं कहे तो हुं अणसण स्वीकारी लऊं, पण व्रतनो भार माराथी वहन नहि थाय, इत्यादि अरणिक पोतानी वात माताने जणावे छे. वर्षो पहेला मोहनी घेरी निद्रामां पोढेला अरणिकने माता मीठां वचनोथी जगाडे छे. माता फरीथी व्रतनुं आचरण करवानी वात करे छे, माता समजावी गुरुभगवंत पासे लई जाय छे, अरणिक फरीथी महाव्रत लई, अणसणनी आराधना करवा, गीष्म-काळमां सिद्धगिरिराज पर जई, जयणाथी शिला पूंजी संथारो करे छे. माखणनी जेम शिला उपर अरणिकनो देह ओगळी जाय छे. अरणिक ध्यान बळे काळ करी स्वर्गे पधार्या.

## ढाळ आठमी, कडी - ६ (कडी क्रमांक ७३-७८) राग धन्यासी

आ प्रमाणे अरिणके दुष्कर एवा उष्ण परिषहने सहन कर्यो, कर्म खपाय्या. आ रीते संयमना एक गुणनी पण विशिष्टपणे आराधना करवाथी आत्मानो विकास थाय छे, पाछळनी त्रण गाथाओमां कविए पोतानी गुरु-परंपरा जणावी छे.

## आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां संगृहीत अरणिकमुनि संबंधी कृतिओनी नोंध

कृतिनाम	कर्तानाम	भाषा
अरणीक मुनिनी ढाळो	अज्ञात	मा.गु.
अर्हन्नकमुनिनी कथा	अज्ञात	गु.
अरणिकमुनि सज्झाय	अज्ञात जैन	गु.
अरणिकमुनि सज्झाय	अज्ञात जैनश्रमण	मा.गु.
अरणिकमुनि कथा	अज्ञात जैनश्रमण	पु.
अरणिकमुनि सज्झाय	अज्ञात जैनश्रमण	मा.गु.
अरणिक मुनि	अज्ञात जैनश्रमण	गु.
अरणिकमुनि सज्झाय	अज्ञात जैनश्रमण	मा.गु.
अरणिकमुनि सज्झाय	अज्ञात जैनश्रमण	मा,गु.
अरणिकमुनि दृष्टांत	अज्ञात जैनश्रमण	मा.गु.

83

### श्रुतसागर - २६

कर्तानाभ कृतिनाम भाषा अरणिकमुनि रास आणंद मा.ग्. अरणिकमृनि सज्झाय कवियण मा.ग्. कीर्तिसोम अरणिकमूनि सज्झाय मा.गु. खीमा अरणिकमृनि सज्झाय पृहिं. अरणिकमुनि सज्झाय ज्ञानकीर्ति मा.ग्. अरणिकमुनि सज्झाय दयातिलक मा.गू. अरणिकमृनि चौपाई नयप्रमोद मा.ग्. अरणिकमृनि रास बुधमल मा.गु. अरणक सिज्झाय मेघा ऋषि मा.गु. अरणीक मुनि यशोभद्रसूरि η. अरणिकमूनि सज्झाय रतनचंद मा.ग्. राजमल लोढा अरणिक 痯. अरणिकमुनि चौपाई राजहर्ष मा.ग्. अरणिकमृनि सज्झाय रूपविजय मा,गु. अरणिकमृनि सज्झाय लिध्धेविजय मा.ग्. अरणिकम्नि सज्झाय लब्धिविजय मा.ग्. लब्धिविजय अरणिकम्नि सज्झाय मा.गु. लब्धिविजय अरणिकमूनि सज्झाय मा.ग्. अरिंगकमृनि सज्झाय लब्धिसुरि गु. अरणिकमुनि रास विजयशेखर मा.गु. अरणिकमृनि सज्झाय विद्यारत्न मा.ग्. अरणिकमुनि सज्झाय समयसुंदर गणि मा.गू. अरणिकम्नि गीत समयसूंदर गणि माग्. अरिषकमृनि सज्झाय समयसुंदर गणि मा.गू. अरणिकमुनि सज्झाय हरख मा.गू.

#### 88

### अरिणकमुनि रासना कथा अंश

- दत्त अने सुभद्रानुं पुत्र अरिणक साथे संयम ग्रहण.
- 🗶 दत्तं मुनिनो अरणिक मुनि उपर विशिष्ट अनुराग.
- अरणिकनुं कष्ट-रहित संयम पालन.
- ж पिता मुनिनो काळधर्म.
- **ж** पुत्र अरणिकने पितानो सालतो वियोग.
- भ पितानी आराधनानी अनुमोदना.
- अरणिकनुं स्थिविर साधु साथे गोचरी भ्रमण.
- 🕊 तापथी अरणिकनुं खिन्न थइ, वसतिमां पाछा फरवुं.
- 🗯 वसतिमांथी अरणिकनुं नीकळवुं.
- अरिणक उपर शेठाणीनी नजर.
- दासीनी विनंतीथी अरणिकनुं शेठाणीना घरे जवुं.
- शेठाणीना राग-वचने अरणिकनुं पतन.
- अरणिकनो पस्तावो
- साधुओनी शोधमां नगरनुं भ्रमण.
- पुत्र अरणिक काजे माता भद्रानुं नगरमां फरवुं.
- झरूखेथी अरणिकनुं माताने जोवुं.
- **ж** माता अने पुत्रनो संवाद.
- मातानी हित-शिक्षा.
- अरणिकनुं फरी महाव्रत लेवुं.
- सिद्धगिरिराज पर जई अणसण.
- अरणिकनुं स्वर्ग-गमन.
- 🗯 कवि द्वारा संयम गुणनी अनुमोदना.

### अरणिकमुनि रास

विमल विमलमति दायका, समर्रु सारदमाईजी, गाउं अरणक मू(मु)निवरु, रसिक सू(सु)णउ चिति लाईजी. १

### ।।त्रूटक्।।

चिति लाय जेणि सहिउ परीसह, ऊहन अग्नि खिम आकर्उ, पहिलूं ते सिथिल थयउ प्रमादइं, चारित्रआवरणि धरिउ. २ तस चरित आखउं बुधिमा-जिन, प्रेम धरी सुखदाइका, अहो साधुनइ गुणइं रमउ रंगइं, विमल विमल मतिदायका. ३ तगरानगरी सोहामणी, रिद्धि-समृद्धि-विसालोजी, बासि विस विवहारीया, सूखीया अतिचउसालोजी. ४

#### ।।त्रु.।।

चउसाल तिहां किंग रहि सुंदर-दत्त सेठ मनोहरूं, तस सार रूपि भार्या भद्रा, ते नांमि सुखकरूं. ५ संसारनां सुख विलसतां लिह, पुत्र मनुहर कांमिणी, कुमर अरणक चतुर सहिजई, तगरांनगरी सोहांमिणी. ६ तिणि पुरि श्रीगुरू आवए, साधतणइं परिवारिंजी, दिसन देखवा अलिजया<sup>9</sup>, लोक सवे सुविचारिंजी. ७

#### 113(.11

सुविचार सेती दत्त गृहपति, जाइ मुनिनि वांदवा, सुभ भाव आंणी सुणी वांणी, थयउ कर्म निकंदिवा. ८ संवेगरंगइं नारि सुतसिउं, लीयइं चारित भाव ए, गुरूराज साथि विहार करतो, तिणि पुरि श्रीगुरू आव ए. ९ दत्त-मुनि करि गोचरी, लइं सुधउआहारोजी, दोष बइतालीस टालतउ, पालइं पंच आचारोजी. १०

ሄ६

#### 113.11

आचार पालइं सूत संभालइं, पुत्र ऊपरि प्रेम ए, मीठइं रे मेवइं आणि पोषइं, तीन वारसू खेम ए. ११ बहु सरस रस वि स्वादि व्यंजन, विहरी दीयइं खप करी, फासू रे पांणी जाणि देवइं, दत्त मुनि करि गोचरी. १२ इम पिता तस पोषए, दिन प्रति ऊत्तम रीतइंजी, भिक्षा काजि भली परि, साथि न तेडि प्रीतिइंजी. १३

#### 117.11

प्रीतिसिउं ते विधिउ सुभ परि, योवनवइं आविउं जिसइं, तव अणष(स) करि केई साधु तससिउं, किसिउं पोषइं नव रसइं. १४ ए तरुण तिन सब काजि समरथ, वृद्ध तात विपोष ए, दाखिण<sup>2</sup> लगइं निव कोई जंपि, इम पिता तस पोष ए. १५

### ।।दूहा।।

दत्तरिषीसर रोग विस, समाधिपणि करि काल, पुण्य लगई सुभ गति लिह, जिहां कणि सुख-चिरकाल. १६

#### ।।राग-मारूणी।। ।।इम को न जावि रे ए देसी।।

पिता मरण पामइं अरणकरिषि, अणुरति<sup>३</sup> करतो चित्तइंजी, हा! हा! पिता परलोकि सिधायउ, इम करवुं दुख पत्तइंजी. १७ तातजी आखउ रे कोई मतिपरपंच, सुभ गति भाखउ रे, इणि नवलइ जोवनवेसि, किम संजम पलसइं तुम पाखइं. १८

मुझसिउं कीधी वंच (आंकणी)

सरस कविल करी मुजनइं पोषिउं, बालपणा लगइं आजोजी, भिक्षा काजि न भमवा दीधउ, सारंता सवि काजजी. १९

तातजी आखउ रे कोई...

४७

### श्रुतसागर - २६

सीतलवचिन सीखामण देता, बपुर\*वचिन ऊल्हासिजी, ते गुण खण एक मझ निव वीसिर, सुखि रहितं तुम्ह पासिजी. २० तातजी आखंड रे कोई...

नेह लगाई गया विदेसि, ते दुख रिदय न मायोजी, खिणि-खिणि रोवि नेह धरीनइं, मुखि बोलितउ तायोजी. २१ तातजी आखउ रे कोई...

भद्रा कोमल-वचनइं पालइं, किसिउ धरि वच्छ ! दुखोजी, ए संसार असार जिणिइं कहिउ, संयमथी हुय सुखोजी. २२ तातजी आखउ रे कोई...

तेणि वचनइं गाढउं ऊवसमीयउ, रिह सदा गुरूचरणइंजी, भणइं गुणि आगम मनि भावइं, संयमधुर ऊद्धरणइंजी. २३ तातजी आखड रे कोई...

। राग-गोडी।। । रामचंदिक वाणि चंपउ मुरि रहिउरी-ए ढाल।।
एक दिनि भिक्षा काजि, साथि लीयु मुनि तांणी,
किसर्ज किर तव सोय, जउ क्षूधा पीडइं प्रांणी. २४
कोमलकाय प्रधान तव, अरणकमुनि निकसिउ,
ग्रीषम-दिन तिप सूर, तावड किर ते विकसिउं. २५
वाइ लूय अपार तिणि, तरसिउ थयउ ताथइं,
सूकइं रसना तालूं, अधरपल्लव तिणि साथइं. २७
वेणु जलइं जिउं अग्नि, पाऊ न मूंकिउ जाइ,
खिणि-खिणि थाइ सयर<sup>४</sup>, मीन् पडिउ थलदाइं. २८
साधु थिवर हुंता जेह, आगिइं वही गया खिणिम,
निव जोयुं फिर कांई, पाछिल मुनिनि तिणिमि. २९
मुनि अरणक तिणइ, धुपि संतापिउ इम चेतइ,
इिण मारिंग किम जायुं, चरण जिल सही रेति. ३०

<sup>\*</sup> उत्साहपूर्ण.

86

धन ! धन ! मोरो तात, जिणि एतादिन पालिउ, निव जाणिउ कोई दुख, बहु जतनइं संभालिउ. ३१ करता अणिख केई साध, ते वयरमुनि अब बालिउ, वसतिथी काढिउ आज, इणि वेला परजालिउ. ३२ शिन शिन भरतउ पाय, आइ वीसामो लीधउ, रिद्धमंत घरि उच्छांह, पामी कारिज सीधउ. ३३

#### ।।ढाल-४।। ।।रबारी के छोहरा फाग।।

तिणि समइं रमणी सेंट की, आई गउखि निहालि रे, सूंदर मुनि देखि खंडउ, कांमि करी चित चालइ रे. ३४ मनमोहिउ मुनि देखिनइं, रूपि रतिपति जाणुं रे, रंग लागउ तिणिसिउं भलउ, ए ए कांम वित्राणुं रे. ३५

मनमोहिउ मुनि...

निज दासी तेडी करी, चतुरपणइं सीखाई रे, जाइ मुनि तेडु ईहां, होवि प्रीति सवाई रे. ३६

मनमोहिउ मृनि...

गई दासी ऊतावली, आणिउ मुनि घरमांहि रे, पडिलाभइं ललनां तदा, मोदक अधिक ऊछांहि" रे. ३७

मनमोहिउ मुनि...

देई दानसु मनपूरइं, लोचन मांडी निरखि रे, भाव जणावि आपणउ, मुनि देखी दिल हरखि रे. ३८

मनमोहिउ मुनि...

वनिता करि भली वीनती, आगइ रही करजो रे, काहु करउ तप दोहिलउ, जोविनवइं एह खोडिं° रे. ३९

मनमोहिख मुनि...

रहउ इणि मंदिरि मुनिवरू, भोगवो उत्तम-भोगा रे, जोवि(व)न लाहउ लीजीयइ, हम-तुम भला संजोगा रे. ४०

मनमोहिख मुनि...

### श्रुतसागर - २६

४९

हम पित रहिउ बिदेस ति, छोरी नेह का पासा रे, रहुं एकेली भुवनमइं, पूरि(रो) हमारी आसा रे. ४१

मनमोहिउ मुनि...

एहु कथन ऊवेखउ मा, देखु हु चिति विचारी रे, तन-धन ए सब ताहरउ, जाऊंगी बलिहारी रे. ४२

मनमोहिउ मुनि...

सूणी सराग ब(व)चिन तिस्यां, काचउ कुंभ जिउं भीनो रे, अगनि द्रढ रहि मीण किसिउं, बोल भलउ मुनि दीनो रे. ४३

मनमोहिउ मुनि...

थयु ऊसन्नज<sup>8</sup> व्रत छोरी, लाजकाणि सवि भागी रे, मोहनगरीवासी मुनइं, पुण्यदिसी इसी जागी रे. ४४

मनमोहिउ मुनि...

गीत-विनोद-कथारसि, भोगवि भोग सुरंगा रे, विगति<sup>®</sup> लिह नवि दिवस की, खेलई बसंत सुचंगा रे. ४५

मनमोहिउ मुनि...

कस्तूरी कुरु-कूमकूमां, केसर-चंदन-केलि रे, नाखइं पिचरिक<sup>55</sup> भरि-भरी, ऊडइं गुलालसु मेलि रे. ४६

मनमोहिउ मुनि...

ग्रीषमरित गुण गुरवइं १, प्रीणइं प्रीति प्रधान रे, खेलि खडोखली जल भरी, कुसुम सेजि सुविधान रे. ४७

मनमोहिउ मुनि...

वरिषा वनिता परिसेवइं, राजइं केकीनादो<sup>क</sup> रे, विरह गयंउ घन गाजतइं, नेहिं किसिउ हटवादो रे. ४८

मनमोहिउ मनि...

तुरत हेमालउ<sup>98</sup> हरखसिउं, सेवइं कुमर जूवानो रे, नांही रहि थिर चिति करी, उस कहि सुनिदांनो रे. ४९

मनमोहिउ मुनि...

ዓቀ

मार्च - २०१३

।।ढाल-पांचमी।। ।।राग-टोडी।। ।।धन्यासिरी-एहनी देसी।।

पाछिल खबरि करी घणी रे, साधई न दीठउ सोय, पइंठउ एकांति घरि जई रे, कहू तस सुधि किम होयो रे. ५० अरणक चींतवई हा! हा!, कूण कीधूं काजो रे, संयम छोडीयं लागी, कुलमई लाजो रे. ५१

अरणक चींतवइं... (आंकणी)

सु(शु)िद्ध विना भद्रा तदा रे, दुख धरती दिन राति, अरणक-अरणक मूखि जपइ रे, जोती फिरइं तिणि धाति रे. ५२ अरणक चींतवइं...

सुतवियोगि गहिली<sup>94</sup> थई रे, दीसि अंग विपरीत, कर्म तणी पाडूई<sup>96</sup> रे, जीव न चेति विदीतो रे. ५३

अरणक चींतवइं...

बालक जे जे नाहनडा रे, देखी रूप-सरूप, जाई कहि मुगधपणइं रे, ए मुझ सूत अनूपो रे. ५४

अरणक चींतवइं...

विधि वसि विपरीत देखिनइ रे, हासी करि सविलोक, नवि जांणि भोला इसिउ रे, करमबंधन फल रोको रे. ५५

अरणक चींतवइं...

बहु कालि आवी तिस्यइं रे, तिणि आवासनिं हेठि, गोखि बिठां **अरणिक** इसी रे, दीठी जननी द्रेठी<sup>९७</sup> रे. ५६

अरणक चींतवडं...

मुझ विजोगि गहिलीई रे, मात किसो करइ एम, एह अकारिज मि करिउ रे, कष्टि<sup>९८</sup> पडी लहुं प्रेमइं रे. ५७ अरणक चींतवडं...

रयणिवंतामणि व्रत भलूं रे, हारिछं काचनि काजि, काया पोष करि इसिछ रे, मलिन करिछ जीव साजि रे. ५८

अरणक चींतवइं...

### श्रुतसागर - २६

49

हा! गुरू सीख न मइं वही रे, नवि पालिउ आचार, दिन गया अकीयारथा रे, करि पछतावु कुमारो रे. ५९

अरणक चींतवइं...

### ।।ढाल-छद्दी।। ।।ऊच्छरपणीनी।।

तुरत ऊतिरेउ गुखथी<sup>१९</sup> अरणक, मातिन चरणे लागोजी, दया लगईं लोचिन जल-भरतउ, मोहनो बंधन भागोजी. ६० गद-गद वांणी जंपि एणी परि, ते हुं अरणक मायाजी, तुज ऊदवेग करिउ एतादिनि, हिव मुज करहु पसायाजी. ६० नेह सलूणे<sup>२०</sup> नयणे निरिखउ, भद्राईं निज-पुत्तोजी, आलिंगिउ हीयडइ अति-भीडी, जिंग उपाहनो तुरतोजी. ६२ ठांमि आविउं चित खिणमि हरखि, बोलि माता प्रेमिंजी, भिले मिलिउ तुं पुत्र अनोपम, एता दिनि रहिउ केमइंजी. ६३ कही अरणिक तव वात आपणी, भोग-सरूप विचारजी, फिरि कही माता निसुणउ जाया, आदरउं संयमभारजी. ६४ व्रतथी चूकउ दिन एतालिंग, विषय कलिंग अविचारइंजी, विण चारित्रि वच्छ! परिभवि पांमिसि, दुक्ख अधिक संसारइंजी. ६५

।।ढाल।। ।।वीर वरवाणी रांणी चलणाजी ए देसी।।
मात सुणउ अरणक कहिजी, निव पिल मइं व्रत एह,
तुं कहितउ अणसण ग्रहिउंजी, व्रतभंगि जीविउं सिउं देहि. ६६
मात सुणउ अरणक...(आंकणी)

अगनिपरवेस भलंज जीवनिजी, व्रतं निव खंडयई जांणि, विष थकी विषय विरूआ<sup>ल</sup> कह्याजी, ए अरिहंतनी वांणि. ६७ मात सुणंज अरणक...

मातजी जे कहउ ते तिसिउंजी, सीलभंगि हीला साच, लाज आवि पणि मझ हविजी, मुनि रहितां सुण उवाच. ६८

मात सुणंड अरणक...

जणु(ण)णी किह विधिए भलीजी, आवंउ हवि मुझ साथि, सीख लही रमणी तणीजी, जई लीयइ दीख गुरूहाथि. ६९ मात सुणंउ अरणक...

सिद्धगिरि चिंड अणसण लीयुं रे, ऊच्चरी महाव्रतभार, पाप आलोयां लागां जिस्यांजी, खामीय जीव सिव-सार. ७० मात सुणउ अरणक...

सिला तल पुंजी ओघिं करी, सयन करिंउ ग्रीषमकालि, मांखण परि वीथरिंउ<sup>२२</sup> तिस्यइंजी, भनरभोगी सूकमाल. ७१

मात सुणउ अरणक...

ध्यानबलि काल करी अवतरिउजी, सोहमसूर खिणमांहि, भोगवि पुण्यफल प्रगडांजी, अरणक साध उच्छांहि. ७२

मात सुणउ अरणक...

#### ।।ढाल-८।। ।।राग-धन्यासी।।

धन-धन अरणक मुनिवर जाणीयइं, सावउ साहसधीरोजी, ऊन्ह परीसह दुक्कर ऊद्धिरिउ, कर्मखपावा वीरोजी. ७३ धन-धन अरणक...

भद्रा साहुणि अणसण आराधी, पुहती स्वर्गविमानिजी, तारिउ निज-सूतनि प्रतिबोध दे, सुखी कीधउ सुनिंदानइंजी. ७४ धन-धन अरणक...

एणि परि संयम गुणि चित लाईयइं, पालीजि(जी) सुभ सीलोजी, परीसह सहीइं थिर मनि सर्वदा, जिम पामी जइं लीलोजी. ७५ धन-धन अरणक...

श्रीअंचलगच्छि कमलदे(दि)वाकरूं, जंगम जूगपरधांनोजी, श्रीकल्याणसागरसूरीश्वर चिर जयु, दिनि-दिनि अधिकि वानोजी. ७६ धन-धन अरणक...

43

### श्रुतसागर - २६

तस पिख वाचक चतुरशिरोमणी, विवेकशेखरगणिचंदोजी, तस शिष्य विजयसे(शे)खर एणी परि, कहि अरणकचरित आणंदोजी. ७७ धन-धन अरणक...

भणउ सुणउ चतुरनर भावसिउ, साध तणा गुण रंगइजी, सफल जंवारउ<sup>३</sup> थाय तेहनउ, पांमइ सुख सही अंगइंजी. ७८

धन-धन अरणक...

## ।।इति श्रीअरणकमुनि रास संपूर्ण।।

# शब्दार्थ

#### सागरचंद रास

9. सहाय, २. प्रगट, ३. रिसक, ४. कमळ, ५. आनंद पामवुं, ६. आश्चर्य, ७. कौतुक, ८. जल्दी, ९. सत्वहीन, १०. चितामां प्रवेशी बळी मरवुं, ११. भाग्य, १२. विमासण, १३. साथे, १४. स्थान, १५. क्रीडा, रमत, १६. कहेवुं, १७. दाव, १८. दानादि सुकृत कार्य, १९. समारंभ, आनंदोत्सव, २०. सुंदर स्त्री, २१. शरणाइ, २२. उत्तम, २३. मोढुं उतरी जवुं, २४. सैन्य, २५. ठपको, २६. सहन करे, २७. कलंक, २८. समजाववुं, २९. चूप, खामोश, ३०. बाण, ३१. भाग्यवान, ३२. खराब, ३३. [घात?], ३४. झरूखो, ३५. नठारा, ३६. वच्चे-वच्चे, ३७. स्मशान, ३८. चिता, ३९. प्रसिद्ध, ४०. प्रयुर [पुण्यप्रचुर], ४१. शत्रु

## अरणिकमुनि रास

उत्साहपूर्वक, २. दाक्षिण्य, ३. आसक्ति, ४. शरीर, ५. माछली, ६. रोष,
 उत्साह, ८. खोड, ९. भ्रष्ट [ओसन्न], १०. ख्याल न रहेवुं,
 ११. पिचकारी, १२. गौरव, १३. केकारव, १४. शियाळो, १५. घेली, १६. अशुभ,
 १७. नजर, दृष्टि, १८. दुःखमां, १९. झरूखो, २०. सुंदर, २१. विरूप, २२. विरतार, २३. जन्म, अवतार.

## કેટલીક ઐતિહાસિક લઘુ-કૃતિઓનો સાર

ලිදුග දෝන්

ઐતિહાસિક ફતિઓની શોધમાં કેટલીક લઘુ ફતિઓ મળી આવી, સંપૂર્ણ ફિતિને પ્રકાશિત કરવા માટે સમય ઘણો માંગી લે, પ્રાયઃ આવી લઘુ ફિતિઓમાં નાયકશ્રીઓના ગુણાલેખન, એમની ચારિત્ર-પાલનની સજ્જતા, સ્વાધ્યાય-રૂચિ, તેમજ તત્કાલીન શાસક અને સંઘ ઉપર પડેલા પ્રભાવનું વર્ણન મળી આવતું હોય છે. એ વર્ણનની સાથે-સાથે એમનાં માતા-પિતાનું નામ, જન્મ-સ્થાન, દીક્ષા, પદારોહણ, જેવી કેટલીક ઐતિહાસિક નોંધ મળી આવતી હોય છે. ફિતિમાં આવી ઐતિહાસિક-નોંધ ફિતિના સાર રૂપે અહીં રજુ કરી છે.

## અક્ષયચંદ્રસૂરિ ભાસ', ગાથા - ૯, કર્તા- અજ્ઞાત.

આ કૃતિ અનુસાર એમના પિતાનું નામ સાહ સહસમલ હતું. આગળની પાંચ ગાથાઓમાં આચાર્ય મહારાજના ગુણોનું વર્ણન મળે છે. વર્ણનમાં મુખ દીઠે સુખ ઉપજે, અને ગુણના દરિયા, જ્ઞાને ભરીયા જેવી પ્રાયઃ પ્રચલિત ઉક્તિઓનો કવિએ ઉપયોગ કર્યો છે. રતલામનો સંધ અક્ષયચંદ્રસૂરિ મ. સા. ને ચાતુર્માસ માટે વિનંતી કરે છે. એ વિનંતિને સ્વીકારી આચાર્ય મહારાજ વિ. સં. ૧૭૬૧ નું ચોમાસું રતલામમાં કરે છે. શક્યતા છે, કે આ ભાસની રચના રતલામમાં થઈ હોય...

## અક્ષયચંદ્રસૂરિ ભાસ', ગાથા - ૭, અજ્ઞાત.

કૃતિ અનુસાર એમના પિતાનું નામ સાહ સહસમલ્લ અને માતાનું નામ સંપૂરદે હતું. ખંભાતના સોની તિલકસીએ વિ. સં. ૧૭૫૦ના જેઠ સુદ ૧૦ના ખંભાતમાં આચાર્ય અક્ષયચંદ્રસૂરિ મ. સા.ના પદ મહોત્સવનો લાભ લીધો હતો. આ કૃતિમાં પ્રધાનરૂપે ગુણવર્શન મળે છે.

## પાસચંદ્રસૂરિ ભાસ', ગાથા - ૭ કર્તા - મુનિ ખુશાલ.

ભાસમાં જણાવ્યા અનુસાર મરુધરના હમીરપુરમાં રહેતા પોરવાડ જ્ઞાતીય સા. વેલાના પત્ની વિમલાદેની કુખે એમનો જન્મ થયો, સં. ૧૫૪૭માં એમણે સાધુરત્ન પાસે દીક્ષા લીધી, અને સં. ૧૫૭૫ માં એમણે ક્રિયોદ્ધાર કર્યો, દેવની સહાયથી વરસાદ વરસાવી જિનશાસનની પ્રભાવના કરી. (આચાર્ય પાર્શ્યદ્રસૂરિ श्रुतसागर - २६ ५५

મ. સા.નો જન્મ વિ. સં. ૧૫૩૭ માં થયો હતો. અને સં. ૧૫૭૫ માં એમણે નાગોરમાં ઉપાધ્યાય પદ, અને વિ. સં. ૧૫૯૯માં ભટ્ટારક પદ પ્રાપ્ત કર્યું હતું. એમણે તંદુલવૈચારિક પયન્ના, પ્રશ્નવ્યાકરણ, સૂત્રકૃતાંગ, તેમજ જંબૂચરિત્ર પર બાલાવબોધની રચના કરી હતી. એમનો સ્વર્ગવાસ વિ. સં. ૧૬૧૨ના માગશર મહિનામાં જોધપુરમાં થયો હતો. એમનાથી વિ. સં. ૧૫૭૨માં પાયચંદ મત નીકળ્યો.)

## શુભવર્ધનગણિ નિર્વાણ ગીત<sup>ર</sup>, ગાથા - ૧૫, કર્તા - અજ્ઞાત.

ગીતમાં જણાવ્યા અનુસાર શુભવર્ધન ગણિને છ વિગઈનો સંપૂર્ણ ત્યાગ હતો, એમના જીવનકાળ દરમ્યાન એમણે બત્રીશ હજાર નવા ગ્રંથોની રચના કરી. એમનો કાળધર્મ વિ. સં. ૧૫૬૬ના ચૈત્ર શુદિ-ર ના સોમવારે કુણગિરિ (કુણઘેર)માં થયું હતું. નિર્વાણ-ગીતમાં કવિ શુભવર્ધનગણિના કાળ-પ્રસંગે વાતાવરણની ગમ-ગીનીને ૧૨મી ગાથામાં આ રીતે જણાવે છે.

પંથીડા પૂછઇ નગર નિવાસીને, ઇહા હાટડે કાઇ હટતાલ, શ્રીશુભવર્ધન ગરુઆ–ગુરુ તણઉ, તેહનુ પહુતઉ હો કાલ.

## રાજસાગરસૂરિ નિર્વાણમહોત્સવ સજઝાય³, ગાથા-૧પ, કર્તા-રત્નસાગર.

ગુજરાતના સીહપુર(પ્રાય: આજનું સિદ્ધપુર) માં રહેતા ઓશવંશીય સા.દેવીદાસના પત્ની કોડાઈની કુખે વિ. સં. ૧૯૩૮ના ફાગણ સુદિ બીજના દિવસે એમનો જન્મ થયો, વિ. સં. ૧૯૫૧માં એમણે દીક્ષા લીધી, વિ. સં. ૧૯૮૬ના જેઠ સુદિ-૧૪ શનિવારે અમદાવાદના મહાવીર સ્વામીના દેરાસરમાં ગચ્છનાયક પદે બિરાજિત થયા, આચાર્ય રાજસાગરસૂરિ મ. સા. ના ઉપદેશથી શેઠ શાંતિદાસે સાતેય ક્ષેત્રમાં ધન વાપરી જિનશાસનની અનેરી પ્રભાવના કરી.

વિ. સં. ૧૭૨૦ના ભાદરવા સુદિ-૭ ના દિવસે અમદાવાદમાં એમનો સ્વર્ગવાસ થયો. શેઠ શાંતિદાસના પરિવાર-જનો સહિત અમદાવાદના શ્રીસંધે આચાર્ય ભગવંતના નિર્વાણ નિમિત્તે આઠ દિવસનો મહોત્સવ કર્યો, આ કૃતિમાં વિ. સં. ૧૬૮૬ના જેઠ મહિનામાં આચાર્ય રાજસાગરસૂરિ મ. સા. ને ગચ્છનાયક પદની સ્થાપનાનો ઉલ્લેખ મળે છે. જ્યારે તિલકસાગરકૃત રાજસાગરસૂરિ રાસમાં આજ સમયે આચાર્ય પદ પ્રાપ્ત થયાની નોંધ મળે છે.\*

<sup>\*</sup> જૈન ઐતિહાસિક ગૂર્જર કાવ્ય સંથય પેજ નં. ૫૦, તિલકસાગરકૃત રાજસાગરસૂરિ નિર્વાણરાસ, ઢાળ-૫, કડી-૩થી૭

५६

मार्च - २०१३

## વિશાલસોમસૂરિ ગુરુ-ગુણ ભાસ<sup>૪</sup>, ગાથા - ૯, કર્તા - હર્ષવિમલ.

ભાસમાં જણાવ્યા અનુસાર વિશાલસોમસૂરિ સાહ સંતોષીની પત્ની નારંગદેની કુક્ષિએ જન્મ્યાં, વિરાટનગર એમનું જન્મ-સ્થાન, અને સંસારી અવસ્થાનું નામ વીસરામ હતું. વિશાલસોમસૂરિએ બાલ્યવયમાં વિમલસોમસૂરિ પાસે દીક્ષા ગ્રહણ કરી, વિશુદ્ધ કોટિનું ચારિત્ર પાળ્યું. ઈડરમાં પંડિત વિશાલસોમને આચાર્ય પદ આપવામાં આવ્યું, ઈડરના સાહ સહિસમલ્લે પદ સ્થાપનાનો મહોત્સવ કર્યો.

(વિક્રમ સંવત ૧૭૦૮માં આસો સુદ-૧ના શુક્રવારે જગાણા ગામે આચાર્ય વિશાલસોમસૂરિ મ. સા. ની નિશ્રામાં સંઘમાણિક્યવિજયે પોતાના શિષ્ય સુમદ્રમાણિક્ય અને રાજમાણિક્યના પઠન માટે ભગવતીસૂત્રની પ્રત લખી, તેમજ વટપદ્રનગરમાં વિ. સં. ૧૭૪૯માં કાર્તિક વદ-૧૦ને બુધવારે વિશાલસોમસૂરિ મ. સા.ના શિષ્ય પં. સિદ્ધસોમ ગણિના અધ્યયન માટે મુનિ રામવિજયે જ્ઞાતાધર્મકથાંગસૂત્રની પ્રત લખી.)

## વિજયધર્મસૂરિ ભાસ<sup>પ</sup>, ગાથા - ૧૧, કર્તા - મોહન.

ભાસ અનુસાર તેઓશ્રીનો જન્મ મેવાડના રૂપનગરમાં રહેતા ઓશવાલ વંશીય પ્રેમચંદ સુરાણાની પત્ની પાટમદેની કુખે થયો, વિજયધર્મસૂરિ તપાગચ્છમાં વિજયપ્રભસૂરિ મ. સા. ની પરંપરામાં વિજયદયા સૂરિ મ. સા. ની પાટે પધાર્યા, એમણે ભુજના રાજાને પ્રતિબોધ પમાડી, મદ્ય-માંસાદિ ત્યાગ કરાવી, જિન-ધર્માનુરાગી બનાવ્યો હતો. (ભટ્ટારક વિજયદયાસૂરિએ વિ. સં. ૧૮૦૩ના માગશર સુદ પાંચમના દિવસે ઉદયપુરમાં આચાર્ય પદવી આપી, વિ. સં. ૧૮૦૯માં મારવાડના કાછોલી ગામમાં તેમને ગચ્છનાયક પદે સ્થાપ્યા.)

## વિજયાણંદસૂરિ ભાસ<sup>ક</sup>, ગાથા - ૯, કર્તા - ઋદ્ધિવિજય.

ભાસ અનુસાર મારવાડમાં આવેલા રોહ ગામમાં વિ. સં. ૧૬૪૨માં પોરવાડ જ્ઞાતીય સા. શ્રીવંતની પત્ની સિણગારદે કે સાંણગારદેની કુક્ષિએ એમનો જન્મ થયો, તેમનું મૂળ નામ કલો હતું, તેમણે વિ. સં. ૧૬૫૧માં માતા-પિતા, ચાર ભાઈ તેમજ ફોઈ-બા સેંજબાઈ સાથે જગદ્ગુરુ આચાર્યશ્રી વિજયહીરસૂરીશ્વરજી મ. સા. દીક્ષા આપી, દીક્ષા બાદ એમનું નામ મુનિ કમલવિજયજી રાખ્યું, અને એમને શ્રી સોમવિજયજી મ. સા.ના શિષ્ય બનાવ્યા.

મુનિ કમલવિજયજીને વિ. સં. ૧૬૭૦માં આચાર્ય વિજયસેનસૂરિએ પંડિત પદ આપ્યું, અને વિ. સં. ૧૬૭૬ના પોષ સુદિ ૧૩ના દિવસે વિજયતિલકસુરિએ

### श्रुतसागर - २६

40

સિરોહીમાં આચાર્ય પદ આપી, તેમનું વિજયાણંદ(વિજયાનંદ)સૂરિ નામ પાડવામાં આવ્યું, આચાર્ય મહારાજના પદ મહોત્સવનો લાભ સંઘવી મેઘાજલે લીધો, મહોત્સવમાં સંઘવી મેઘાજલે દરેક ઘરે પીરોજીની પ્રભાવના કરી, ભટ્ટારક વિજયાણંદસૂરિ મહારાજ વિ. સં. ૧૬૧૧ના આષાઢ વિદ ૧ના મંગળવારે પ્રાતઃ કાળે ખંભાતમાં સ્વર્ગવાસી થયાં.

### શીલવિજય ગણિ નિર્વાણ ભાસ<sup>®</sup>, ગાથા - ૧૭, કર્તા - કલ્યાણચંદ.

ઓશવાલ વંશીય નાહર ગોત્રીય સાહ ઉદાના પત્ની ઉછરંગદેની કુખે એમનો જન્મ થયો હતો, ગણિ મેઘવિજયની પ્રેરણાથી વિ. સં. ૧૬૩૬માં શ્રી વિજયહીરસૂરિ મહારાજ પાસે બાળ વયે ચારિત્ર ત્રહણ કર્યું, અને એમને ઉદ્યોતવિજયજીના શિષ્ય બનાવ્યા, દીક્ષા લીધા બાદ આચાર્ય વિજયસેન્સૂરિ મહારાજ પાસે વિશિષ્ટ તપ સાથે યોગ ક્રિયાદિનું આરાધન કર્યું, આચાર્ય વિજયસેનસૂરિ મહારાજે એમને પંડિત પદ આપ્યું, અનુક્રમે વિહાર કરતા એ મહાપુરુષને આયુષ્યની અવધિનો અણસાર આવી જતાં સકળ જીવ-રાશી સાથે મિથ્યા-દુષ્કૃત કરી, ગુરુભગવંતના શ્રીમુખે અણસણ આદર્યું, અંતે, વીરમપુર નગરમાં વિ. સં. ૧૬૪૬ના ચૈત્ર વિદ - ૬ ના દિવસે એમનું નિર્વાણ થયું,

### પ્રત-વિગત

- ૧. પ્રત નંબર :- ૪૩૭૦૭ પત્રના અંતે શ્રાવિકા રાજી પઠનાર્થ આવો ઉલ્લેખ મળે છે.
- ૨. પ્રત નંબર :- ૪૪૧૮૫
- ૩. પ્રત નંબર :- ૫૧૭૪૧
- ૪. પ્રત નંબર :- ૫૧૦૬૫
- ૫. પ્રત નંબર :- ૨૯૮૪૦
- ક. પ્રત <mark>ન</mark>ંબર :- ૨૮૩૯૬
- ૭. પ્રત નંબર :- ૩૦૬૫૯



## भारतीय प्राचीन विद्यापीठों की संस्कृति और चीनी यात्री

डॉ. उत्तमसिंह

प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा भारत आने वाले चीनी यात्रियों का रहा है। जबसे चीनवालों को बौद्ध धर्म का उपदेश मिला तबसे चीन के यात्री भारतवर्ष की ओर तीर्थयात्रा करने आते रहे। इन यात्रियों में फाहियान, हवेनसांग (सुयेनच्वांग) एवं इत्सिंग के नाम प्रमुख हैं। इनके अलावा और भी कई चीनी यात्री समय-समय पर भारत आते रहे हैं। यहाँ प्रमुखरूप से फाहियान, हवेनसांग एवं इत्सिंग के यात्रा-विवरण तथा उनके द्वारा वर्णित तत्कालीन परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है। फाहियान गुप्तकाल में भारत आया तथा हवेनसांग सम्राट् हर्ष के समय में। इनके बाद लगभग तीन सौ वर्षों के अन्तराल में इत्सिंग एवं कुछ अन्य यात्री भी भारत की यात्रा पर आये।

इसमें संदेह नहीं कि धर्म की पिपासा बड़ी प्रबल होती है, वह अर्थ की पिपासा से, 'जिससे प्रेरित होकर आजकल लोग एक देश से दूसरे देश में व्यापार के उद्देश्य से जाते हैं' कहीं प्रबल होती है। जिस समय ये लोग भारत आये उस समय मार्ग अत्यन्त भयावह और अनेक कण्टकों से पूर्ण होते थे। इन दुर्गम मार्गों को पार करना कोई सरल काम नहीं था। वे यहाँ किसी सुख विशेष के लाभ के लिए नहीं आये। उनके अन्तःकरण में तो केवल धर्म का पवित्र भाव था। और इसी पवित्र भावना के बल पर भयावह दुर्गम मार्ग की कठिनाईयों को झेलते हुए यहाँ तक पहुँचे जो अलौलिक और प्रशंसनीय साहस का उदाहरण है। दोनों देशों के बीच मधुर और उदात्त सम्बन्धों को बयाँ करने वाली यह यात्री-कथा जैसी सूचक है वैसी ही यह भारतीय संस्कृति की सात्त्विक और उच्चस्तरीय भूमिका की भी द्योतक है। बौद्ध-धर्मावलम्बी चीन के लिए भगवान बृद्ध का जन्मस्थान 'भारतवर्ष' परम तीर्थ के समान था। चीनी यात्रियों का मानना था कि जब तक भारत में बौद्ध धर्मावलम्बी राजाओं का शासन है तब तक ही उन्हें भारत में अच्छी स्विधाएँ मिलने की संभावना है। इसके बाद हिन्दू धर्मावलम्बी शासकों के राज में शायद उतना सहयोग और सुविधाएँ न मिलें। किन्तु गुप्तकाल में फाहियान जब भारत आया तो उसने महसूस किया कि हिन्दू धर्मावलम्बी राजा भी चीनी यात्रियों को सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं और आदर-सत्कार भी पहले जैसा ही करते हैं। भारत में तो सर्वधर्म के साधुओं को सर्वकाल में भाव-भरा आदर-सत्कार मिलता रहा है। यहाँ आनेवाले यात्रियों के साथ वर्ण, देश, गोत्र या धर्म सम्बन्धी किसी प्रकार का भेद-भाव कभी नहीं हुआ। यहाँ तो सर्वधर्म समभाव की भावना जन्म-जन्मान्तर से चली आ रही है। यहाँ के वासियों का ध्येय ही 'सर्वे भवन्तु सखिनः सर्वे सन्तु निरामया' रहा है।

श्रुतसागर - २६ ५९

#### चीनी यात्रियों का ध्येय :

चीनी यात्रियों के प्रमुख ध्येय थे- तथागत भगवान बुद्ध की जन्मस्थली के दर्शन करके पवित्र-पावन होना। भगवान बुद्ध के उपदेश जिस भाषा में संगृहीत थे उस भाषा का अध्ययन करना। बौद्ध ग्रन्थों की प्रतिलिपि तैयार करके तथा मूल ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों का संग्रह करके उन ग्रन्थों एवं बौद्ध प्रतिमा आदि जो भी धार्मिक सामग्री मिले उसे अपने साथ लेकर जाना।

इन वस्तुओं का संग्रह करके ले जाने का मूल उद्देश्य इन यात्रियों का अपने देशवासियों के लिए था। इनकी प्रसन्नता तो इस कार्य की सिद्धि में ही समाई हुई थी। परन्तु यह कार्य इतना सरल भी नहीं था। चीन से भारत तक चलकर आना जीवन-मरण का खेल था। धधकते रेतीले रास्ते, भयानक जंगल, पथरीले रास्ते और हिमाच्छादित दुर्गम गिरि-शिखरों को पार करना कोई साधारण काम नहीं था। भयानक जंगलों में बसने वाले हिंसक प्राणियों का सामना करने की हिम्मत और शक्ति जिसमें हो वही महात्मा इस दुर्गम सफर को तय करने का साहस जुटा सकता था। भारत आनेवाले ये चीनी यात्री ऐसे ही महात्मा थे। इनके पुरुषार्थ से संपूर्ण विश्व के इतिहास का वास्तविक गौरव बढ़ा है। ईसा की चौथी से सातवीं सदी के बीच ऐसे अनेक चीनी यात्री हिन्दुस्तान आये। इनमें से कितने ही यात्री इस भव्य साहस में अपने प्राणों की आहूति देकर धर्मवीरों के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करा चुके हैं। जो प्रमुख विद्वान् भारत पहुँचे उनके विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ निम्नोक्त हैं:

### फाहियान :

ई. सन् ३९९ में छह साथियों के साथ बौद्ध ग्रन्थ विनयपिटक की खोज में फाहियान भारत की यात्रा पर निकला। इसने चीन के चांगगान नामक स्थान से यात्रा आरम्भ की। निरन्तर प्रवास के बाद समुद्री एवं रेगिस्तानी दुर्गम रास्तों को पार करते हुए कठिन यात्रा पूरी कर यह मित्र-मण्डली पेशावर पहुँची। परन्तु यह मित्र-मण्डली प्राकृतिक प्रकोपों से अखण्डित न रह सकी। पेशावर पहुँचने से पहले ही इस दल का एक यात्री बर्फील तूफान में मारा गया; तीन यात्री वापस चीन लौट गये। फाहियान और उसका एक साथी सहित छह में से सिर्फ ये दो लोग ही भारत तक पहुँचने में सफल हुए। फाहियान भयावह मरुस्थल यात्रा का वर्णन करते हुए लिखता है कि-मरुभूमि में भयंकर राक्षस फिरा करते हैं, गर्म हवा चलती है। वहाँ जाकर, उनसे कोई बचकर नहीं आता! न ऊपर कोई चिडिया उडती है और न नीचे कोई जीव-जन्तु ही दिखाई पडता है! आँख उठाकर जिधर

६० भार्च - २०१३

देखो चारों ओर रेत ही रेत! वीरान और सुनसान भूमि! कहाँ जायें कोई मार्ग नहीं सूझता! बहुत ध्यान देने पर भी कोई मार्ग नहीं मिलता! हाँ मुदौं की सूखी हिड्डियों के अवशेष जरूर दिखाई पडते हैं!

फाहियान ने अपने यात्रा विवरण में मथुरा पहुँचकर वहाँ से भारत का वर्णन करने की शुरूआत की है। वह पाटलीपुत्र भी गया। सम्राट अशोक के महल को देखकर वह अत्यन्त चिकत हुआ। विदित हो कि सम्राट अशोक ने किलंग के युद्ध में हुई हिंसा से द्रवित होकर बौद्ध-धर्म अंगीकार कर लिया था। उसने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघिमत्रा सिहत कई विद्वान् भिक्षुओं को बौद्ध-धर्म-दर्शन एवं अहिंसा के प्रचारार्थ लंका, वर्मा तथा चीन सिहत कई देशों तक भेजा था। फाहियान ने तत्कालीन परिस्थितियों का जो वर्णन किया है उसके आधार पर गुप्तकालीन लोकस्थिति एवं विविध परम्पराओं का बोध प्राप्त होता है। इन जानकारियों से हमें एक अति समृद्ध, सुखी और नीतिमान भारत का चित्रण मिलता है। मृत्यु-दण्ड की सजा का अभाव, मिदरा एवं अन्य मादक पदार्थों के सेवन का निषेध, गुरुकुलों में बटुकों द्वारा शास्त्र एवं शस्त्र-विद्या का संयुक्त अभ्यास। आज अत्यन्त सभ्य गिने जाने वाले राष्ट्रों के लिए भी अशक्य माने जानेवाले आदर्श भारत ने गुप्तकाल में ही प्रसिद्ध करके दिखा दिये थे। इस हकीकत का फाहियान ने मुक्त कण्ड से वर्णन किया है। तत्कालीन भारत में अतिथि-सत्कार एवं भारतीय शिक्षा-पद्धती का वर्णन करते हुए फाहियान कहता है:

अहा! भारत में शिक्षा के लिए कितनी सुन्दर व्यवस्था है! गुरु और शिष्यों का सम्बन्ध विश्व-भर के लिए आदर्श है। विद्यार्थी चाहे राजा का लड़का हो अथवा भिखारी का, सबको अध्यापक अपने पुत्र के समान रखता और पढ़ाता है। गुरु उन्हें रात-दिन अपने नियन्त्रण में रखकर उनके जीवन को अत्यन्त उन्नत बना देता है। हमें सब तरह से भारत का अनुकरण करना चाहिए। वह चीन से सर्वथा श्रेष्ठ है। वह अनुकरणीय है और हमारे लिए आदर्श है। जब मैं स्वदेश में था, तब अपने को विनय का पूर्ण ज्ञाता समझता था; किन्तु भारत में आकर मैंने इस विषय में अपने-आप को कोरा अनिम्ज्ञ पाया। आह! यदि मैं भारत न आता तो, शुद्ध रीति और अपनी अनभिज्ञता दूर करने का अवसर कब पाता।

यद्यपि मुझे आते और जाते, दोनों समय भयंकर लुटेरे-दल का सामना करना पड़ा। और मेरी जान भी खतरे में थी, फिर भी भारत विश्व-भर में दर्शनीय और रहने योग्य स्थान है। यदि जन्मभर मनुष्य अध्ययन करना चाहे, तब भी वहाँ की शिक्षा का पार न पावेगा। वहाँ के विहार, विश्वविद्यालय, ग्रन्थालय, चैल्य आदि देखकर ही अनुभव किये जा सकते हैं। वहाँ का समाज अत्यन्त प्रिय मालूम श्रुतसागर - २६ ६१

होता है। विदेशियों का ज़ितना आदर-सत्कार वहाँ होता है, उतना इस भूखण्ड में शायद ही कहीं होता हो! वहाँ की उर्वर और समतल भूमि, पहाडी उपत्यका, वनप्रान्त एवं खेतों में लहलाती फसलों को देखकर आँखें अघातीं नहीं। बारी-बारी से सुन्दर ऋतु-परिवर्तन तो वहाँ की अलौकिक ईश्वरीय देन है। मारतवर्ष का वर्णन कहाँ तक करूँ वह तो केवल देखकर ही अनुभव किया जा सकता है। हवेनसांग:

फाहियान से दो सौ वर्ष बाद एक और विख्यात चीनी यात्री भारत आया, जिसका नाम था ह्वेनसांग। यह चीन देश का एक महान् पण्डित था। भारत की यात्रा करना अति कठिन और जीवन को जोखिम में डालने के समान होने के कारण, अपने देश के एक महान् पण्डित की जिन्दगी को जोखिम में डाला जाये यह चीन के सम्राट् को बिल्कुल मान्य नहीं था। इसलिए ह्वेनसांग को चीन छोड़कर जाने की आज्ञा सम्राट ने नहीं दी। लेकिन ह्वेनसांग की भारत यात्रा करने की लालसा अदम्य और अडिग थी। अतः २९ वर्ष की आयु में ई. सन् ६२९ में एक रात को उसने चौरी-छुपे अपना घर छोड़ दिया। चौकीदारों से नजर बचाकर ह्वेनसांग ने चीन की सरहद को पार किया। तीन हजार मील का दुर्गम प्रवास करके ई. सन् ६३० में वह गांधार होते हुए काशमीर पहुँच गया। वहाँ उसका खूब आदर-सत्कार किया गया। काशमीर में दो वर्ष रहकर उसने संस्कृत एवं संस्कृत के ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। वहाँ से ह्वेनसांग भगवान बुद्ध की जन्मभूमि के दर्शन करने हेतु निकला। सम्राट हर्ष की राजधानी में उसका जोरदार स्वागत किया गया।

कन्नौज में कुछ समय रहने के बाद वह नालन्दा विद्यापीट में अध्ययन करने हेतु पहुँचा। नालन्दा उस समय अपनी उन्नति के चरम शिखर पर था। सभी दिशाओं में इसकी कीर्ति-पताका फहरा रही थी। सम्पूर्ण सभ्य समाज में से यहाँ विद्योपार्जन हेतु विद्यार्थी आते थे। शीलभद्र नामक एक प्रखर बुद्धिशाली बहुश्रुत महा पण्डित उस समय इस विद्यापीट का कुलपित था। नालन्दा में भी ह्वेनसांग का जोरदार स्वागत किया गया। यहाँ उसने विद्योपासना एवं बौद्ध ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने में पाँच वर्षों तक अथक परिश्रम किया। इस पञ्चवर्षीय समयान्तराल में ह्वेनसांग की कीर्ति भारत में इतनी फैली की सम्राट हर्ष ने उसे अपनी राज्यसभा में आने हेतु अनेकबार आमन्त्रण भेजा।

भारतवर्ष की प्रशंसा करते हुए ह्येनसांग कहता है-यहाँ की सभी बातों से मैं मुग्ध हो उठा हूँ! यहाँ की सन्तान पितृभक्त होती है, माता-पिता पुत्र-वत्सल

होते हैं। गुरु-शिष्यों में अनन्य प्रेम और भक्ति का भाव रहता है। प्रजा राजभक्त होती है। राजा प्रजा की भलाई के लिए कट-मरने को तैयार रहता है। राजा-प्रजा सभी में विद्या के प्रति बड़ी अभिरुचि रहती है, कभी कोई राजा सैकड़ों पीठें तैयार कराके अध्यापकों को निमन्त्रित करता है तो कभी कोई राजा राज्य-भर में चैत्य बनवाकर बुद्धिमानों के मन को धर्म की ओर आकृष्ट करता है। उपासना एवं अध्ययन के लिए संधाराम बनाये जाते हैं। किसान अपने खेतों में और व्यापारी अपने जल-पोत अथवा बजड़े (बेड़े) पर मधुर राग आलापते रहते हैं। कोई भी कष्ट का अनुभव नहीं करता। पेट की चिन्ता यहाँ किसी को नहीं रहती। भारत में अन्न-धन की कमी नहीं है। अतिथि-सत्कार सभी जगह एक समान है। यहाँ के लोग हाथी की पूजा करते हैं। राजा तक हाथी का सम्मान करता है। कहीं-कहीं मुर्गे की पूजा भी होती है।

### इत्सिंग :

भारत आनेवाले यात्रियों में इत्सिंग का नाम भी प्रख्यात है। बचपन से ही उसे बौद्धधर्म के अध्ययन के प्रति लालसा थी। इसी ज्ञानिपपासा की पूर्ति हेतु वह समुद्री-यात्रा करके जावा-सुमात्रा के रास्ते ई. सन् ६७३ के दरम्यान ताम्रलिप्ति बंदरगाह होते हुए भारत पहुँचा।

पन्द्रह वर्षों तक उसने भारत के विभिन्न स्थलों पर अध्ययन किया। दस वर्ष तो उसने नालन्दा विद्यापीठ में रहकर निरन्तर अध्ययन-अध्यापन कार्य किया। साथ ही महत्त्वपूर्ण संस्कृत ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ भी तैयार कीं। ह्वेनसांग-जैसी प्रखर बुद्धि एवं प्रतिभा तो इसके पास नहीं थी लेकिन कठिन परिश्रम करके यह अपने साथ भारत से अनेकों अमूल्य ग्रन्थ और महत्त्वपूर्ण सामग्री लेकर गया। भारतवासियों की सामाजिक परम्परा से सम्बन्धित अनेकविध बातों का उसने वर्णन किया है। शिष्टाचार और अतिथि-सत्कार में उसने भारतवासियों को चीन से आगे बताया है। कुशीनगर, काशी आदि अनेकों तीर्थस्थलों की यात्रा करते हुए वह समुद्री रास्ते से वापस चीन लौट गया। स्वदेश पहुँचने पर स्वयं चीन की साम्राज्ञी 'चोउ-की-वू-होऊ' ने अपने हाथों से उसका स्वागत किया था।

इत्सिंग के निर्विध्न और शान्तिपूर्वक स्वदेश लौट आने तथा महत्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपियों के संग्रह को देखकर सब में अपार आनन्द था। देश के कोने-कोने से लोग उसके दर्शन करने आये थे। वहाँ के लोग उसके दर्शन करके अपने को धन्य समझते थे। भिक्षु-वृन्द तो अतीव आनन्दित हो उठे थे। स्वदेश का एक व्यक्ति, जिसने लगातार २०-२५ वर्षों तक स्वजनों से दूर रहते हुए जान पर

श्रुतसागर - २६ ६३

खेलकर कष्टप्रद यात्रा करके देश का नाम रोशन किया। विश्व-विख्यात नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन करके अगाध पाण्डित्य प्राप्त किया हो, जो भारत के पवित्र बौद्ध-तीर्थों के दर्शन करके पतित-पावन हो चुका हो, जिसने अपने पाण्डित्य को भी अपने देश की सेवा में अर्पित कर दिया हो, वह भला देश की आँखों में क्यों न बसे! देश उसकी चरण-रज को मस्तक पर लगाकर कृत-कृत्य क्यों न हो!

इन यात्रियों ने भारत की तत्कालीन शिक्षण-प्रणाली एवं विद्या-विद्यरों, गुरुकुलों आदि के विषय में अनेकविध महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ अपने यात्रा विवरणों में लिखी हैं। इन तथ्यों के आधार पर तत्कालीन भारतीय शिक्षण-पद्धति, अतिथि-सत्कार एवं न्याय-व्यवस्था के अखण्ड प्रवाह का ज्ञान प्राप्त होता है। सात वर्ष की उम्र में विद्यार्थी आश्रम या मठ में गुरु के पास विद्याभ्यास हेतु जाता था। आश्रम के छोटे-बड़े सभी काम वह स्वयं करके गुरु के निकट रहकर गुरुमुख से ज्ञान प्राप्त करता था। इन संस्थाओं में सभी जाति एवं धर्म के विद्यार्थियों को अमीर-गरीब का भेद किये बिना प्रवेश दिया जाता था।

इन संस्थाओं में विद्यार्थियों को शब्द (व्याकरण-साहित्य), शिल्प (हुनर-उद्योग), चिकित्सा (रोगोपचार-विधि), हेतु-विद्या (न्यायशास्त्र) तथा अध्यात्म-विद्या (धर्म एवं तत्त्वज्ञान) से सम्बन्धित शास्त्रों का गहन अभ्यास कराया जाता था। तीस वर्ष की उम्र तक अध्ययन-कार्य चलता था। तत्कालीन विद्वान् अध्यापकों के अध्यापन-कौशल एवं पाण्डित्य का ह्वेनसांग ने खूब वखान किया है। छोटे-छोटे आश्रमों, गुरुकुलों एवं मठों के अलावा आज हम जिन्हें विश्वविद्यालयों की तरह जानते हैं वैसी ही अनेकों ख्याति-प्राप्त संस्थाएँ उस समय विदेशों तक प्रसिद्ध थीं। उनमें से कई संस्थाएँ तो अलग-अलग प्रकार की प्रमुख विद्याओं के विशेष अध्ययन हेतु प्रसिद्ध थीं। उदाहरण स्वरूप तक्षशिला विद्यापीठ चिकित्सकीय-अध्ययन हेतु, उज्जयिनी विद्यापीठ ज्योतिष-शास्त्रीय अध्ययन हेतु, वलभी विद्यापीठ जैन-धर्म-दर्शन के अध्ययन हेतु, काशी विद्यापीठ वेद-वेदांग के अध्ययन हेतु तथा नालन्दा विद्यापीठ महायानीय बौद्ध सम्प्रदाय के अध्ययन हेतु विशेषरूप से प्रसिद्ध थे। इन विद्यापीठों में विभिन्न देशों के हजारों विद्यार्थी एक-साथ अध्ययन करते थे।

तत्कालीन भारतवर्ष ने विद्योपासना में कैसी अद्भुत प्रगति की थी इसका अनुमान इन विद्यापीठों की अध्यापनशैली एवं यहाँ के वैशिष्ट्य वर्णन से लगाया जा सकता है, जो निम्नवत है:

### तक्षशिला विद्यापीठ :

संसार के सबसे प्राचीन विद्यापीठों में जिसकी गणना सर्व प्रथम होती है, ऐसी मात्र भारत की ही नहीं बल्कि एशिया की प्रमुख विद्यादायिनी संस्था भारतभूमि पर रावलिएडी नामक प्रदेश में विकसित हुई। ऋषि दौम्य, चाणक्य, पाणिनी और नागार्जुन जैसे भारत के समर्थ पण्डित इस संस्था के चमकते हुए सितारे थे; जिनकी यशोपताका आज भी उनके द्वारा विरचित ग्रन्थों के माध्यम से संपूर्ण विश्व को ज्ञान-विज्ञान द्वारा प्रकाशित कर रही है।

बौद्ध-धर्म के उदय से पहले यह वैदिक साहित्य के अध्ययन-अध्यापन का प्रमुख केन्द्र था। इसके बाद बौद्ध धर्म-दर्शन, चिकित्सा-शास्त्र एवं तत्त्वज्ञान के अध्ययन हेतु इसका नाम अग्रगण्य संस्थाओं में सबसे पहले गिना जाने लगा। किनिष्क के समय में इसकी ख्याति अपनी चरम सीमा पर थी। युद्ध-कौशल विषयक विशिष्ट प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए भी इस विद्यापीठ की प्रसिद्धि चारों ओर फैली हुई थी। यहाँ गरीब छात्रों तथा राजकुँवरों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था। दोनों ही वर्गों के छात्र बिना किसी भेद-भाव के एक-साथ बैठकर समान शिक्षा ग्रहण करते थे।

सिकन्दर भारत से वापस लौटते समय इस विद्यापीठ में से कई विद्वान् अध्यापकों को अपने साथ लेकर गया था। संसार के दूसरे किसी भी विद्यापीठ ने नहीं भोगा हो ऐसा लगभग बारह सैका तक यशस्वी और दीर्घ आयुष्यकाल तक इसका अस्तित्व रहा। ई. सन् ५०० के आस-पास तोरमाओं के जंगली हूण टोलाओं के हाथों इस विश्व प्रसिद्ध विद्यापीठ का नाश हुआ।

### नालन्दा विद्यापीठः

ह्वेनसांग ने इस विद्यापीठ का वर्णन करते हुए लिखा है कि पहले यहाँ एक सुन्दर उपवन था। पाँचसौ व्यापारियों ने उसे खरीदकर भगवान् बुद्ध के लिए भेंट स्वरूप अर्पित किया। भगवान् ने वहाँ रहकर धर्मोपदेश दिया। हूणों के द्वारा तक्षशिला का विध्वंस होने के बाद नालन्दा विद्यापीठ का महत्त्व और भी बढ़ गया। सातवीं सदी में तो भारत के अग्रगण्य विद्यापीठों में इसकी कीर्ति सर्वत्र फैल गई।

पटना से कुछ दूर गंगा नदी के किनारे रमणीय स्थल पर यह विद्याविहार स्थापित था। प्रातःकाल के धूंमस में घिरा हुआ नालन्दा विद्यापीठ अतीव मनोहर दिखाई पडता था। यहाँ के स्तूप, विहार और मन्दिरों के निर्माण में कुशल नगर रचना की कला का स्पष्ट चित्र दिखाई पडता है। यहाँ के भवनों का निर्माण-कार्य अत्यन्त मजबूत किस्म का था। गगनचुम्बी देधशाला, विशाल परकोटा, भव्य

श्रुतसागर - २६ ६५

विद्या-विहार, विद्या-विहार के अन्दर आठ बडे-बडे सभागार और सौ व्याख्यान-खण्डों का वर्णन करते हुए ह्वेनसांग जैसे थकता ही नहीं । यहाँ के विशाल और कलात्मक प्रवेशद्वारों, श्रेष्ठतम कारीगरी वाले स्तम्भों और मनोहर छत्रों को देखकर हर कोई चिकत रह जाता था। यहाँ के हरे-भरे उपवनों तथा लाल कनक के फूलों से सुशोभित जलाशयों का वर्णन ह्वेनसांग ने दिल खोलकर किया है। ईसा की पाँचवीं सदी में स्थापित यह विद्यापीठ विश्व के अग्रगण्य विद्यापीठों में से एक था। इसकी स्थापना से लेकर विध्वंस-काल तक सात-सात सदियों तक इसकी कीर्तिपताका सम्पूर्ण विश्व में फहराती रही।

भारतीय राजा महाराजाओं ने इसे स्थापित करने एवं समृद्ध बनाने में खूब दिलचस्पी दिखाई। तिवेट, चीन, जावा, सुमात्रा, सिलोन (श्रीलंका) आदि देशों से यहाँ अध्ययन हेतु आनेवाले विद्यार्थियों की एक लम्बी कतार थीं। अतः उपरोक्त साक्ष्यों के आधार पर सिद्ध होता है कि जिस प्रकार आज भारतीय विद्यार्थी विदेश में अध्ययन हेतु जाते हैं, उसी प्रकार किसी समय विदेशी छात्र भी विविध विषयों के अध्ययन हेतु हिन्दुस्तान के इन विद्यापीठों में आया करते थे। ह्वेनसांग जैसे चीनी पण्डित ने नालन्दा में लम्बे समय तक रहकर हिन्दू धर्म-दर्शन, वेद-वेदांग एवं बौद्ध धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया। यहाँ का अध्ययन-अध्यापन श्रेष्ठ कोटि का था। उच्च विद्या के अध्ययन हेतु इससे बढ़कर और कोई संस्था पूरे विश्व में नहीं थी। यहाँ के ग्रन्थागार अतीव विशाल और अध्ययन-सामग्री से परिपूर्ण थे। तीन विशाल भवनों में ग्रन्थों को सुव्यवस्थित तरीके से रखा गया था। इन भवनों के नाम थे-रत्नोदधि, रत्नसागर और रत्नरञ्जक। इनमें से पहला भण्डार ही नौ मञ्जिला था। इसीसे अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ विद्यार्थियों के अध्ययन-अध्यापन हेतु कितनी ग्रन्थराशी संगृहीत रही होगी।

नालन्दा विद्यापीठ जिस प्रकार धर्म और दर्शन, व्याकरण और व्युत्पित्तशास्त्र, तर्कशास्त्र और साहित्य के अध्ययन का मुख्य केन्द्र था उसी प्रकार शिल्पस्थापत्य एवं अन्य शिक्षण-कलाओं में भी उसका प्रमुख स्थान था। यहाँ प्रत्येक विषय के अनेकानेक मूर्धन्य पण्डितगण निवास करते थे। यहाँ दस हजार विद्यार्थी और पन्द्रहसौ अध्यापक रहते थे। आज समग्र विश्व में शायद ही कोई ऐसा विश्वविद्यालय होगा जहाँ पन्द्रसौ अध्यापक हों। सभी छात्रों तथा अध्यापकों के आवास एवं भोजन आदि की सम्पूर्ण सुख-सुविधाएँ विद्यापीठ द्वारा उपलब्ध कराई जाती थीं। खर्चे की पूर्ति हेतु सौ गाँव जागीर के रूप में विद्यापीठ को दान में दिये गये थे। भारतीय राजा-महाराजा भी समय-समय पर विद्यापीठ के लिए पुष्कल दान देते थे। यहाँ महायानीय बौद्ध-धर्म के अध्ययन हेतु विशेष अनुकूलता

थी। ब्राह्मण-धर्म एवं दर्शन के अलावा साहित्य, व्याकरण और कला का भी उच्चस्तरीय अध्ययन कराया जाता था।

ह्वेनसांग इस विद्यापीठ का वर्णन करते हुए कहता है कि-जहाँ स्थापत्य का यह महान् प्रासाद स्थित है वहाँ का प्राकृतिक वातावरण भी उसकी शोभा में चारचाँद लगा देता है। जमीन पर कई सरोवर हैं; जिनमें नीलोत्पल विपुल मात्रा में हैं। इनके सुन्दर नीले रंग के साथ कनक-पुष्प भी चारों ओर फैली हुई है। यहाँ वे आचार्य ज्ञान-ध्यान-विज्ञान-कला-साहित्य के मूर्घन्य विद्वान् हैं। यहाँ के प्रवेशद्वारों पर कुशल द्वारपाल नियुक्त किये जाते हैं जो विद्यापीठ में प्रवेशार्थ आने वाले छात्रों का साक्षात्कार लेकर, उनकी योग्यता को परखकर ही अन्दर जाने देते हैं। भारत में स्थित इन विद्यापीठों, गुरुकुलों, आचार्यों एवं ग्रन्थागारों को देखकर मेरा मन मुदित हो गया। वाकई भारतवर्ष जगद्गुरु है।

कालान्तर में नालान्दा की बढ़ती हुई ख्याति ही उसके विध्वंस का कारण बन गई। एक आततायी शासक ने पूर्वाग्रह से ग्रिसत हो कर इस दैदीप्यमान ज्ञानदीप को सदाँ-सदाँ के लिए बुझा दिया!

नालान्दा के इस सम्पूर्ण स्वाभाविक और मानव-निर्मित सौन्दर्य में से सिवाय खण्डहरों के अब कुछ भी नहीं बचा है। यत्र-तत्र मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे ढेर दिखाई देते हैं; खण्डित पत्थरों की प्रतिमाएँ कोस-कोस तक बिखरी हुई मिलती हैं। पुरातत्त्वविद् अपने फावडे और कुदाल लेकर वहाँ कुछ खोज निकालने में व्यस्त हैं। एक आततायी शासक बख्तियार खिलजी ने आक्रमण कर इस अद्भुत ज्ञानसागर को नेस्तनाबूत कर दिया। यहाँ के ग्रन्थालयों में आग लगा दी गई। जिसमें हजारों-लाखों महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ जलकर राख हो गये। वर्षों तक यहाँ के ग्रन्थालयों से धुआँ निकलता हुआ देखा गया! और इस प्रकार हमारे ऋषिमहर्षियों द्वारा निर्मित अमूल्य धरोहर नष्ट हो गई। इस धरोहर में से जो कुछ भी अंश स्वरूप बचा है उसे आज हमारे श्रेष्ठी एवं श्रुतसेवी संस्थाएँ संगृहीत कर बचाने के उपक्रम में लगे हए हैं।

### विक्रमशिला विद्यापीठ :

ह्वेनसांग के भारत से विदा होने के लगभग दो सौ वर्षों के बाद ईस्वीसन् की नौवीं सदी में, भागलपुर जिले में गंगा नदी के किनारे विक्रमशिला नामक एक और विद्यादात्री संस्था का जन्म हुआ। तिब्बत से असंख्य छात्र इस विद्यापीठ में अध्ययनार्थ आते थे। इस संख्या के बढ़ते हुए प्रमाण का अनुमान इसी से लगाया श्रुतसागर - २६ ६७

जा संकता है कि विक्रमशिला का एक छात्रावास तो 'तिवेट भवन' के नाम से ही जाना जाता था। आठ हजार विद्यार्थी एक-साथ बैठ सकें ऐसा विशाल सभागार इस संस्था का गौरव था।

नालान्दा की तरह ही इसके चारों ओर एक बड़ा परकोटा था; जिसके छह प्रवेशद्वार थे। इन सभी प्रवेशद्वारों पर एक-एक विद्वान् आचार्य की देख-रेख रहती थी। ये छह आचार्य और विद्यापीठ के प्रधान आचार्य मिलकर कुल सात समर्थ-पण्डित विक्रमशिला का प्रशासन संभालते थे। यहाँ भी नालन्दा जैसी ही प्रवेश प्रक्रिया थी।

### वलभी विद्यापीठ :

नाशिक होते हुए मालवा जाते समय ह्येनसांग ने सौराष्ट्र में हर्ष के जमाई मैत्रकवंशीय ध्रुवसेन की राजधानी वलभी में प्रवेश किया। ध्रुवसेन ने भी सम्राट अशोक की तरह बौद्ध-धर्म स्वीकार किया था। हर्ष की पञ्चवर्षीय परिषद् की तरह वलभी में भी एक बड़ा मेला भरता था। उस मेले में विद्वान् पण्डितों को खुले हाथों दान दिया जाता था। ह्येनसांग के एक शिष्य ह्युई-ली ने उस समय के गुजरात की समृद्धि का वर्णन करते हुए लिखा है कि-इस राज्य में दूर-दूर के मुलकों से आकर बसी हुई बंजारों की पोलें (बस्तियाँ) मीलों तक फैली हुई दिखाई पड़ती हैं; जिनके पास अथाह सोना जवाहरात है। पच्चीस लाख तोला सोना-चाँदी से भी अधिक धन जिनके पास है, ऐसे अनेकों कुटुम्ब-परिवार यहाँ निवास करते हैं।

वलभी में भी नालन्दा जैसी ही उच्च शिक्षण व्यवस्था थी। यहाँ जैन-धर्म-दर्शन एवं न्याय-विद्या का विशेष अध्ययन कराया जाता था।

### काँची विद्यापीट :

जिस प्रकार तक्षशिला और नालन्दा उत्तर भारत के विद्यास्तम्भ थे उसी प्रकार काँची विद्यापीठ दक्षिण भारत का महत्त्वपूर्ण शिक्षण संस्थान था। 'दक्षिण भारत का नालन्दा' के नाम से इस विद्यापीठ की ख्याति चारों ओर फैली हुई थी। नालन्दा के साथ यहाँ के अध्यापकों एवं छात्रों का गहरा सम्बन्ध था। शिल्प-शास्त्र और स्थापत्य में इसका अनन्य स्थान था। पल्लव राजाओं ने इस विद्यापीठ को खुले हाथों दान दिया। सुप्रसिद्ध नैयायिक वात्स्यायन और समर्थ पण्डित बौद्धन्याय-विशारद दिङगनाग जैसे आचार्यों ने इसकी कीर्ति में चार-चाँद लगा दिये।

इन विद्यापीठों की संस्कृति एवं अध्ययन-अध्यापन व्यवस्था से आकर्षित होकर असंख्य विदेशी विद्यार्थी यहाँ अध्ययनार्थ आते थे। उसी कडी में चीनी

विद्यार्थियों का भी आगमन हुआ, जिन्होंने अपने यात्रा विवरण की कहानियाँ यत्र-तत्र लिखी हैं। उन्हीं वृत्तान्तों को आधार बनाकर मैंने यहाँ यत्किञ्चित् प्रस्तुत् करने का प्रयास किया है। आशा है गवेषकों को पसन्द आयेगा।

नालन्दा, तक्षशिला, वलभी, विक्रमशिला आदि प्राचीन विद्याविहारों की ग्रन्थरक्षण परम्परा को जीवित रखने हेत् हिंदुस्तान में आज भी अनेकों ग्रन्थ-भण्डार सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं । इसी तरह का एक छोटासा प्रयास अहमदाबाद एवं गांधीनगर के मध्य श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा स्थित आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर कर रहा है। इस ज्ञानमंदिर में राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज की पावन प्रेरणा से लगभग दो लाख प्राचीन पाण्डुलिपि ग्रन्थों का संग्रह है। संभवतः आज यह हिंदुस्तान का सबसे बड़ा ग्रन्थागार है। यहाँ हस्तलिखित ग्रन्थों को विशेष रूप से जर्मन स्टील एवं सागवान की लकडी से निर्मित अलमारियों में रखा गया है। इन अलमारियों की खासियत यह है कि इनमें रखे हुए ग्रन्थों में वर्षात के मौसम में लेशमात्र भी भेज नहीं आ सकती, दीमक एवं सिल्वर-फिश जैसे कीटाणू भी प्रवेश नहीं कर सकते हैं, यहाँ-तक कि अग्नि अथवा जल के प्रकोप से भी ग्रन्थों को सुरक्षित रखा जा सकता है। यहाँ ग्रन्थरक्षण हेतु पारम्परिक एवं वैज्ञानिक संसाधनों का उपयोग किया गया है । इस ज्ञानमंदिर की ख्याति आज चारों ओर फैल रही है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ आनेवाले शोधार्थियों को कुछ ही समय में बिना किसी भेद-भाव के आवश्यक सामग्री उपलब्ध करा दी जाती है। यही कारण है कि आज यहाँ देश-विदेश से आनेवाले शोधार्थियों की संख्या में दिनों-दिन वृद्धि हो रही है । प्राचीन विद्याविहारों की उस दैदीप्यमान गौरवमयी परम्परा को यहाँ जीवित रखने का प्रयास किया जा रहा है, जो सराहनीय है !

### संदर्भ-ग्रन्थ :

- दक्षिण-पथ, लेखक- श्री जयकान्त मिश्र, साघना कार्यालय आगरा से प्रकाशित।
- २. फाहियान का भारत दर्शन, लेखक- दामोदरलाल गर्ग, आदर्शनगर जयपुर से प्रकाशित।
- सुंगयुन का यात्रा-विवरण, अनुवादक- जगन्मोहन वर्मा, काशी नागरीप्रचारिणी सभा से प्रकाशित।
- ४. फाहियान और ह्वेनसांग की भारत यात्रा, लेखक- ब्रजमोहनलाल वर्मा, हिंदी ग्रन्थ प्रसारक समिति छिंदवाडा से प्रकाशित।
- ५. बौद्धधर्म के २५०० वर्ष का इतिहास, संपादक- पी.वी. बापट, पब्लिकेशन डिवीजन दिल्ही से प्रकाशित।

### સંગ્રહાલયના બે ચોવીશી પટનો પરિચય

ලිද්ග වෙම

જૈન કલામાં પ્રાય તીર્થંકર ભગવંતોની પ્રતિમા સર્વાધિક પ્રાપ્ત થાય છે. તીર્થંકર ભગવંતોના નિર્વાણ બાદ કેટલોક સમય એમનું સ્મરણ યથાવત્ બની રહ્યું, એમની સ્મૃત્તિને ચિરંજીવ બનાવવાના હેતુથી તીર્થંકર ભગવંતોની પ્રતિમાઓનું સ્થાપન થયું, તત્કાલીન શાસકોના પ્રભાવ હેઠળ તીર્થંકર ભગવંતની પ્રતિમાઓમાંના નિર્માણમાં ઘણા કેરકારો જોવા મળે છે, તીર્થંકર ભગવંત સદૈવ ધ્યાનાવસ્થામાં હોવાથી એમની પ્રતિમા ૧. ખડ્ગાસન (કાયોત્સર્ગ) ૨. પદ્માસન આમ બે આસનોમાં જોવા મળે છે. કાલાંતરે જિન-પ્રતિમાઓમાં દિતીર્થિ, ત્રિ-તીર્થિ, ચતુર્વિંશતિ જિન-પટ વિગેરે વૈવિધ્ય મળતું રહ્યું. લગભગ દસમી સદીમાં ચોવીશી પટો નિર્માણ પામ્યા, ચોવીશી પટ્ટો શ્વેતાંબર મૂર્તિપૂજક અને દિગંબર એમ બંજ્ઞે પરંપરામાં મળી આવે છે, દિગંબર પરંપરામાં પણ ચોવિશી પટ્ટોમાં ઘણાં પ્રકારનું વૈવિધ્ય જોવા મળે છે. આ ચોવીશ તીર્થંકર-પ્રતિમાઓમાં સામાન્યથી અષ્ટપ્રાતિહાર્ય, લાંછન, અને યક્ષ-યક્ષીનું અંકન પણ પ્રાપ્ત થતું રહ્યું, નામ, સ્થાપના, દ્રવ્ય, ભાવ એમ કુલ ચાર નિક્ષેપે સમસ્ત લોકને પાવન કરતા તીર્થંકર ભગવંતોના અભિનવ સ્વરૂપની પરિકલ્પના કરવામાં આવી છે. અને તીર્થંકર ભગવંતોના વિવિધ સ્વરૂપની પુજા-અર્ચના વિગેરેની પરંપરા પણ અનવસ્છિત્ર રૂપે મળી આવે છે.

## ચોવીશી પટ\* નંબર - ૧

પ્રસ્તુત ચોવીશીમાં તીર્થંકર ભગવંતોના બાળ સ્વરૂપનું અંકન છે. વિ. સં. ૧૨મી સદીના આ શિલ્પમાં વર્તમાન ચોવીશીના તીર્થંકર ભગવંતની માતા એના બાળ સ્વરૂપ પરમાત્માને ખોળામાં લઈને બેઠાં છે, પહેલી લાઈનમાં પ્રથમ તીર્થંકર, બીજી લાઈનમાં ત્રણ તીર્થંકર, ત્રીજી લાઈનમાં પાંચ તીર્થંકર, ચોથી લાઈનમાં સાત તીર્થંકર, અને પાંચમી લાઈનમાં આઠ તીર્થંકર બિરાજમાન છે, પાંચમી લાઈનના મધ્યભાગમાં મંગલ-કુંભનું સ્થાપન કરવામાં આવ્યું છે. તોરણ અને થાંભલી-યુક્ત દેરીમાં દરેક માતા બિરાજમાન છે, દરેક લાઈનના આરંભ અને અંતે ચામર-ધારી પરિચારકો જણાય છે. માતા અર્ધપદ્માસનમાં બિરાજમાન છે, દરેકની નીચે માતાના નામો લખ્યાં છે. પ્રસ્તુત ચોવીશીમાં લેખ વિગેરે કોઈ સાધન પ્રાપ્ત થતું નથી.

<sup>\*</sup> ટાઈટલ પેજ નં. ૧

### 60

### ચોવીશી પટ\* નંબર - ર

પ્રસ્તુત પટમાં ચોવીશ દેરી બનાવી ચોવીશ તીર્થંકર ભગવંતોની પ્રતિષ્ઠા કરેલ છે. દરેક દેરીમાં ઉપરના ભાગે તીર્થંકર ભગવંતનું નામ અને ત્યારબાદ ક્રમાંકનું આલેખન થયું છે. દેરીની નીચેના ભાગે લાભ લેનાર વ્યક્તિનું નામ આલેખેલ છે, પટમાં ઉપરના ભાગે શિખરની આકૃતિ ઉપર કરકતી ઘજા જણાય છે, યથાશક્તિ એક-એક વ્યક્તિ સ્વતંત્ર રીતે જિનાલય બંધાવ્યા સરખો લાભ મેળવી શકે એ ઉદ્દેશથી જ આ પ્રકારના ચોવીશી પટોનું નિર્માણ સંભવે છે. આ પટ ભરાવનાર તરીકે ઉલ્લેખિત ચોવીશ વ્યક્તિઓ નામાનુસાર સ્ત્રી, તેમજ પ્રાયઃ એક જ પરિવાર-કુટુંબના સભ્ય હોવાની શક્યતા વધુ છે, પ્રસ્તુત લેખમાં આ પટ ભરાવનાર વ્યક્તિઓનો નામોલ્લેખ આપેલ છે. લેખમાં નામ આગળ આપેલ ક્રમાંક દેરી નંબર અને તીર્થકર ભગવંતના ક્રમને જણાવે છે.

#### २. चोवीशी पट लेख

9. तेजलदेवी, २. बिल्हणदेवी, ३. पूनी, ४. चाहणदेवी, ५. खेतलदेवी, ६. माल्हणी, ७. वील्ह, ८. अमीदे, ९. कूंरदेवी, १०. माल्हणदेवी, ११. मीलणदेवी, १२. गुरदेवी, १३. पूनिणि, १४. सर्हाज, १५. कील्हू, १६. कील्हणदे, १७. मूंजी, १८. पूजी, १९. सुहवदे, २०. पूजी, २१. बाली, २२. बील्हूदेवी, २३. राजलदेवी, २४.जाल्हदेवी

## સ્થાનાંગસૂત્રની સાક્ષીએ રોગોત્પત્તિના નવ કારણો

- ૧. અત્યાસન :- એક આસને લાંબો સમય બેસવાથી.
- ૨. અત્યાશન :- વધુ ભોજન કરવાથી, કે અપથ્યનું સેવન કરવાથી.
- ૩. અતિનિદ્રા :- વધારે પડતું સૂવાથી.
- ૪. અતિ જાગરણ :- વધારે મોડે સુધી જાગવાથી.
- ૫. ઉચ્ચાર નિરોધ :- મળ(ઝાડો) રોકી રાખવાથી.
- પ્રશ્રવણ નિરોધ :- પેશાબ રોકી રાખવાથી.
- ૭. ગમન :- નિરંતર ચાલવાથી.
- ૮. ભોજન પ્રતિકુલતા :- પ્રતિકુળ ભોજન કરવાથી. (પ્રકૃતિ વિરુદ્ધનું ભોજન કરવાથી.)
- ૯. ઈન્દ્રિયાર્થના વિપાક :- ઐન્દ્રિક વિષયોનું અતિ સેવન કરવાથી.
  - આ નવ કારણોથી શરીરમાં રોગો ઉત્પન્ન થાય છે. (સ્થાન-૯, સૂત્ર-૬૬૭)

<sup>\*</sup> ટાઈટલ પેજ નં. ૪

#### संग्रहालयना प्रतिमालेखो

आजे आपणी परंपरा अने श्रमण संस्कृतिनो क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नथी, इतिहासना केटलाय तत्त्वो ग्रंथ-भंडारो, ताभ्रपत्रो, शिलालेखो, अने प्रतिमालेखोमां घरबायेला छे. आवी ऐतिहासिक साधन सामग्रीमां प्रतिमालेखो अग्रता क्रमे छे, प्रतिमा लेखो बे विभागमां मळे छे. १. पाषाण प्रतिमा लेखो २. धातु प्रतिमा लेखो, धातु प्रतिमानी अपेक्षाए पाषाण प्रतिमामां लेखो बहु ओछा प्राप्त थाय छे. प्रतिमा लेखोमां श्रमण परंपरा अने तत्कालीन श्रावकोना वंशादिनी नोंध प्राप्त थाय छे. श्रमण परंपराना इतिहासमां खूटती कडीओनुं अनुसंधान करवामां प्रतिमा लेखो बहु महत्त्वनो भाग भजवे छे.

पूज्यपाद् गुरुदेव श्रीमद् आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा प्रभु शासननी आवी ऐतिहासिक मूल्योनी काळजी अने जतन माटे सतत उद्यमशील अने कांईक करी छूटवानी भावना घरावी, प्रभु शासननी शान अने गरिमाने हृष्ट पुष्ट करता रहे छे. पूज्य गुरुमहाराजना अथाग प्रयत्नथी विनिर्मित आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर अने सम्राट् संप्रति संग्रहालयमां आवी केटलीय ऐतिहासिक सामग्रीओ संकलित, संगृहीत अने सुरक्षित छे. संग्रहालयमां रहेला धातु अने पाषाण प्रतिमाना लेखो अहीं प्रस्तुत छे. आ लेखो उतारी आपवानुं पुण्य-कार्य परम पूज्य शासनसम्राट्श्रीना समुदायना आचार्य भगवंत श्रीसोमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज साहेब अने एमना शिष्य परिवारे करी आप्युं छे. संग्रहालयमां नोंधायेल क्रमानुसार ज प्रतिमाना लेखो प्रकाशित करीए छीए.

**-c**2

# धातु प्रतिमालेख

#### श्री शांतिनाथ, पंचतीर्थी - १

१. संवत् १५६१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्री ब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा. श्रे. खेता भा. खेतलदे सु. पोपट भा. ढूबी सु. लींबा भा. ललनादे सु. पद्मा युतेन स्वपूर्वजनिमत्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथचतुर्विशतिपट्टः कारि. प्र. श्री बुद्धिसागरसूरिपट्टे श्रीविमलसूरिभः द्या...

# श्री पद्मप्रभरवामी, चतुर्विशति - ३

२. संवत् १४३८ वर्षे ज्येष्ट वदि ४ शनौ श्रीनाणकीयगच्छे ......गोत्रजा भा.

७२ मार्च - २०१३

डाका भातृ जयतसिह नाणसीह?(इ?)....देदा भा. पू..... द्वितीय नाम कील्हणदेव्या पुत्र घरण-धिर सहितयो आत्मश्रेयोर्थं श्रीपद्मप्रभचतुर्विंशति**जिनालयः** का. प्र. श्रीमहेंद्रसूरिभिः ।।श्री।।

### श्री सुमतिनाथ, चतुर्विशति - ४

### चतुर्विंशति - ५

४. सं. .......................वीरम भा. लाजा श्रे. राणा भा. सिरियादे श्रे. बीहडा भा. कील्हणदे सर्वगोत्रिणां श्रेयसे ........चतुर्विशति?बिंबं करा. का. पिप्पलाचार्य श्री**गुणसमुद्रस्रि** शिष्य. श्री**शांतिसूरि**भिः।!

### श्री चंद्रप्रभस्वामी, चतुर्विंशति - ६

५. संवत् १३८७ वर्षे माघ शुदि ५ रवौ श्रीकाष्ट्रसंघे आचार्य श्रीशुभकीर्तिगुरोपदेशेन नरसिंहपुर खेता सुत साजण वधू नागल सुत माणल सुत साढा सुत तेजाकेन श्रीचंद्रप्रभ श्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं।।

#### श्री आदिनाथ, पंचतीर्थी - ७

६. संवत् १५७१ वर्षे माहा शुदि १३ रवौ राजाधिराज श्रीनाभिनरेश्वर माता श्रीमरूदेवा तत्पुत्र श्रीःश्रीःश्रीःश्रीःश्रीः आदिनाथिबेंबं कारितं सेवक तेजाच्येना भोपाल लीखमीसी नींबाभिधानेन कर्मक्षयार्थं शुभं भवतु नुङलाइ वास्तव्य।। श्रीश्रीश्रीश्री

### श्री शांतिनाथ, पंचतीर्थी - ८

७. संवत् १५५१ पौष सुदि १३ शुक्रे श्रीमंडपे श्रीश्री...... सोनी संग्रामस्य भार्यया नाथी सुश्राविकया पुत्र उदयाकरण मुख्यपरिवारसहितया स्वपुण्यार्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं श्रीअंचलगच्छेश श्रीसिद्धांतसागरसूरीणामुपदेशन कारितं प्रतिष्ठितं श्रीश्रीपत्तननगरे श्रीसंघेन पूज्यमान चिरंनंदतात् श्री।।

## श्री अरनाथ, पंचतीर्थी - ९

 संवत् १५६२ वर्षे वैशाख विद १० रवी वौ. उपकेशज्ञातीय श्रीछाजङगोत्रे सा. वयरसीह भार्या कउडी पुत्र. सा. नायमल्लना पुत्र हालासहितया श्रीअरूनाथिबंबं

### श्रुतसागर - २६

69

कारितं निजपुन्यार्थं प्रतिष्ठिता श्रीमलधारगच्छे भ. श्री**लक्ष्मीसागरसूरि**भिः।। श्री सुपार्श्वनाथ, पंचतीर्थी - ७०

१. सं. १५४१ वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीमंडपे श्रीमालज्ञातीय सं. ऊदा भा. हर्षू पु. सं. खीमा भा. पूजी सु. सं. जगसी भा. माकुं पु. सं. गोल्हा भा. सामा पु. मेघा पु. शाणी लघुभ्रातृ सं. राजा भा. सांगू पु. सं. जावड भा. रमाई जीवादे-सुहागदे-सक्तादे-धनदे सु. सं. हीरा भा. रमाई सं. लालादि कुटुंबयुतेना ४? बिंबकारियत्रा श्रेयसे श्रीसुपार्श्विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीलक्ष्मीसागरसूरिपष्टे श्रीसुमतिसाधुसूरिकः।।

### श्री पार्श्वनाथ, पंचतीर्थी - ११

९०. संवत् **१९७८** पोस वदि ११ शुक्रे श्रीहाइकपुरीयगच्छे श्री**गुणसेनाचार्य** संताने सवणीतीग्रामे ठा. झमणाग ....... सुत वछलेन भार्या जसदेवि समन्वितेन श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा उभयश्रेयोर्थं कारिता।।

### श्री चन्द्रप्रभ, एकलतीर्थी - ९३

११. सं. १२३८ मार्ग. सुदे १५ गुरो अधेह भा. लिज श्री महावीरप्रत्यमा कारापिता पुणदेवी आत्मश्रेयोर्थं प्रतिष्ठिता श्रीचंद्रप्रभौ श्री......।!

### श्री शांतिनाथ, त्रितीर्थी - १४

१२. सं. **१२१८** वैशाख वदि ५ शनौ १. श्रीभावदेवाचार्यगच्छे जसधवल पुत्रिकया सहजिया आत्मश्रेयोर्थं श्रीशांतिजिनकारित।।

# श्री चन्द्रप्रभस्वामी, चतुर्विशति - १५

५३. संवत् १४७९ वर्षे पोष वदि ५ शुक्रे श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकीर्तिसूरीणामुपदेशन श्रीश्रीमाल ज्ञा. परी. धना भा. परी. धांधलदे तयो सुतेन परी. हीराकेन निजिपतृमातृपुण्यार्थं स्वश्रेयोर्थं च श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठापितं चिरंनदतात्।।

#### श्री आदिनाथ, पंचतीर्थी - १६

१४. सं. **१२२१** वैशाख शुदि ४ सोमे श्रीप्राग्वाटज्ञातीय महं. रूपा सुत महं...... सामलेन ...... श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं।।

(क्रमशः)

# ત્રિભુવનવિહાર રાણકપુર તીર્થ: એક પરિચય

કનુ**ભાઈ એલ. શા**હ

શ્રી શત્રુંજય મહાતીર્થનું નામ સ્મરણ થતાં જ ઊંચા પર્વત પર મંદિરોની નગરી એવું ચિત્ર મનમાં અંકિત થાય, શ્રીસમેતશિખરનું નામ લેતાં જ પર્વત પર શામળા પાર્શ્વનાથનું મંદિર તેમજ ઊંચી-નીચી ટેકરીઓમાં વીસ તીર્થંકરોના પગલાંની દેરીઓનું ચિત્ર મનમાં ઉપસે જ્યારે શ્રી રાણકપુર તીર્થનું નામ પડતાં જ નયનસ્ય કોતરણીવાળા સ્તંભોનું વિશાળકાય શ્રી ઋષભદેવનું ચતુર્મુખ જિનપ્રાસાદ એવી સ્પષ્ટ છિલ માનસપટ પર ઉપસી આવે છે.

આ મંદિરના નિર્માણકર્તા શ્રેષ્ઠી ધરણાશાહ હોવાથી 'ધરણવિહાર' તરીકે પ્રસિધ્ધિ પામ્યું છે. આ મંદિર ત્રણે લોકમાં દીપક સામન હોવાથી 'ત્રૈલોક્યદીપકપ્રાસાદ' અથવા 'ત્રિભુવનવિહાર' તરીકે પણ ઓળખાય છે. આ ઉપરાંત આ મંદિરને 'નલિનીગુલ્મ વિમાનની' પણ ઉપમા આપવામાં આવી છે.

મંત્રી ધરણાશાહ :- શેઠ કુંરપાલ અને તેમની પત્ની કામલદેને બે પુત્રો હતા - રત્નાશાહ અને ધરણાશાહ\*. પોરવાડ જ્ઞાતીય ધરણાશાની પત્નીનું નામ ધારલદે હતું. ધરણાશાના મોટાભાઈનું નામ રત્નાશા અને તેમની પત્નીનું નામ રત્નાદે હતું. ધરણાશા અને રત્નાશાને નાનપણથી જ ઘરના સુસંસ્કાર અને ધર્મપરાયણતાનો સમૃદ્ધ વારસો મળ્યો, પંદરમી સદીમાં થયેલા આચાર્ય શ્રી સોમસુંદરસૂરિજીની પ્રેરણાથી ધરણાશાહે તેમનું જીવન ધર્મ તરફ વાળ્યું. બત્રીસ વર્ષની ભરયુવાનીમાં શત્રુંજય તીર્થમાં બત્રીસ સંઘોની વચ્ચે ઇન્દ્રમાળ પહેરી ચોથા બ્રહ્મચર્ય વ્રતનો કઠોર નિયમ ધારણ કર્યો. ધરણાશાહે તીર્થયાત્રામાં અને અન્ય ધાર્મિક કાર્યોમાં પોતાની લક્ષ્મીનો સદુપયોગ કર્યો. શેઠ ધરણાશાની બુદ્ધિમત્તા અને દાનવીરતાની ગુણસમૃધ્ધિ પારખી, કુંભા રાણાએ તેમને મંત્રીપદે સ્થાપ્યા.

જિનાલય નિર્માણ :- મંત્રી ધરણાશા ધર્મપરાયણ હોઇ ભગવાન ઋષભદેવનું એક અલૌકિક અને ભવ્ય મદિરનું નિર્માણ કરવાની ભાવના તેમને જાગૃત થઇ.

(राणकपुर-जिनालयना रंगमंडपमां बिराजमान आदिनाथ प्रतिमा लेख)

<sup>\*</sup> सं. १५०७ चैत्र वदि ७ शनौ प्राग्वाट. सं. कुमरपाल भा. कामलदे पुत्र सं. धरणाकेन भा. धारलदे पुत्र जाजा-जावड ज्येष्ठभ्रातृ सं. रत्ना पुत्र लाखु-सजी-सालिग-सोन्त पौत्र लोला महणसी-सांडा-गुणराज-पर्वत-वाछा-राजिग-पासा-आसा-सोहक.... राजादि कुटुंबयुतेन खकारिते चतुर्मुखप्रासादे द्वितीया भूमौ मूलनायकः श्रीयुगादिदेवः का. प्र. तपागच्छेशश्रीसोमसुंदरसूरिशिष्य श्रीमुनिसुंदरसूरि-श्रीजयचंद्रसूरिपट्टयोः रत्नशेखरसूरिभिः। सं. साजिगदे प्रणमति।।

#### श्रुतसागर - २६

છપ

એક અનુશ્રુતિ તો એમ કહે છે કે ધરણાશાને એક રાત્રે સ્વર્ગલોકના 'નલિનીગુલ્મ દેવવિમાન' જેવું મંદિર નિર્માણ કરવા માટેનું સુંદર સ્વપ્ન આવ્યું. ધરણાશાએ વિચાર્યું કે મારે પણ સ્વપ્નમાં દર્શન કર્યા જેવું જ એક અતિભવ્ય અને અતિસુંદર જિનપ્રાસાદનું નિર્માણ કરવું. આ માટેની તૈયારીઓના પ્રારંભમાં નામાંકિત શિલ્પીઓ પાસેથી મંદિરના નકશાઓ મંગાવ્યા. સૌના નકશાઓ જોતાં-જોતાં છેવટે મુંડારાના વતની દેપા કે દેપાક નામના શિલ્પીનો નકશો પસંદગી પામ્યો. શિલ્પી દેપા એક અનોખા પ્રકારનો ક્લાકાર હતો. પૈસા કરતાં એને પોતાની ક્લાસમૃદ્ધિને છતી કરવાનો શોખ હતો. મંત્રી ધરણાશાની ધર્મભક્તિથી આકર્ષાઈને આ કાલાકારે એક ઉત્તંગ અને ભવ્યમંદિરનું નિર્માણ કરવાનો સંકલ્પ કરી, સંવત ૧૪૪૬માં મંદિરનું કાર્ય શરૂ કર્યું. આ મંદિરનું નિર્માણ ૫૦ વર્ષે પણ પૂર્ણ થઇ શક્યું નહીં. ધરણાશાને આ મંદિર સાત મજલાનું કરવું હતું. તેને અટકાવીને પોતાની વૃદ્ધાવસ્થાને ધ્યાનમાં રાખીને મંદિરમાં ભગવાન ઋષભદેવની પ્રતિષ્ઠા કરાવવાનો નિર્ણય કર્યો. એટલે સંવત ૧૪૯૬માં આ પ્રતિષ્ઠા આચાર્ય ભગવંતશ્રી સોમસંદરસરિજીના વરદ હસ્તે સંપન્ન થઇ. ધરણાશાએ એમની અંતિમ ઘડીઓમાં જિનમંદિરનું થોડું બાકી રહેલું કાર્ય પૂર્ણ કરવા મોટાભાઈ રત્નાશાને જણાવ્યું. શ્રી ધરણાશાના અવસાન બાદ આઠ-દસ વર્ષ સુધી મંડપોનું કલાત્મક શિલ્પકામ રત્નાશાએ કરાવ્યું અને તીર્થની શોભા વધારી.

આ મંદિરના નિર્માણ માટે મંત્રીશ્રી ધરણાશાહે કુંભા રાણા પાસે જમીનની માગણી કરેલી. રાણાએ જમીન ઉદારતાથી આપવાની સાથે ત્યાં નગર વસાવવાની પણ સલાહ આપેલી. એ પ્રમાણે ગામ વસાવીને રાણાના નામ પરથી ગામનું નામ રાણકપુર રખાયું. એ પછી લોક જીભે આ નગરનાં નામોનો જુદો-જુદો ઉચ્ચાર થવા લાગ્યો - રાણપુર, રાણીગપુર, રાણીકપુર, રાણકપુર છેવટે રાણકપુર નામ પ્રસિદ્ધ થયું. સંવત ૧૭૪૬માં કવિશ્રી શીલવિજયજીએ રચેલ 'તીર્થમાળા'ના વર્ણન પરથી એવું જણાય છે કે એ સમયે રાણકપુર ઘણુ સમૃદ્ધ હતું. અને શ્રાવકોના જ ત્રણ હજાર જેટલાં ઘરો હતાં. ત્યારબાદ એ નગર વેરાન બન્યું.

આ મંદિર મધાઈ નદીની પાસ, અરવલ્લી ગિરિમાળાની નાની નાની ટેકરીઓ અને શાંત એકાંત નિર્જન જંગલ એમ કુદરતના આ ત્રિવિધ સૌંદર્યો વચ્ચે માનવસર્જિત સ્વર્ગલોકના દેવ વિમાન સાદેશ આ શિલ્પ સમૃદ્ધિવાળા મંદિરના દર્શન કરી, માનવી પોતાની જાતને ભૂલી, પ્રભુને સમર્પિત થઈ દિવ્યલોકના આનંદની અનુભૂતિ કરે છે.

જિનાલય પરિચય: - આ મંદિરની નિર્માણ કથાના ચાર આધારસ્તંભો છે: આચાર્ય શ્રી સોમસુંદરસૂરિજી, મંત્રી શ્રી ધરણાશાહ, શ્રી રાણા કુંભા અને શિલ્પી દેપા. આ ચારેની ભાવનારૂપ ચાર સ્તંભોના આધારે ગગનને આંબતાં, કોતરણીયુક્ત સ્તંભોથી શોભતાં, વિશાલ મંદિરની રચના સાકાર થઇ.

આ મંદિરને ચાર દ્વાર છે. મંદિરના મૂળ ગભારામાં ભગવાન ઋષભદેવની ૭૨ ઇંચ જેટલી ચારે દિશાઓ તરફ મુખ કરતી ચાર ભવ્ય પ્રતિમાઓ બિરાજિત ७६ मार्च - २०१३

છે. બીજા અને ત્રીજા માળના ગર્ભગૃહમાં પણ આ રીતે ચાર ચાર જિનપ્રતિમાઓ છે. માટે આ મંદિર ચતુર્મુખજિનપ્રાસાદ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયું, ગોડવાડની મોટી પંચતીર્થીમાં જેટલાં પ્રાચીન જૈન મંદિરો છે તેમાં સૌથી મોટું અને શિલ્પ સમૃદ્ધિની દષ્ટિએ આ મંદિર અનુપમ છે. આ જિનાલયમાં ૭૬ નાની શિખરબંધી દેરીઓ, ચાર રંગમંડપ તેમજ શિખરયુક્ત મોટી દેવકુલિકાઓ છે. ચાર દિશાઓમાં રહેલા ચાર મહાધર પ્રાસાદોમાં ૮૪. દેવકુલિકાઓ છે. મંદિરના ત્રણ માળમાં ૨૪ રંગમંડપો, ૮૫ શિખરો અને ૧૪૪૪ સ્તંભો છે. તેમજ ૮૪ ભોંયરાઓ પણ છે.

આ ધરણવિહાર મંદિર ૪૮૦૦૦ વર્ગ ફીટના વિસ્તારમાં પથરાયેલું છે. મંદિરની ઊંચાઇના પ્રમાણમાં જગતિ ભોંયતિયાની ઉંચાઇ અને વિસ્તાર, ચારે દિશામાં એક સરખાં પગથિયાં, શૃંગાર ચોકીઓ તે ઉપરના મંડપો, દરવાજાઓ બધું માપ એકસરખું નજરે પડે છે. અંદરની બાજુએ ચારે દિશાના ચાર દરવાજાયુક્ત મુખ્ય મંદિર, તેના ચાર સભા મંડપો, ચાર વિશાળ મેઘનાદ મંડપો, તેના તોરણો યુક્ત ઊંચા સ્તંભો, મુખ્ય મંદિરના ચારે ખૂણામાં શિખરબંધી દેરાસરો, ભમતીની શિખરબદ્ધ દેવકુલિકાઓ, વચ્ચે વચ્ચે ચારે તરફના એકસરખા મોટા ગભારા ઉપર બે માળ અને શિખરબંધી રચનાવાળું આ મંદિર છે. આ બધા ઠેકાણે શિલ્પના દર્શન તો થાય જ છે પરંતુ મેઘનાદ મંડપની શિલ્પકળાની સમૃદ્ધિ જ યાત્રિકનું મન હરી લેવા પૂરતી છે.

આ મંદિર નિર્માણમાં થયેલા ખર્ચની વિગતો ૧૮મા સૈકામાં રાણકપુરની તીર્થયાત્રાએ આવેલા જ્ઞાનવિમલસૂરિજીએ રાણકપુર તીર્થ સ્તવનમાં ઘરણવિહારના વર્ણનમાં જણાવેલ છે. જિનમંદિર નિર્માણમાં આજથી સાડાપાંચસો વર્ષ પૂર્વ ૯૯ લાખ સુવર્ણમુદ્રાઓનો ખર્ચ થયો હતો. 'घन्ने पोरवाड निन्नाणु लाख द्रव्य लगायों'

મુખ્ય મંદિરની રચના પછી રાણકપુરની જાહોજલાલીમાં વિદેશી આક્રમણના કારણે ઓટ આવી. મોગલ સમ્રાટ ઔરંગઝેબે આ પ્રદેશમાંથી પસાર થતાં ધરણવિહારને ઘણું નુકશાન પહોચાડ્યું હતું. એ પછી આ વિસ્તારમાં દુષ્કાળનો ઓળો ઉતરતાં આસપાસની વસતી શહેરોમાં સ્થળાંતરિત કરી ગઇ. આ તીર્થની આસપાસ ગીચ ઝાડી ઊગી ગઇ, રસ્તાઓ વિકટ અને નિર્જન બન્યા, જંગલી પશુઓનો ભય વધ્યો. એટલે લોકોની આ પ્રદેશમાં અવર જવર ઘણી જ ઓછી થઇ. યાત્રીઓથી ધમધમતું સ્વર્ગસમું આ તીર્થ સાવ નિર્જન બન્યું.

જિનાલયનો જીર્ણોદ્ધાર :- જેમ ભરતી પછી ઓટ અને ઓટ પછી ભરતી આવે છે તેમ આ મંદિરના ચઢતીના દિવસો આવ્યા. અમદાવાદના નગરશેઠ હેમાભાઈ વખતચંદ સંઘ કાઢીને સાદડી ગામમાં આવેલા ત્યારે એમને આ તીર્થની કફોડી જીર્ણદશા જોઇને આ તીર્થને ડાકુ-લુંટારાઓના ભયથી મુક્ત કરવા પગલા

૨. જૈન તીર્થ સર્વસંગ્રહ, ભાગ-૧, ખંડ બીજો પૃ. ૨૧૬.

#### श्रुतसागर - २६

(G(G

લીધાં. આ વાસ્તવિકતા પિછાણીને સાદડીના શ્રી સંધને રાણકપુર તીર્થના જીર્ણોદ્ધારની ભાવના જાગી. જીર્ણોદ્ધાર માટે સંપત્તિ તથા કારીગરો મેળવવા જેવા અનેક જટિલ પ્રશ્નોના કારણે ભારતના સમસ્ત શે. મૃ. પૃ. જૈન સંઘની પ્રતિનિધિ સંસ્થા શેઠ આણંદજી કલ્યાણજી સાથે વાટાઘાટો આદરી. છેવટે શ્રી સાદડી સંઘે શેઠ આણંદજી કલ્યાણજી પેઢીને આ તીર્થનો વહીવટ સોંપ્યો. શેઠ આણંદજી કલ્યાણજી પેઢીના સુકાની શ્રેષ્ઠીવર્યશ્રી કસ્તુરભાઈ લાલભાઈએ શાસનસમાટ શ્રીમદ વિજય નેમિસરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબની સલાહ અને આજ્ઞા લઇને એ સમયના કુશળ શિલ્પીઓનો સાથ લઇને અને તે સમયના સ્થાપત્યના વિદ્વાન અને નિષ્ણાંત શિલ્પી ગ્રેગસન બેટલીનો પણ સાથ મેળવીને રાણકપરના મંદિરના જર્ણાદ્વારનં કાર્ય સુંદર રીતે પાર પાડ્યું. શ્રેષ્ઠીવર્ય શેઠશ્રી કસ્તુરભાઈ લાલભાઈની વિશાલ દૃષ્ટિથી મંદિર અને પરિસરની વ્યવસ્થાઓમાં નવેસરથી રચના કરવામાં આવી. ઝમ્મરો, મેઘનાદ મંડપ વગેરે ફરી ચેતનવંતા બન્યાં. નવી ધર્મશાળા, ભોજનશાળા અને અન્ય સુવિધાઓ પણ ઊભી કરવામાં આવી. વિ.સ. ૧૯૯૦માં શરૂ કરેલું જીર્ણોદ્વારનું કાર્ય અગિયાર વર્ષ સુધી ચાલ્યું. વિ. સં. ૨૦૦૯માં ૫. પૂ. વિજયઉદયસુરિજી મ.સા. તથા ૫.પૂ. વિજયનંદનસુરિજી મ.સા. વગેરે આચાર્ય ભગવંતો અને મુનિ ભગવંતોની નિશ્રામાં યાદગાર રહે તેવો પુન: પ્રતિષ્ઠાનો ઉત્સવ ઉજવાયો. સાવ ઉજડ અને વેરાન બની ગયેલા આ મંદિરે પુન: એના શિલ્પ, સૌદર્ય અને ધર્મભાવનાનો ધ્વજ લહેરાયો.

આ જિનમંદિરમાં ૧૪૪૪ સ્તંભોની અનુપમ રચના કરવામાં આવી છે. આ સ્તંભોની ભવ્યતા અને એની કોતરણી દર્શનાર્થીઓને આકર્ષે છે. આ સ્તંભો આડી અને ઊભી હરોળમાં એવી રીતે ગોઠવવામાં આવ્યા છે કે દર્શનાર્થીઓને ગમે તે બાજુએથી પ્રભુ દર્શનમાં અવરોધરૂપ બનતા નથી. આ સ્તંભો સ્થાપત્ય સૌંદર્યનો અનુભવ કરાવે છે. તેમજ એનું નકશીકામ મન હરી લે છે. એવી જ રીતે એક જ પત્થરમાંથી બનાવેલાં મનોહર તોરણો એ આ જિનમંદિરનું આગવું કલા પાસું છે.

આ મંદિરની ભૂતકાલીન મહત્તા આંકનારા સ્તવનો અને તીર્થમાળાઓ રચાઈ છે. શ્રી મેહ કવિએ સંવત ૧૪૯૯માં રચેલા राणिगपुर चतुर्मुखप्रासाद स्तवन માં તેમણે પ્રત્યક્ષ જોયેલા ગામનું વર્ણન કર્યું છે.

આબુના મંદિરો એની ઝીણી કોરણી માટે પ્રસિધ્ધ થયાં. રાણકપુરના મંદિરમાં કાંઇ કોતરણી ઓછી નથી. પણ પ્રેક્ષકનું ધ્યાન એની સપ્રમાણ વિશાળતા તરફ ખેંચાય છે. તેથી જનસમૂહમાં 'આબુની કોરણી અને રાણકપુરની માંડણી' એવી લોકોકિત પ્રસિધ્ધિ પામી.

કવિશ્રી મેહે પણ રાણકપુરના મંદિરની કોરણીને આબુની કોરણી જેવી, એના સ્તવનમાં નીચેની પંક્તિમાં વર્ણવી છે. ७८ मार्च - २०१३

'વિવિધ રૂપ પૂતલી અપાર, કોરણીએ અર્બુદ અવતાર' તો, ઋષભદાસ કવિએ આ તીર્થનું મહાત્મ્ય નીચેની પંક્તિઓમાં દર્શાવ્યું છે. 'ગઢ આબુ નવિ ફરસિયો, ન સુણ્યો હીરનો રાસ રાણકપુર નવિ ગયો, ત્રિણ્યે ગર્ભાવાસ'

જેમણે ખરેખર આબુ અને રાણકપુરની જાત્રા કરી નથી, શ્રીહીરવિજયસૂરિ રાસનું શ્રવણ કર્યું નથી એનું જીવતર એળે ગયું છે એમ જાણવું.

નીચેની લોકોકિતમાં પણ રાણકપુરનું મહત્ત્વ દર્શાવ્યું છે.<sup>૪</sup>

'શત્રુંજયનો મહિમા અને તારંગાની ઊંચાઇ આબુની કોરણી અને રાણકપુરની બાંધણી; કટકું, બટકું ખાજે, પણ રાણકપુર જાજે'

ધર્મરસિકો માટે રાણકપુર તીર્થ ભક્તિ અને આરાધનાનું પવિત્ર ધામ છે. ઇતિહાસવિદો માટે પંદરમા શતકના મેવાડના અને ભારતના ઇતિહાસની ગૌરવગાથા છે. દેશ અને વિદેશના પ્રવાસીઓ માટે ભારતીય ધર્મ સંસ્કૃતિનું એક અનન્ય અને અદ્વિતીય સ્થળ છે. સ્થાપત્યરસિકને માટે સ્થાપત્યના સૌંદર્યનો અનુભવ કરાવનારું બેનમૂન સ્થાપત્ય છે.

# સંદર્ભસૂચિ

- ૧. રાણકપુર, લે. રતિલાલ દી. દેસાઈ, શેઠ આણંદજી કલ્યાણજીની પેઢી, અમદાવાદ, ૧૯૮૭
- ૨. જૈન તીર્થ સર્વસંગ્રહ, ભા.૧ ખંડ બીજો, શેઠ આશંદજી કલ્યાણજીની પેઢી, અમદાવાદ
- રાણકપુર તીર્થ, લે. રમણલાલ ચી. શાહ, જૈનદર્શન પરિચયશ્રેણી-૪, પુસ્તક-૪, શ્રી જયભિખ્ખુ સાહિત્ય ટ્રસ્ટ, અમદાવાદ, એપ્રિલ, ૧૯૯૩
- ૪. રાશકપુરની પંચતીથી (સચિત્ર), લે. પં. અંબાલાલ પ્રેમચંદ શાહ, પ્રકા. શ્રી યશોવિજયજી જૈન ગ્રંથમાળા, ભાવનગર, ૧૯૬૭
- પ. રાણકપુરની ભીતરમાં, લે. આ. શ્રી મુક્તિપ્રભસૂરિ, પ્રકા. વિજયમુક્તિચંદ્રસૂરિ ગ્રંથમાળા, સુરત ભક્તિ અને કળાના સંગમનું તીર્થ શ્રી રાણકપુર, લે. રતિલાલ દીપ્યંદ દેસાઈ, પ્રકા. આણંદજી કલ્યાણજીની પેઢી, અમદાવાદ, ૧૯૭૯.
- ક. જૈન સત્ય પ્રકાશ, વર્ષ-૯, અંક-૮, ક્રમાંક-૧૦૪. ૧૯૪૪.
- ७. कलामंदिर राणकपुर, ले. जयराज जैन, प्रका. सागरमल हस्तीमल, बोम्बे, १९५३
- \* એક વિશેષ નોંધ : રાણકપુર પ્રતિષ્ઠા લેખ સંગ્રહ-સંપા. ૫. પૂ. શાસનસમાટ્શ્રીના સમુદાયના ૫. પૂ. આચાર્યભગવંતશ્રી સોમચન્દ્રસૂરીશરજી મ. સા. દ્વારા રાણકપુર પ્રતિષ્ઠા લેખ સંગ્રહનું સંપાદન કાર્ય ચાલુ છે, જે ટૂંક સમયમાં પ્રકાશિત થશે.

<sup>3.</sup> આનંદકાવ્ય મહોદધિ- હીરવિજયસૂરિરાસ, પૃ.-૯૨ પ્રકા- દેવચંદ લાલભાઈ પુસ્તકોધ્ધાર ફંડ, સુરત ૪. ત્રૈલોક્યદીપક રાણકપુર તીર્થ પૃ.-૬૨

# આચાર્ચશ્રી કેલાસસાગરસૂરિ જ્ઞાનમંદિર, કોળા સંક્ષિપ્ત કાર્ચ અહેવાલ ફેબ્રુઆરી-૧૩

જ્ઞાનમંદિરના વિવિધ વિભાગોના કાર્યોમાંથી ફેબ્રુઆરીમાં થયેલાં મુખ્ય-મુખ્ય કાર્યોની ઝલક નીચે પ્રમાણે છે

- હસ્તપ્રત કેટલૉગ પ્રકાશન કાર્ય અંતર્ગત કુલ ક૩૯ પ્રતો સાથે કુલ ૧૪૧૯ કૃતિલિંક થઈ અને આ માસાંત સુધીમાં કેટલૉગ નં. ૧૫ માટેની લિંકનું કાર્ય પૂર્ણ થયું તથા ૧૬ કેટલૉગ માટે ૧૨૪૦ લિંકનું કાર્ય પૂર્ણ થયું.
- ર. હસ્તપ્રત સ્કેનીંગ પ્રોજેક્ટ હેઠળ હસ્તપ્રતોના ૫૭૭૩૮ પાનાઓનું સ્કેન કરવામાં આવ્યું.
- વિશ્વ કલ્યાણ ગ્રંથ પુનઃ પ્રકાશન પ્રોજેક્ટ હેઠળ ૫૧૮ પાનાઓની ડબલ એન્ટ્રી કરવામાં આવી.
- ૪. લાયબ્રેરી વિભાગમાં જુદા-જુદા ૯ દાતાઓ તરફથી ૭૦૦ પુસ્તકો ભેટ સ્વરૂપે પ્રાપ્ત થયાં.
- ૫. લાયબ્રેરી વિભાગમાં પ્રકાશન એન્ટ્રી અંતર્ગત કુલ ૬૮ પ્રકાશનો, ૬૦૦ પુસ્તકો તથા પ્રકાશનો સાથે ૪૫૫ કૃતિ લીંક કરવામાં આવી, તેમજ ૧૦૨ પ્રકાશનો તથા ૩૬ કૃતિઓ તથા ૨૭ પ્રકાશન કૃતિલિંકની સંપૂર્ણ માહિતી સુધારવામાં આવી.
- ક. મેગેઝિન વિભાગમાં ૨૮૨ પેટાંકની સંપૂર્ણ માહિતી ભરવામાં આવી તથા તેની સાથે યોગ્ય કૃતિ લિંક કરવામાં આવી. તેમજ ૧૫૯ મેગેઝિન અંક કોપીઓની માહિતીઓ ભરવામાં આવી.
- ૭. ૪ વાચકોને હસ્તપ્રત તથા પ્રકાશનોના ૧૨૨૫ પાનાની પ્રીન્ટ કૉપીઓ ઉપલબ્ધ કરાવવામાં આવી. આ સિવાય વાચકોને કુલ ૩૭૩ પુસ્તકો ઈશ્યુ થયાં તથા ૩૪૯ પુસ્તકો જમા લેવામાં આવ્યાં. વાચક સેવા અંતર્ગત પૂ. સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોને તથા વિદ્વાનોને નીચે પ્રમાણે માહિતી આપવામાં આવી.
  - a. પં. કુલચંદ્રવિજયજી મ.સા.ને શત્રુંજય અંગે, મુ. પરમપ્રેમવિજયજી મ.સા.ને ગુરુવંદન સંબંધી તેમજ પ્રો. પ્રીયોત્ર બાસેરોવીઝ પોલેંડને જૈનન્યાય અને પ્રો. યોગિનીબેનને વૈદિક સંસ્કૃત આદિ ગ્રંથોની માહિતી આપવામાં આવી,
- ૮. સમ્રાટ સંપ્રતિ સંગ્રહાલયની મુલાકાતે ૯૪૭ યાત્રાળુઓ પધાર્યા.

#### समाचार सार

#### श्री घंटाकर्ण महावीर देव मन्दिर की प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

श्री तारंगा महातीर्थ की तलहटी में स्थित श्री सम्भवनाथ जैन आराधना केन्द्र के परिसर में सम्यग्दृष्टि शासनरक्षक श्री घंटाकर्ण महावीर देव की मंगलप्रतिष्ठा २० फरवरी, २०१३ को परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य भगवन्त श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब की निश्रा में सम्पन्न हुई।

दिनांक १८ फरवरी, २०१३ से २० फरवरी, २०१३ तक आयोजित त्रीदिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया था। इस मंगलमय अवसर पर परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब, पूज्य पंन्यास श्री प्रशान्तसागरजी महाराज साहब, पूज्य मुनिवर श्री पद्मरतसागरजी महाराज साहब, पूज्य मुनिवर श्री पुनीतपद्मसागरजी महाराज साहब, पूज्य मुनिवर श्री पुनीतपद्मसागरजी महाराज साहब, पूज्य मुनिवर श्री भुवनपद्मसागरजी महाराज साहब एवं अन्य साधु-साध्यीजी भगवन्त उपस्थित थे। देश के विभिन्न भागों से पधारे हजारों श्रद्धालुओं ने इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में उपस्थित होकर पुण्य लाभ अर्जित किया।

श्री सम्भवनाथ जैन आराधना केन्द्र, तारंगा ने श्री घंटाकर्ण महावीर देव मंदिर का निर्माण एवं प्रतिष्ठा कराने का सम्पूर्ण लाभ श्री जयेशभाई शाह परिवार, मुंबई को दिया था।

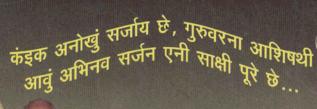
# सागर समुदाय की तीन साध्वियाँ दुर्घटनाग्रस्त

सागर समुदाय की तीन साध्वियाँ परम पूज्य श्री कल्पगुणाश्रीजी म. सा., परम पूज्य श्री कल्परलाश्रीजी म. सा. एवं परम पूज्य श्री हर्षनन्दिताश्रीजी म. सा. एवं परम पूज्य श्री हर्षनन्दिताश्रीजी म. सा. एकं जैन श्रावक के साथ मुंबई में गोरेगाँव से शान्ताकूज की ओर दिनांक २६ फरवरी, १३ को विहार करके आ रही थीं, तब जोगेश्वरी (पश्चिम) में एस. वी. रोड पर प्रातः ६.३० बजे अज्ञात दूध वाहन द्वारा उन्हें अचानक टक्कर मार देने से गंभीर रूप से घायल हो गयीं। सभी घायलों को तत्काल कपाडिया हॉस्पीटल में भर्ती कराया गया, जहाँ उनका उपचार चल रहा है। समाचार प्राप्त होने तक उनकी हालत नाजुक है, किन्तु खतरे से बाहर बताया गया है।

परम पूज्य पंन्यास श्री देवेन्द्रसागरजी म. सा. जो शान्ताकूज उपाश्रय में विराजमान थे, के द्वारा घटना की जानकारी देने पर वैयावच्च प्रेमी गुरुभक्तों ने कपाडिया हॉस्पीटल जाकर उनके स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त की एवं उचित व्यवस्था करवाई। पूज्य पंन्यासश्री ने गोरेगाँव श्रीसंघ को भी इस घटना की सूचना दी एवं वे स्वयं भी उनके स्वास्थ्य की जानकारी लगातार ले रहे हैं।

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र एवं ज्ञानमन्दिर परिवार परम कृपालु परमात्मा से उनके शीध्र स्वास्थ्य लाभ की मंगल कामना करता है।







श्री बुद्धिसागर विहार - पद्म पिरामीड जिनालय, महुडी तीर्थ





चोवीशी पट

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गाँधीनगर - ३८२००७ फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२ फेक्स : (०७९) २३२७६२४९ E-mail : gyanmandir@kobatirth.org website : www.kobatirth.org

For Private and Personal Use Only